सबसे प्यारा, हिन्दुस्तान हमारा

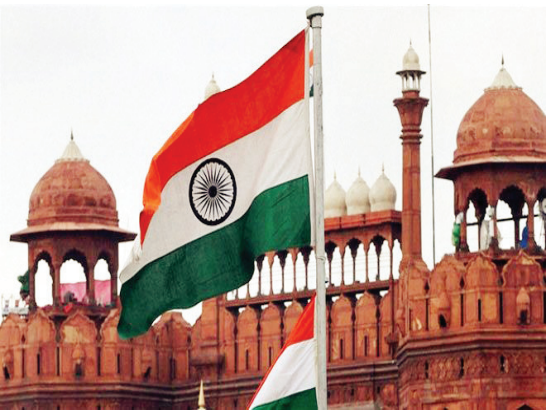

कोविड-19 का यह संकट हमारे लिए कुछ अधिक पीड़ादायक है। यह पीड़ा है उस तारीख के लिए जिस दिन हम गर्व के साथ अपना तिरंगा फहराते हैं। अपने भीतर देशभक्ति और स्वाभिमान से भर उठते हैं। यह हमारा राष्ट्रीय उत्सव होता है संकट, संयम और स्वावलंबन ने जहां भारतीय समाज को एक नए ढंग से परिभाषित किया है, वह हमारी कई पीढियों का मार्गदर्शन करता रहेगा। स्वच्छता का एक सबक इस महामारी ने सिखाया है। जान है तो जहान है, यह सच है लेकिन यह भी सच है कि हमारी

परम्परा रही है कि साथी हाथ बढ़ाना, एक अकेला थक जाएगा मिलकर भोज उठाना। यानि एक संदेश इस पर्व पर यह भी है कि हम आज भी वसुधैव कुटुंबकम के साथ जीते हैं। इसीलिए तो सबसे प्यारा, हिन्दुस्तान हमारा। भारत में स्वतंत्रता दिवस को बहुत अहम दिन माना जाता है। 200 साल की लम्बी लड़ाई के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत को ब्रिटिश हुकूमत से पूर्ण रूप से आजादी मिली। स्वतंत्रता दिवस, 1947 में ब्रिटिश शासन के अंत और स्वतंत्र भारतीय राष्ट्र की स्थापना का प्रतीक है। यह दो देशों- भारत और पाकिस्तान में उपमहाद्वीप के विभाजन की सालगिरह का प्रतीक है, जो 14 से 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को हुआ था। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 14 अगस्त मध्यरात्रि को %ट्रिस्ट विद डेस्टिनी% भाषण के साथ भारत की आजादी की घोषणा की। तब से हर साल 15 अगस्त को भारत में स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है, जबकि पाकिस्तान में स्वतंत्रता दिवस 14 अगस्त को मनाया जाता है। 15 अगस्त 1947 में भारत आजाद हुआ था। इसलिए भारत इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाता है। यह भारत का राष्ट्रीय दिवस है। स्वतन्त्रता दिवस से सभी भारतीयों की भावनाएं जुड़ी हुई हैं। आजादी के 73 बसंत बाद भी हमें कई समस्याओं पर विजय हासिल करनी है जब देश आजादी का अपना 74वां वर्षगांठ मना रहा है तो ऐसे में हमें यह सोचने की जरूरत है कि इतने वर्षों में हमने क्या खोया है और क्या पाया है? जब 15 अगस्त 1947 को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले से राष्ट्रीय तिरंगा लहराया होगा तब की स्थिति और वर्तमान की स्थिति में कितना फर्क आया है। हमें यह भी देखना होगा कि हमने विकास की रफ्तार को कितनी तेज रखी है। 1947 से लेकर अब तक के हर 15 अगस्त को जब देश के प्रधानमंत्री लाल किले से राष्ट्र को संबोधित करते हैं तो वह देश के भविष्य की दिशा को तय करता है। इस बार भी यही देखने को मिलेगा। वर्तमान परिदृश्य में देखें तो हमारा देश बेरोजगारी, अर्थव्यवस्था के मामले में बेहद संकट की स्थिति में है। देश के युवा बेरोजगार है। हमारी अर्थव्यवस्था की गति सुस्त पड़ी हुई है और कोरोनावायरस ने इसे और भी सुस्त कर दिया है। भले ही आजादी के बाद से ही हमने गरीबी हटाओ के नारे तो सुने हैं पर आज भी गरीबी हमें देखने को मिल जाती है। सभी लोगों को उच्च शिक्षा प्रदान करने में आज भी कई सरकारें विफल साबित हुई है। देश की रीढ़ कहीं जाने वाली कृषि व्यवस्था भी आज त्राहिमाम पर है। किसानों की ऐसी कई समस्याएं हैं जिस को सुलझाना जरूरी है। बढ़ती जनसंख्या भी हमारे देश के लिए एक बड़ी समस्या है। इसे रोकने के बाद ही हम किसी करिश्मा की तरफ बढ़ सकेंगे। आजादी के बाद सन् 1950 में एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए हम लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल हुए। आज हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र देश है। फिर भी ऐसी कई समस्याएं हैं जिससे हमारा देश ग्रसित है। अभी भी सभी को अपने हक के बारे में जानकारी नहीं है। जात-पात-धर्म के नाम पर देश बढ़ जाता है। कानूनी प्रक्रियाएं काफी सुस्त मालूम पड़ती है जिसे सुधारने की जरूरत है। सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार में लिप्त है। इससे आम लोगों को काफी मुश्किलें आती है। लोगों को समान हक, समान अधिकार दिलाना हमारे देश के संविधान का मूल मंत्र है। ऐसे में इसे लोगों तक पहुंचाना वर्तमान में सबसे बड़ी जरूरत है। देश में ऐसे कई रूढ़िवादी चीजें देखने को मिलती है जो हमें पीछे की ओर ले जाती हैं। इसे भी हमें दुरुस्त करने की जरूरत है। बाल श्रम, कुपोषण आज भी हमें हर तरफ देखने को मिल जाती है। ग्रामीण भारत का पिछड़ापन हमारे मुंह पर तमाचा जड़ता है। तमाम समस्याओं को दूर कर ही हम लोकतंत्र के अर्थ को सही साबित कर सकते है। इन तमाम समस्याओं को सुलझाने के बाद ही हम अपने देश को चांद तारों से सजा सातवें आसमान पर स्थापित कर सकते है।

भरत सिंह चौहान

संपादक

> **आजादी के 73 बसंत बाद भी हमें कई समस्याओं पर विजय हासिल करनी है जब देश आजादी का अपना 74वां वर्षगांठ मना रहा है तो ऐसे में हमें यह सोचने की जरूरत है कि इतने वर्षों में हमने क्या खोया है और क्या पाया है? जब 15 अगस्त 1947 को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले से राष्ट्रीय तिरंगा लहराया होगा तब की स्थिति और वर्तमान की स्थिति में कितना फर्क आया है। हमें यह भी देखना होगा कि हमने विकास की रफ्तार को कितनी तेज रखी है। 1947 से लेकर अब तक के हर 15 अगस्त को जब देश के प्रधानमंत्री लाल किले से राष्ट्र को संबोधित करते हैं तो वह देश के भविष्य की दिशा को तय करता है।**

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 06, अंक 07, सितंबर 2020,

मूल्य 30 रु, पृष्ठ 44

संरक्षक	बहादुर सिंह चौहान
संपादक	भरत सिंह चौहान
प्रबंध संपादक	शैलेश सिंह कुशवाह
उपसंपादक	अरविंद सिंह नरवरिया
	अर्पित गुप्ता
	प्रदीप नागेन्द्र सिकरवार
	शशिभूषण चौहान (मप्र)
कानूनी सलाहकार	एड. आर. के. जोशी
ऑल इंडिया रिपोर्टर	अन्जू भरमोरिया
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी	आर एस रजक

ब्यूरो प्रमुख

पंकज त्रिपाठी	:	मध्य प्रदेश
राजानल शर्मा	:	छत्तीसगढ़
नरेन्द्र शर्मा	:	हरियाणा
अभिषेक मिश्रा	:	हिमाचल प्रदेश
अमित कुमार	:	जम्मू-कश्मीर (यूटी)
अमन राय	:	बर्दवान पश्चिम बंगाल
नारायण लाल	:	बेंगलुरु
दीपक रलहन	:	पंजाब
नैनाराम सिरवी	:	पाली, राजस्थान
संदीप प्रधान	:	ग्वालियर संभाग
केवल राम मालवीय	:	इंदौर
राजा दुबे	:	सीहोर
केशव प्रसाद शर्मा	:	मुरैना
राजेश लोधी	:	रायसेन
रीतेश कटरे	:	बालाघाट
सुरजीत राजावत	:	ग्वालियर
बरखा श्रीवास्तव	:	ग्वालियर
हरिनिवास दुबे	:	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
सोनू कुमार माथुर	:	एटा, (उत्तर प्रदेश)
प्रवेन्द्र सिंह	:	आगरा (उत्तर प्रदेश)
अरविंद प्रताप सिंह	:	कन्नौज (उत्तर प्रदेश)
रूपसिंह	:	इटावा, (उत्तर प्रदेश)
किरण राठौर	:	औरैया, (उत्तर प्रदेश)
अरूण शुक्ला	:	भिण्ड
मोहन मांझी	:	गोहद
अमित शर्मा	:	ग्वालियर

कार्यालय

ए-ब्लॉक 404 भाऊसाहब पोतनीस, इन्क्लेव, मुरार रोड गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

संपर्क: 8269307478, 7999246560

www.pushpanjalitoday.com, Email-pushpanjalitoday@gmail.com

इस अंक में

स्वच्छता में इंदौर... 13

जल्द आएगी वैक्सीन 15

सागदी से मना... 17

जनता सरकार की कर... 18

लॉकडाउन को वास्तव... 19

सुशांत सिंह राजपूत... 39

युवा संवाद में.... 24

सिनेमा 40

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक-भरत सिंह चौहान। कंचन प्रिंटिंग प्रेस-निम्बालकर का बाड़ा, तेली की बजरिया नियर पी.एंड.एन. बैंक नया बाजार लश्कर जिला ग्वालियर म.प्र .से मुद्रित तथा, दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास, गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, जिला ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-भरत सिंह चौहान। समाचारों के चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार दूरभाष : 8269307478 Mail: pushpanjalitoday@gmail.com Web. www.pushpanjalitoday.com

राम मंदिर का सपना साकार

कई सदियों बाद एक ऐसा सपना हो गया जिसके लिए लाखों लोगों ने अपनी जिंदगियां खपा दीं और लाखों लोगों ने अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया सिर्फ ये दिन देखने के लिए कि अयोध्या में एक न एक दिन भव्य राम मंदिर का निर्माण होगा। आज की पीढ़ी बहुत ही सौभाग्यशाली है जिसे श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आज की पीढ़ी गर्व से कह सकती है कि हमने भव्य राम मंदिर की एक-एक ईंट को लगते देखा है। सबसे ज्यादा सौभाग्य की बात है कि आज की पीढ़ी कह सकती है कि हमने अपने आराध्य राम को टेंट के मंदिर से भव्य राम मंदिर में विराजमान होते देखा है। ये दिन देखने के लिये ना जाने कितनी पीढ़ियों ने संघर्ष किया होगा और न जाने कितने रामभक्तों ने अपना लहू बहाया होगा। आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे वनवास पूरा करके मर्यादा पुरुषोतम प्रभु श्रीराम अपने घर को लौट रहे हैं।

भगवान श्री राम चन्द्र जी समस्त सनातन धर्म के आदर्श पुरुष और इष्टदेवता हैं। भगवान राम को सनातन धर्म में सर्वोपरि स्थान दिया गया है। कई सदियों से बड़े दुख और शर्म की बात रही कि जिन भगवान राम का उनके जन्मस्थान अयोध्या में भव्य राम मंदिर होना चाहिए था, वहां पर उन्हें कई सदियों तक अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ी। अयोध्या में रामजन्म भूमि विवाद एक राजनीतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक-धार्मिक विवाद है, जो कि सैंकड़ों वर्ष पुराना विवाद है। इस विवाद का मूल मुद्दा हिंदू इष्टदेवता भगवान् श्रीराम चंद्र जी की जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद की स्थिति को लेकर है। इसके अलावा विवाद का कारण यह भी रहा कि उस स्थान पर हिंदू मंदिर को ध्वस्त कर वहां मस्जिद बनाया गया या मंदिर को मस्जिद के रूप में बदल दिया गया। इस विवाद के मूल में जाया जाये तो इसकी शुरुआत मुगलकाल से होती है। इस विवाद में सबसे अहम भूमिका विदेशी आक्रमणकारी जहिर उद-दिन मुहम्मद बाबर की रही है जोकि भारत में मुगल वंश का संस्थापक था। बाबर के मुगल सेनापति मीरबाकी द्वारा ही सन् 1528 में बाबर के कहने पर राम जन्म भूमि पर मस्जिद बनाई गई थी। जिसे बाबरी मस्जिद नाम दिया गया। हिन्दुओं के पौराणिक ग्रन्थ रामायण और रामचरित मानस के अनुसार यहां भगवान राम का जन्म हुआ था। इसी को लेकर पिछले सैंकड़ों वर्षों से राम जन्म भूमि विवाद का कारण रही है।

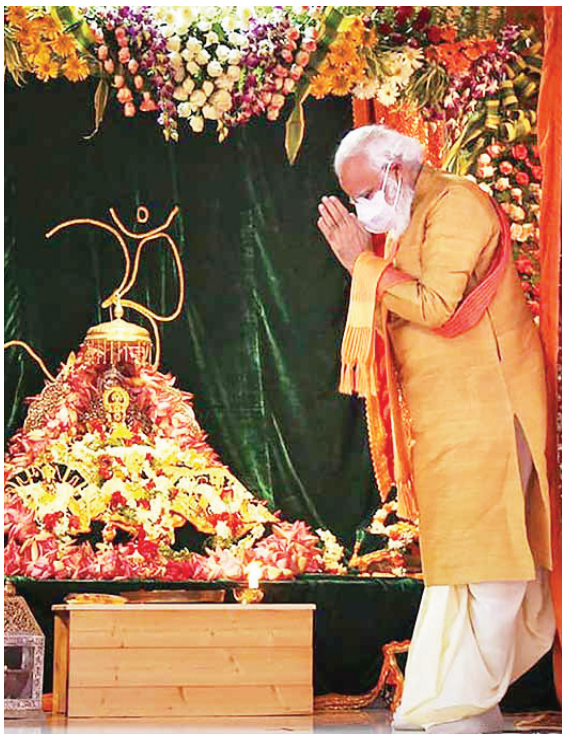

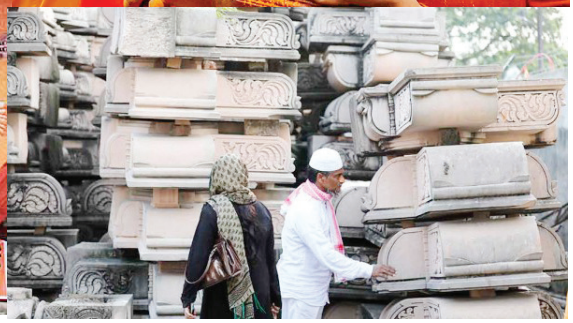

हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच इस स्थल को लेकर पहली बार 1853 में विवाद हुआ। इस विवाद को देखते हुए अंग्रेजों ने सन् 1859 में नमाज के लिए मुसलमानों को अन्दर का हिस्सा और हिन्दुओं को बाहर का हिस्सा उपयोग में लाने को कहा और अंदर वाले हिस्से में अंग्रेजी हुकूमत ने लोहे से घेराबंदी लगाते हुए हिंदुओं का प्रवेश वर्जित कर दिया था। यहीं से अंग्रेजों द्वारा इस मामले को और उलझा दिया गया। इस बात से हिंदुओं की आस्था और भावनाएं आहत हुईं। यहीं से ये मामला उलझता गया और इस स्थल को लेकर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच विवाद की खाई चौड़ी होती गयी। सन् 1949 में अंदर वाले हिस्से में भगवान राम की मूर्ति रखी गई। हिंदुओं और मुसलामानों के बीच तनाव और विवाद को बढ़ता देख तत्कालीन नेहरू सरकार ने इसके गेट में ताला लगवा दिया। सन् 1986 में फैजाबाद जिला जज ने उक्त स्थल को हिंदुओं की पूजा के लिए खोलने का आदेश दिया। मुस्लिम समुदाय ने इसके विरोध में बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी गठित की। इसके बाद सदियों से अपने इष्टदेवता श्रीराम चंद्र जी के जन्म स्थान पर लगे प्रश्नचिन्ह से आहत और आक्रोशित हिन्दू समाज के लाखों की तादात में कारसेवकों ने पुलिस प्रतिरोध के वावजूद 06 दिसंबर 1992 को विवादित बाबरी मस्जिद का विध्वंस कर दिया। और उस स्थान पर भगवान श्री राम की मूर्ति की स्थापना कर दी। इसके बाद इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश से सरकार ने 2003 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पुरातत्व विशेषज्ञों की एक टीम भेजकर उस स्थान का उत्खनन कराया गया, जिससे कि मंदिर या मस्जिद होने का प्रमाण मिल सके। एएसआई ने अपनी रिपोर्ट में विवादित बाबरी मस्जिद के नीचे 10वीं शताब्दी के मंदिर की उपस्थिति का संकेत दिया। लेकिन मुस्लिम समूहों ने इस रिपोर्ट को खारिज कर दिया।

विवादित मामले को लेकर उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ द्वारा 30 सितंबर 2010 को विशेष पीठ के तीन जजों जस्टिस एसयू खान, जस्टिस सुधीर अग्रवाल और जस्टिस धर्मवीर शर्मा ने बहुमत से निर्णय दिया और विवादित स्थल को तीन भागों में बाँट दिया। फैसले में कहा गया कि विवादित स्थल भगवान राम की जन्मभूमि है और वहां से रामलला की मूर्तियों को न हटाने का आदेश दिया। जिसमें से एक तिहाई हिस्सा राम मंदिर के लिए रामलला विराजमान का प्रतिनिधित्व करने वाले हिंदुओं को देने का फैसला सुनाया गया और एक तिहाई हिस्सा निर्मोही अखाड़े को देने का फैसला सुनाया और साथ ही एक तिहाई हिस्सा सुन्नी वक्फ बोर्ड को देने का फैसला सुनाया। इस फैसले में बेशक विभिन्न पक्षों के दावों को लेकर विवादित स्थल वाली 2.7 एकड़ भूमि को तीन भागों में बांटा गया हो, लेकिन अदालत द्वारा एक महत्वपूर्ण पुष्टि जो अपने निर्णय में की गयी वह भगवान श्रीराम चंद्र जी के जन्म स्थान को लेकर की गयी, जिसमें कहा गया

कि विवादित स्थल भगवान राम का जन्म स्थान है और सबसे बड़ी बात निर्णय में कहा गया कि मुगल बादशाह बाबर द्वारा बनवाई गई विवादित मस्जिद इस्लामी कानून के खिलाफ थी और इस्लामी मूल्यों के अनुरूप नहीं थी। यह फैसला सदियों से आहत हिंदुओं के लिए सबसे बड़ी खुशी का दिन था। अदालत ने बेशक इस फैसले में उस स्थान पर राम मंदिर के निर्माण का आदेश न दिया हो लेकिन इस फैसले से सदियों से आहत हिंदुओं की भावनाओं और उनके लंबे संघर्ष को सम्मान मिला। लेकिन कुछ पक्षकारों ने इस फैसले को नहीं माना और यह मामला उच्चतम न्यायालय में चला गया। इसी कड़ी में 09 नवंबर 2020 को उच्चतम न्यायालय के चीफ जस्टिस रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली 5 जजों की विशेष बेंच ने सर्वसम्मति से फैसला सुनाया कि अयोध्या की विवादित जमीन पर रामलला विराजमान का हक है।

अयोध्या में विवादित जमीन पर रामलला का हक बताते हुए कोर्ट के 5 जजों की विशेष बेंच (चीफ जस्टिस रंजन गोगोई, जस्टिस शरद अरविंद बोबड़े, जस्टिस धनंजय यशवंत चंद्रचूड़, जस्टिस अशोक भूषण और जस्टिस अब्दुल नजीर) ने केंद्र सरकार को तीन महीने के अंदर मन्दिर निर्माण के लिये ट्रस्ट बनाने का भी आदेश दिया। 40 दिनों की लगातार सुनवाई के बाद उच्चतम न्यायालय ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिसमें सदियों पुराने विवाद का खात्मा हो गया और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का रास्ता प्रशस्त हो गया। इसके साथ ही उच्चतम न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि सुन्नी वक्फ बोर्ड को अयोध्या में ही किसी जगह मस्जिद निर्माण के लिए 5 एकड़ जगह दी जाए। उच्चतम न्यायलय का यह फैसला अत्यन्त ऐतिहासिक फैसला था। सभी देशवासिओं ने उच्चतम न्यायालय के निर्णय का शान्ति और सौहाद्रपूर्ण तरीके से स्वागत किया। हिन्दुओं के साथ-साथ उच्चतम न्यायालय के निर्णय की मुस्लिम समुदाय ने भी सराहना की। यह फैसला किसी भी पक्ष की हार-जीत नहीं थी क्योंकि जहाँ राम नाम होता है वहां सबकी जीत ही होती है, इसलिए उच्चतम न्यायालय का राम मन्दिर के पक्ष में यह फैसला हिन्दुस्तान के प्रत्येक व्यक्ति की जीत है।

होइहि सोइ जो राम रचि राखा:492 साल बाद राम काज पूरा
मोदी ने 31 साल पुरानी 9 शिलाओं से राम मंदिर की नींव रखी

'राम सबके हैं और सब राम के हैं'

करोड़ों भारतीयों की आस्था के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जन्मस्थल पर भव्य मंदिर का सपना सदियों पुराना था, और अब जब वह साकार रूप लेने लगा है, तो स्वाभाविक ही तमाम आस्थावान लोगों के लिए यह खुशी का एक अवसर है। अयोध्या में मंदिर-निर्माण का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कल एक सूत्र वाक्य दोहराया कि 'राम सबके हैं और सब राम के हैं।' इस वाक्य के गहरे निहितार्थ हैं। यह एक समरस समाज का आधार वाक्य है। निर्माण की प्रस्तावना है। यह प्रस्तावना धर्म के दायरे से आगे जाकर राष्ट्र-निर्माण से जुड़ती है।

अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों राम मंदिर का शिलान्यास सिर्फ मंदिर आंदोलन का उसकी तार्किक परिणति तक पहुंचना भर नहीं है। इस आंदोलन का लक्ष्य भी मंदिर बनवाने तक सीमित नहीं था। यह लक्ष्य था देश की राजनीतिक मुख्यधारा को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार के इर्दगिर्द संचालित करने का।इस बड़े सपने के संदर्भ में देखें तो खुद को एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में परिभाषित करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राजनीतिक इकाई के तौर पर बीजेपी ने जो तीन बड़े लक्ष्य अपने सामने रखे थे, अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण उनमें सिर्फ एक था। बाकी दो लक्ष्य थे समान आचार संहिता और अनुच्छेद 370 का खात्मा। 492 साल बाद अयोध्याजी ने अपने इतिहास का पन्ना फिर से पलट दिया है। साल 1528- तब राम मंदिर को ढेर करके यहां बाबरी मस्जिद बना दी गई थी। आजादी के बाद लंबा मुकदमा चला। नौ महीने पहले सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया। झगड़े की जमीन रामलला की हुई और आज राम काज शुरू हो गया। मंदिर आंदोलन लालकृष्ण आडवाणी ने चलाया था, लेकिन प्रधानमंत्री होने के नाते मंदिर निर्माण की नींव रखने का मौका नरेंद्र मोदी को मिला। दिन भी अहम है। 5 अगस्त 2019 को कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटा था। 5 अगस्त 2020 को मंदिर निर्माण की शुरुआत हुई है। दोनों भाजपा के वादे थे। 5 अगस्त 2021 को क्या होगा, ये किसी को पता नहीं। शायद मोदी ही बता पाएं। ...तो लौटते हैं अयोध्या की ओर। मोदी बुधवार सुबह यहां पहुंचे। हनुमान गढ़ी में पूजा करने वाले और रामलला के दर्शन करने वाले वे पहले प्रधानमंत्री बन गए। उनसे पहले इंदिरा गांधी, राजीव

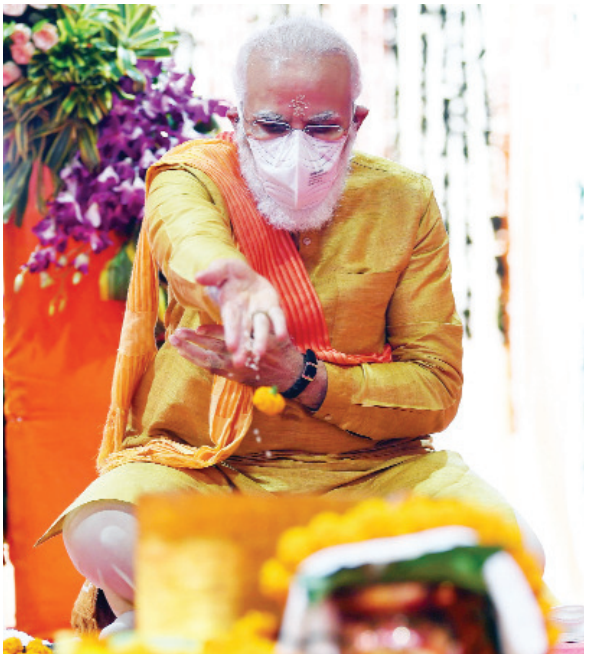

गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी अयोध्या पहुंचे, लेकिन रामलला के दर्शन नहीं कर पाए थे।मोदी 29 साल बाद अयोध्या आए। इससे पहले वे 1991 में अयोध्या आए थे। तब भाजपा अध्यक्ष रहे मुरली मनोहर जोशी तिरंगा यात्रा निकाल रहे थे और यात्रा में मोदी उनके साथ रहते थे। मोदी ने 2019 के लोकसभा चुनाव के वक्त फैजाबाद-अंबेडकर नगर में एक रैली को संबोधित किया था, लेकिन अयोध्या नहीं गए थे। मोदी के

पहुंचते ही पूजन शुरू हुआ। यहां 2000 पवित्र जगहों से लाई गई मिट्टी और 100 से ज्यादा नदियों से लाया गया पानी रखा गया था। 1989 में दुनियाभर से 2 लाख 75 हजार ईंटें जन्मभूमि भेजी गई थीं। इनमें से 9 ईंटों यानी शिलाओं को पूजन में रखा गया। पूजन के बाद मोदी को संकल्प दिलाया गया। राम मंदिर निर्माण के भूमि पूजन के बाद सबसे ज्यादा इंतजार जिस बात का लोगों को था, वह था प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भाषण। मोदी ने ऐतिहासिक मौके पर ऐतिहासिक भाषण दिया। 35 मिनट के इस भाषण की शुरुआत सियावर राम चंद्र की जय के साथ की और खत्म भी सियापति रामचंद्र की जय के साथ किया। कहा- राम सबके हैं, राम सबमें हैं। कोरोना काल में राम की मर्यादा का महत्व बताया। मोदी ने राम की रीति बताई कि बिना भेदभाव के सभी के विश्वास से विकास करना है। तो, भय बिनु होय ना प्रीति से राम की नीति बताई। कहा- भारत जितना ताकतवर होगा प्रीति उतनी ज्यादा बढ़ेगी। आना स्वाभाविक था, क्योंकि राम काज किन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम। सोमनाथ से काशी विश्वनाथ, बोधगया से सारनाथ, कन्याकुमारी से कश्मीर, अमृतसर से पटना साहिब, लक्षद्वीप से लेह तक पूरा भारत राम मय है। पूरा देश रोमांचित है, हर मन दीपमय है। आज पूरा भारत भावुक है। सदियों का इंतजार समाप्त हो रहा है। करोड़ों लोगों को आज ये विश्वास ही नहीं हो रहा होगा कि वो अपने जीते जी इस पावन दिन को देख पा रहे हैं। बरसों से टेंट के नीचे रहे हमारे रामलला के लिए एक भव्य मंदिर का निर्माण होगा। टूटना और फिर उठ खड़ा होना, सदियों से चल रहे इस क्रम से राम जन्मभूमि आज मुक्त हुई है। आजादी की लड़ाई में कई पीढ़ियों ने अपना सबकुछ समर्पित कर दिया। गुलामी के कालखंड में कोई ऐसा समय नहीं था, जब आजादी के लिए आंदोलन न चला हो। देश का कोई भूभाग ऐसा नहीं था, जहां आजादी के लिए बलिदान न दिया गया हो। 15 अगस्त का दिन उस अथाह तप का, लाखों बलिदानों का प्रतीक है। ठीक उसी तरह राम मंदिर के लिए कई-कई सदियों तक, कई-कई पीढ़ियों ने अखंड और अविरल एकनिष्ठ प्रयास किया। आज का दिन उसी तप, त्याग और संकल्प का प्रतीक है।

श्रीराम का मंदिर आधुनिकता का प्रतीक बनेगा, यानी अयोध्या का अर्थतंत्र बदलेगा

श्रीराम का मंदिर हमारी संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा। जानबूझकर आधुनिक शब्द का प्रयोग कर रहा हूं। हमारी शाश्वत आत्मा और राष्ट्रीय भावना का प्रतीक बनेगा। ये मंदिर करोड़ों लोगों की सामूहिक संकल्प शक्ति का प्रतीक रहेगा। आने वाली पीढ़ियों को आस्था, श्रद्धा और संकल्प की प्रेरणा यह मंदिर देता रहेगा। इस मंदिर के बनने के बाद अयोध्या की भव्यता ही नहीं बढ़ेगी, इस क्षेत्र का पूरा अर्थतंत्र ही बदल जाएगा। हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे, हर क्षेत्र में अवसर बढ़ेंगे।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर भी देश ने राम जैसी मर्यादा दिखाई यानी शांति बनाए रखी

कोरोना से बनी स्थितियों के कारण भूमि पूजन का कार्यक्रम मर्यादाओं के बीच हो रहा है। श्रीराम के कार्यक्रम में मर्यादा का जैसा प्रस्तुत करना चाहिए, देश ने वैसा ही उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसी मर्यादा का पालन हमने तब भी किया था, जब सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया था। सभी देशवासियों ने शांति के साथ सभी की भावनाओं का ख्याल रखते हुए काम किया था।

राम ने समरसता को आधारशिला बनाया यानी आज के भारत की भी यही नींव

भारत की आस्था, सामूहिकता और उसकी अमोघ शक्ति पूरी दुनिया के लिए अध्ययन और शोध का विषय है। साथियों, श्रीराम चंद्र को तेज में सूर्य, क्षमा में पृथ्वी, बुद्धि में बृहस्पति के समान और यश में इंद्र के समान माना गया है। श्रीराम का चरित्र जिस केंद्र बिंदु पर घूमता है वो है सत्य पर अडिग रहना। इसलिए श्री राम सम्पूर्ण हैं, इसलिए ही वो हजारों वर्षों से भारत के लिए प्रकाश स्तंभ बने हुए हैं। श्री राम ने सामाजिक समरसता को अपने शासन की आधारशिला बनाया। उन्होंने वशिष्ठ से ज्ञान, केवट से प्रेम, शबरी से मातृत्व, हनुमान से सहयोग और प्रजा से विश्वास प्राप्त किया। एक गिलहरी की महत्ता को भी स्वीकार किया। तमिल में कंब रामायण, तेलुगु में रघुनाथ और रंगनाथ रामायण, उड़िया में रुईपात कातेड़पति रामायण है, कन्नड़ में कुमुदेंदु रामायण है, आप कश्मीर जाएंगे तो आपको रामावतार चरित मिलेगा, मलयालम में रामचरितम् मिलेगी। गुरुगोविंद सिंह ने खुद गोविंद रामायण लिखी है। अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग

रामायणों में राम भिन्न-भिन्न रूपों में मिलेंगे। पर राम सब जगह हैं, राम सबके हैं। राम भारत की अनेकता में एकता के सूत्र हैं। दुनिया के कितने ही देश राम का वंदन करते हैं, वहां के नागरिक खुद को राम से जुड़ा हुआ पाते हैं। विश्व की सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या जिस देश में है,वो हो इंडोनेशिया। वहां हमारे देश की तरह स्वर्णद्वीप रामायण, योगेश्वर रामायण जैसी कई अनूठी रामायण वहां हैं। राम आज भी वहां पूजनीय हैं।

कंबोडिया में रमकेड़ रामायण है, लाओस में फ्रालाप-फ्रालाप रामायण है मलेशिया में हिकायत श्रीराम रामायण है, थाईलैंड में रामाकेन है। आपको ईरान और चीन में भी राम के प्रसंग और रामकथा का विवरण मिलेगा। श्रीलंका में रामायण की कथा जानकी हरण के नाम से सुनाई जाती है और नेपाल माता जानकी से जुड़ा है। कितने ही देश हैं, जहां की आस्था और अतीत में राम रचे बसे हैं। आज भी भारत के बाहर दर्जनों ऐसे देश हैं। जहां रामकथा प्रचलित है।

श्रीराम की नीति है भय बिनु होय ना प्रीति, इसलिए हमारा देश जितना ताकतवर होगा, उतनी ही प्रीति और शांति भी बनी रहेगी। राम की यही नीति और रीति सदियों से दुनिया का मार्गदर्शन करती रही है। गांधी ने इन्हीं के आधार पर राम राज्य का सपना देखा था। राम का जीवन और चरित्र ही गांधी के राम राज्य का रास्ता है। राम ने कहा है कि राम समय, स्थान और परिस्थितियों के हिसाब से बोलते हैं, सोचते हैं और करते भी हैं। वो हमें समय के साथ बढ़ना सिखाते हैं, चलना सिखाते हैं। राम परिवर्तन के पक्षधर हैं, आधुनिकता के पक्षधर हैं। उनकी इन्हीं प्रेरणाओं, आदर्शों के साथ भारत आज आगे बढ़ रहा है।

मोदी ने अपने भाषण में 3-4 बार कोरोना का जिक्र किया। कहा- आज भारत के लिए भी श्रीराम का यही संदेश है। हम बढ़ेंगे, देश बढ़ेगा। यह मंदिर युगों-युगों तक मानवता को प्रेरणा देगा। कोरोना की वजह से जो हालात है, प्रभु राम का मर्यादा मार्ग और अधिक जरूरी है। आज की मर्यादा है दो गज की दूरी, बहुत है जरूरी। राम-जानकी सभी को स्वस्थ रखें, सुखी रखें। सभी पर सीता और राम का आशीर्वाद बना रहे। सभी को कोटि-कोटि बधाइयां। सियापति रामचंद्र की जय, सियापति रामचंद्र की जय, सियापति रामचंद्र की जय।

राम सर्किट बनाया जा रहा है

देश में जहां जहां राम के चरण पड़े, आज वहां राम सर्किट का निर्माण किया जा रहा है। श्रीराम ने जन्मभूमि के बारे में कहा है। जन्मभूमि मम पुरी सुहावनी। अयोध्या की शोभा बढ़ाने के लिए ऐतिहासिक काम हो रहे हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि पूरी पृथ्वी पर श्री राम के जैसा नीतिवान शासक कभी नहीं हुआ। उनकी शिक्षा है कि कोई दुखी न हो, गरीब न हो। राम का संदेश है कि नर-नारी सभी समान रूप से सुखी हों, भेदभाव न हो। श्रीराम का निर्देश है कि किसान, पशुपालक सभी हमेशा खुश रहें। उनका आदेश है कि बुजुर्ग, बच्चों, चिकित्सकों की सदा रक्षा होनी चाहिए।

भूमि पूजन के दौरान पूजन स्थल में दाखिल होते वक्त मोदी अचानक रुक गए। फिर वापस कार

तक लौटे। सभी चौंक गए कि क्या हुआ। दरअसल, मोदी भेंट के लिए कलश लाए थे और यही भूल गए थे, जिसे लेने के लिए दोबारा कार तक लौटे। पूजन में शामिल पंडित आचार्य दुर्गा गौतम ने बताया कि मोदी ने भूमि पूजन के बाद पूजन स्थल की मिट्टी को माथे से लगाया। इंससे पहले रामलला के दर्शन के वक्त मोदी ने साष्टांग प्रणाम किया। उसी तरह जैसा उन्होंने 2014 का चुनाव जीतने के बाद संसद में दाखिल होते वक्त किया था। भूमि पूजन में योगी आदित्यनाथ, यूपी की गवर्नर आनंदी बेन पटेल और संघ प्रमुख मोहन भागवत थे। इन्होंने राम मंदिर की नींव में सोने के सिक्के डाले।स्पीच के दौरान भागवत ने वरिष्ठ भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी का नाम लिया, सिंघल का नाम लिया। लेकिन, चौंकाने वाली बात यह रही कि मोदी ने दोनों में से किसी का भी नाम नहीं लिया।

साढ़े तीन साल में बनकर तैयार होगा

भव्य राम मंदिर

अयोध्या में राम मंदिर का भूमि पूजन हो गया अयोध्या में बहुप्रतीक्षित प्रस्तावित राम मंदिर की तस्वीरें सामने आई हैं। मिली जानकारी के मुताबिक इस खूबसूरत राम मंदिर को साढ़े तीन साल में बनकर तैयार किया जाएगा। मंदिर प्रॉजेक्ट के अनुसार मंदिर को बनकर तैयार होने में तीन से साढ़े तीन साल का समय लगेगा। मंदिर तीन मंजिला होगा और इसका निर्माण वास्तु के अनुसार किया जाएगा।

161 फीट ऊंचा होगा मंदिर

मंदिर के शिखर की ऊंचाई अब बढ़ाकर 161 फुट कर दी गई है। वहीं पूरे मंदिर में पांच विशाल गुंबद होंगे। गौरतलब है कि राममंदिर के पुराने नक्शे में सिर्फ तीन गुंबद प्रस्तावित थे, लेकिन अब इसमें दो गुंबद और बढ़ा दिए गए हैं। वहीं मंदिर का जमीनी आकार भी बढ़ा कर दिया गया है।

मंदिर की ऊंचाई में भी 33 फीट की बढ़ोतरी

5 अगस्त से जिस राम मंदिर के निर्माण का काम शुरू हो रहा है उसकी ऊंचाई में भी 33 फीट की बढ़ोतरी कर दी गई है। मंदिर के पुराने मॉडल के हिसाब से मंदिर की लंबाई 268 फीट 5 इंच थी, जिसे अब बढ़ाकर 280-300 फीट कर दिया गया है। राम मंदिर के पांचों गुंबदों के नीचे के हिस्से में चार हिस्से होंगे। जिसमें सिंहद्वार, नृत्य मंडप, रंगमंडप बनेगें। यहां श्रद्धालुओं के बैठने, आराम करने और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम करने की व्यवस्था होगी।

दिल्ली की कंपनी चमका रही पत्थर

राम मंदिर में लगने वाले पत्थरों को चमकाने का काम दिल्ली की कंपनी कर रही है। यहां मिट्टी परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर मंदिर के लिए नींव की खुदाई हो रही है। यह 20 से 25 फीट गहरी हो सकती है। प्लैटफॉर्म कितना ऊंचा होगा इस पर निर्णय राम मंदिर ट्रस्ट करेगा। अभी 12 फीट से 14 फीट तक की ऊंचाई का विचार चल रहा है। राम मंदिर में कुल 318 स्तंभ होंगे और प्रत्येक तल पर 106 स्तंभ होंगे।

100 करोड़ के लागत से बनेगा राम मंदिर

मंदिर के शिल्पकार चंद्रकांत सोमपुरा के मुताबिक राम मंदिर के निर्माण में 100 करोड़ रुपये की लागत आएगी। यह खर्च बढ़ भी सकता है, यदि इसकी निर्माण अवधि की समय सीमा तय की जाएगी तो ज्यादा संसाधन चाहिए होंगे। इससे बजट भी बढ़ेगा। उन्होंने बताया कि राम मंदिर का डिजाइन नागर स्टाइल का है। शिल्प शास्त्र की तमाम गणनाओं के आंकलन करने के बाद राम मंदिर का निर्माण किया जा रहा है।

गुंबदों के नीचे श्रद्धालुओं की व्यवस्था

राम मंदिर के पांचों गुंबदों के नीचे के हिस्से में चार हिस्से होंगे। इसमें सिंहद्वार, नृत्य मंडप, रंगमंडप बनेगें। यहां श्रद्धालुओं के बैठने विचरण करने और विविध कार्यक्रम आयोजित करने के लिए जगह रहेगी।

राहुल गांधी फिर बनेंगे कांग्रेस अध्यक्ष ?

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की हुई वर्चुअल बैठक में पार्टी की अंदरूनी कलह खुलकर सामने आ गई। राहुल गांधी के एक कथित बयान का गुलाम नबी आजाद और कपिल सिब्बल ने तुरंत विरोध कर दिया, तो साढ़े चार घंटे के अंदर पार्टी ने डैमेज कंट्रोल भी कर लिया। सोनिया गांधी अभी अंतरिम अध्यक्ष बनी रहेंगी। कांग्रेस के सूत्र बताते हैं कि अगले साल की शुरुआत में पंजाब या छत्तीसगढ़ में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सत्र होगा। इसमें राहुल गांधी को दोबारा अध्यक्ष चुना जाना तय है।

चिट्ठी परोक्ष तौर पर इशारा करती है कि पार्टी का एक गुट किसी गैर-गांधी की ताजपोशी चाहता था। उसकी मंशा राहुल का रास्ता रोकने की थी। इसकी कहानी करीब 15 दिन पहले शुरू हुई। दरअसल, सोनिया गांधी का अंतरिम अध्यक्ष के तौर पर एक साल का कार्यकाल 9 अगस्त को खत्म हो रहा था। इससे दो दिन पहले यानी 7 अगस्त को कांग्रेस के 23 नेताओं ने सोनिया गांधी को चिट्ठी लिख दी। यह चिट्ठी ऐसे समय लिखी गई, जब सोनिया गंगाराम अस्पताल में भर्ती थीं। इस चिट्ठी में नेताओं ने सोनिया से ऐसी 'फुल टाइम लीडरशिप' की मांग की थी, जो 'फील्ड में एक्टिव रहे और उसका असर भी दिखे'। कांग्रेस के सूत्र बताते हैं कि फुलटाइम लीडरशिप और फील्ड में असर दिखाने वाली एक्टिवनेस जैसे शब्दों का इस्तेमाल इस तरफ इशारा करता है कि कांग्रेस का एक गुट दोबारा राहुल गांधी की ताजपोशी नहीं चाहता। 23 नेताओं की चिट्ठी के बावजूद सोनिया गांधी ने 12 अगस्त को संगठन के नाम एक चिट्ठी लिखी और अगला अध्यक्ष चुनने की कार्रवाई शुरू करने को कहा। दूसरे गुट के नेताओं को इस बात का एहसास हो गया कि सीडब्ल्यूसी की मीटिंग में सोनिया पद छोड़ेंगी और लोकसभा चुनाव में हार के बाद अध्यक्ष पद छोड़ चुके

राहुल के नाम पर दोबारा मुहर लगेगी। वे नहीं चाहते थे कि इस बैठक में किसी भी सूरत में राहुल की ताजपोशी हो। इसमें वे फिलहाल कामयाब भी हो गए और मामला छह महीने के लिए टल गया। यहां सवाल उठता है कि जब राहुल के बयान के बारे में पार्टी नेता कन्फर्म ही नहीं थे, तो उन्होंने सार्वजनिक तौर पर अपनी नाराजगी क्यों जाहिर की? दरअसल, सीडब्ल्यूसी की बैठक में 51 नेता शामिल हुए, लेकिन इनमें सोनिया को चिट्ठी लिखने वाले नेताओं की संख्या सिर्फ 4 थी। बाकी नेता सीडब्ल्यूसी की बैठक में पूरी तैयारी के साथ आए थे और उन्होंने चिट्ठी लिखने वाले नेताओं को बैकफुट पर कर दिया।

कांग्रेस के सूत्र बताते हैं कि बिखराव रोकने और डैमेज कंट्रोल के तहत इन नेताओं से बयान वापस लेने को कहा गया। अंबिका सोनी जैसे कुछ नेताओं ने सोनिया से उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग भी कर डाली। चिट्ठी लिखने वालों में शामिल नेता बड़े पदों पर रहे हैं। गुलाम नबी आजाद जम्मू कश्मीर के सीएम रहे हैं और अभी राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं। राज्यसभा का उनका कार्यकाल अगले साल पूरा होने वाला है। माना जा रहा है कि वे दोबारा राज्यसभा नहीं भेजे जाएंगे। आनंद शर्मा की हालत भी ऐसी ही है। ड्डसोनिया को चिट्ठी लिखने वालों में शामिल भूपिंदर सिंह हुड्डा हरियाणा, राजिंदर कौर भट्टल पंजाब, एम वीरप्पा मोइली कर्नाटक और पृथ्वीराज चव्हाण महाराष्ट्र के सीएम रह चुके हैं। सिब्बल यूपीए सरकार में अहम मंत्री पदों पर रहे हैं। माना जाता है कि इन वरिष्ठतम नेताओं को राहुल की दोबारा ताजपोशी होने पर पार्टी में अपनी अहमियत कम होने की चिंता है, क्योंकि राहुल नई पीढ़ी को आगे लाना चाहते हैं। इनमें से कई नेता अभी राज्यसभा में हैं या जाना चाहते हैं। इन्हें राहुल गांधी के अध्यक्ष बनने पर राज्यसभा में दोबारा जाने का मौका मिलने की संभावना नहीं दिख रही। कुछ को बेटों के सियासी करियर की चिंता भी सता रही है। सीडब्ल्यूसी की 7 घंटे चली बैठक के बाद जो प्रस्ताव पारित किया गया, उसकी भाषा चेतावनी देने वाली है। सोनिया पत्र से कितनी आहत हैं, इसका संकेत प्रस्ताव की भाषा से साफ है। इसमें कहा गया है, 'सीडब्ल्यूसी यह साफ कर देना चाहती है कि किसी को भी पार्टी या उसके नेतृत्व की अहमियत कम करने या उसे कमजोर करने की इजाजत नहीं दी जाएगी।' राहुल को मजबूती देते हुए कहा गया, 'सरकार के खिलाफ राहुल गांधी आगे होकर मोर्चा संभाले हुए हैं। सीडब्ल्यूसी हर तरह से सोनिया गांधी और राहुल गांधी के हाथ मजबूत करना चाहती है।'माना जा रहा है कि राहुल के चुने जाने से पहले ही सोनिया को चिट्ठी लिखने वाले ज्यादातर नेताओं को पार्टी में किनारे करने की कोशिशें शुरू हो सकती हैं। पत्र लिखने वाले नेताओं को इसका एहसास भी है। इस कारण से पांच-छह नेता कल सीडब्ल्यूसी की बैठक के तुरंत बाद गुलाम नबी आजाद के घर भी पहुंचे थे।

प्रणव मुखर्जीः जनता के राष्ट्रपति के रूप में बनाई पहचान

भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने राष्ट्रपति के रूप में एक अमिट छाप छोड़ी। इस दौरान उन्होंने दया याचिकाओं पर सख्त रुख अपनाया। उनके सम्मुख 34 दया याचिकाएं आईं और इनमें से 30 को उन्होंने खारिज कर दिया। जनता के राष्ट्रपति के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले मुखर्जी को राष्ट्रपति भवन को जनता के निकट ले जाने के लिए उठाए गए कदमों के लिए भी याद किया जाएगा। उन्होंने जनता के लिए इसके द्वार खोले और एक संग्रहालय भी बनवाया। उनके निधन से देश ने इतिहास, अंतरराष्ट्रीय संबंधों और संसदीय प्रक्रियाओं में गहरी दिलचस्पी रखने वाला एक प्रखर बुद्धिजीवी खो दिया। इतना ही नहीं, उनके साथ ही भारत के विकास की कहानी और उसके अभ्युदय का दशकों तक गवाह रहा एक और प्रत्यक्षदर्शी हमारे बीच से चला गया। भारतीय राजनीति की नब्ज पर गहरी पकड़ रखने वाले प्रणब मुखर्जी को एक ऐसी शख्सियत के तौर पर याद किया जाएगा, जो देश का प्रधानमंत्री हो सकता था, लेकिन अंतत- उनका राजनीतिक सफर राष्ट्रपति भवन तक पहुंच कर संपन्न हुआ। %गुदड़ी के लाल% धरती पुत्र प्रणब मुखर्जी के राजनीतिक जीवन में एक समय ऐसा भी आया था जब कांग्रेस पार्टी में राजनीतिक सीढ़ियां चढ़ते हुए वह इस शीर्ष पद के बहुत करीब पहुंच चुके थे, लेकिन उनकी किस्मत में देश के प्रथम नागरिक के तौर पर उनका नाम लिखा जाना लिखा था।

दशकों तक जो कांग्रेस के संकटमोचक रहे और जिन्हें देश के सर्वाधिक सम्मानित राजनेताओं में शुमार किया जाता है, वैसे भारत के 13वें राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का सोमवार को यहां एक अस्पताल में निधन हो गया। पांच दशकों तक सार्वजनिक जीवन में रहे मुखर्जी पिछले कुछ दिनों से बीमार थे। सोमवार शाम उन्होंने राजधानी दिल्ली स्थित सेना के रिसर्च एंड रेफरल अस्पताल में अंतिम सांस ली। वे 84 वर्ष के थे।

भारत के सबसे युवा वित्त मंत्री

पश्चिम बंगाल में जन्मे इस राजनीतिज्ञ के नाम कई ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं जो उन्हें दूसरों से अलग बनाती हैं। वह चलते फिरते इनसाइक्लोपीडिया थे और हर कोई उनकी याददाश्त क्षमता, तीक्ष्ण बुद्धि और मुद्दों की गहरी समझ का मुरीद था। साल 1982 में वे भारत के सबसे युवा वित्त मंत्री बने। तब वह 47 साल के थे। आगे चलकर उन्होंने विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री और वित्त व वाणिज्य मंत्री के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं। वे भारत के पहले ऐसे राष्ट्रपति थे जो इतने पदों को सुशोभित करते हुए इस शीर्ष संवैधानिक पद पर पहुंचे।

पीएम ना होते हुए भी 8 वर्षों तक लोकसभा के नेता

उन्होंने इंदिरा गांधी, पी वी नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह जैसे प्रधान मंत्रियों के साथ काम किया। यही वजह थी कि दशक दर दशक वे कांग्रेस के सबसे विश्वसनीय चेहरे के रूप में उभरते चले गए। मुखर्जी भारत के एकमात्र ऐसे नेता थे जो देश के प्रधानमंत्री पद पर न रहते हुए भी 8 वर्षों तक लोकसभा के नेता रहे। वे 1980 से 1985 के बीच राज्यसभा में भी कांग्रेस पार्टी के नेता रहे।

राजनीतिक जीवन की शुरुआत

अपने उल्लेखनीय राजनीतिक सफर में उन्होंने और भी कई उपलब्धियां हासिल कीं। उनके राजनीतिक सफर की शुरुआत 1969 में बांग्ला कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में राज्यसभा सदस्य बनने से हुई। बाद में बांग्ला कांग्रेस का कांग्रेस में विलय हो गया। मुखर्जी जब 2012 में देश के राष्ट्रपति बने तो उस समय वे केंद्र सरकार के मंत्री के तौर पर कुल 39 मंत्री समूहों में से 24 का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। साल 2004 से 2012 के दौरान उन्होंने 95 मंत्री समूहों की अध्यक्षता की। राजनीतिक हलकों में मुखर्जी की पहचान आम सहमति बनाने की क्षमता रखने वाले एक ऐसे नेता के रूप में थी जिन्होंने सभी राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ विश्वास का रिश्ता कायम किया जो राष्ट्रपति पद पर उनके

चयन के समय काम भी आया।

बनना चाहते थे प्रधानमंत्री, लेकिन..

उनका राजनीतिक सफर बहुत भव्य रहा जो राष्ट्रपति भवन पहुंचकर संपन्न हुआ। लेकिन प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठना उन्हें नसीब नहीं हुआ। हालांकि उन्होंने खुलकर इस बारे में अपनी इच्छा व्यक्त कर दी थी। अपनी किताब %%द कोअलिशन इयर्स में मुखर्जी ने माना कि मई 2004 में जब कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री बनने से इनकार कर दिया था तब उन्होंने उम्मीद की थी कि वह पद उन्हें मिलेगा।

उन्होंने लिखा है, अंतत- उन्होंने (सोनिया) अपनी पसंद के रूप में डॉक्टर मनमोहन सिंह का नाम आगे किया और उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। उस वक्त सभी को यही उम्मीद थी कि सोनिया गांधी के मना करने के बाद मैं ही प्रधानमंत्री के रूप में अगली पसंद बनूंगा। मुखर्जी ने यह स्वीकार किया था कि शुरुआती दौर में उन्होंने अपने अधीन काम कर चुके मनमोहन सिंह के मंत्रिमंडल में शामिल होने से मना कर दिया था लेकिन सोनिया गांधी के अनुरोध पर बाद में वह सहमत हुए। साल 2004 में शुरू हुए संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के कार्यकाल के उथल-पुथल के वर्षों से लेकर 25 जुलाई 2012 को राष्ट्रपति बनने तक वे सरकार के संकटमोचक बने रहे।

2004 में पहले बार पहुंचे लोकसभा

पांच बार राज्यसभा और दो बार लोकसभा के सदस्य रहे मुखर्जी बतौर सांसद सबसे लंबी अवधि तक देश की सेवा करने वालों में शुमार थे। 1971 में बांग्ला कांग्रेस के कांग्रेस में विलय के बाद वे कांग्रेस संसदीय दल के सदस्य बने। वैसे तो उन्होंने सरकार में विभिन्न पदों को सुशोभित किया लेकिन साल 2004 में पहली बार उन्हें लोकसभा पहुंचने का सौभाग्य मिला। पश्चिम बंगाल की जंगीपुर संसदीय सीट से चुनाव जीतकर वे लोकसभा के सदस्य बने। हालांकि इससे पहले उन्हें दो बार लोकसभा चुनावों में हार का मुंह देखना पड़ा था। साल 1977 में मालदा और 1980 में बोलपुर संसदीय क्षेत्र से वे चुनाव हार गए थे।

23 सालों तक सीडब्ल्यूसी के सदस्य

आजादी के बाद के भारत के राजनीतिक इतिहास और शासन की गहरी जानकारी रखने वाले मुखर्जी भारत के विकास को आयाम देने वाले और इसमें बढ़ चढ़ कर भाग लेने वाली एक प्रमुख शख्सियत थे। राष्ट्रपति बनने से पहले वे 23 सालों तक कांग्रेस की सर्वोच्च नीति-निर्धारण इकाई कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) के सदस्य रहे। इस दौरान वे पार्टी के लिए संकटमोचक की भूमिका भी निभाते रहे।

मनमोहन सरकार में अहम भूमिका

साल 2004 में हेनरी किसिंजर से हुई उनकी मुलाकात ने भारत और अमेरिका के बीच सामरिक समझौतों को एक नया आयाम दिया। साल 2005 में जब वे भारत के रक्षा मंत्री थे तब भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों के लिए एक नए मसौदे पर हस्ताक्षर हुए थे। साल 2004 से 2012 तक मनमोहन सिंह के कार्यकाल में उन्होंने सूचना का अधिकार, खाद्य सुरक्षा, भारतीय विशिष्?ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) और मेट्रो रेल परियोजना की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों में अहम भूमिका निभाई।

जब कांग्रेस से हो गए अलग

भारतीय राजनीति में कांग्रेस के बाद के युग के एक प्रमुख शिल्पकार के रूप में उन्हें याद किया जाता है। तत्कालीन प्रधानमंत्री एच डी देवेगौड़ा और बाद में इंद्र कुमार गुजराल के नेतृत्व में बनी संयुक्त मोर्चा की सरकारों के लिए बाहरी समर्थन जुटाने में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। कांग्रेस ने भी इन सरकारों का समर्थन किया था। उनका राजनीतिक जीवन एक समर्पित कांग्रेस कार्यकर्ता का रहा। साल 1987 से 1988 तक के बीच का कालखंड ऐसा रहा जब वे पार्टी से बाहर रहे। उन्होंने राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस पार्टी नाम से अलग दल बनाया, लेकिन राजीव गांधी के मनाने पर उन्होंने पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया।

कोरोना काल में चुनाव

निर्वाचन आयोग ने कोरोना काल में चुनाव संचालित करने को लेकर नए दिशा-निर्देश जारी किए। बिहार पहला राज्य है जहां ऐन कोरोना के दौरान विधानसभा चुनाव होने हैं। मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों के उपचुनाव भी इसके साथ ही कराए जाएंगे। ये चुनाव अपेक्षित समय पर और इन दिशा-निर्देशों के अनुरूप हुए तो निश्चित रूप से मतदाताओं और राजनीतिक दलों के लिए यह बिल्कुल नया चुनावी अनुभव साबित होगा। चुनाव आयोग ने अपनी गाइडलाइंस में साफ किया है कि नामांकन के समय किसी भी प्रत्याशी के साथ दो से ज्यादा लोग मौजूद नहीं रहेंगे। घर-घर जाकर प्रचार करने का काम पांच से ज्यादा लोगों का समूह नहीं कर सकता। रोड शो में पांच से ज्यादा वाहन नहीं हो सकते।

वोटरों को भी वोटिंग के दौरान ग्लव्स दिए जाने और कोरोना संक्रमित वोटरों के लिए विशेष व्यवस्था करने के निर्देश दिए गए हैं। जाहिर है, ये तमाम निर्देश महत्वपूर्ण हैं और कोरोना के दौरान चुनाव संचालित करने के खतरों को कम करने के लिए जरूरी हैं। लेकिन इन निर्देशों में वर्चुअल रैलियों का कोई जिक्र नहीं है, जिन्हें बिहार में पहले ही आजमाया जा चुका है। संभव है, निर्वाचन आयोग इस बारे में अलग से कुछ कहे। लेकिन फिलहाल उसके कुछ न कहने को रेखांकित करना इसलिए जरूरी है क्योंकि बिहार में मुख्य विपक्षी पार्टी आरजेडी समेत कई दलों ने निर्वाचन आयोग को दिए गए सुझावों में वर्चुअल रैलियों को लेवल प्लेइंग फील्ड के खिलाफ बताया था। टीवी जैसे व्यापक संचार माध्यम पर विपक्ष को कम स्पेस मिलना स्वाभाविक है, लिहाजा बिहार के ज्यादातर विपक्षी दल कोरोना के इस कहर के बीच राज्य में चुनाव कराने का ही विरोध कर रहे हैं। कोई कह सकता है कि अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव भी इसी दौर में होने जा रहे हैं, जबकि वहां कोरोना का प्रकोप बिहार से कहीं ज्यादा है। लेकिन एक तो अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में प्रत्यक्ष प्रचार कम होता है और टीवी तथा अन्य मीडिया एकतरफा नहीं हो पाते, दूसरी बात यह कि वहां तय समय पर चुनाव कराना संवैधानिक बाध्यता है। अपने देश में विधानसभा चुनावों को लेकर ऐसी कोई बाध्यता नहीं है। कुछ महीनों के राष्ट्रपति शासन का आसान विकल्प भी उपलब्ध है। इसका दूसरा पहलू यह है कि अभी ऐसी कोई समय सीमा नहीं बांधी जा सकती, जिसके बाद कोरोना की बीमारी खत्म हो जाने की उम्मीद हो। ऐसे में यह सवाल जायज है कि जब जीवन के हर क्षेत्र में जोखिम उठाकर आगे बढ़ने का फैसला हो रहा है तो लोकतंत्र के सबसे बड़े उत्सव चुनावों को ही अनिश्चित काल के लिए क्यों टाल दिया जाए। फैसला अंतिम तौर पर चुनाव आयोग को ही करना है और यह काम वह सभी संबंधित पक्षों पर अच्छी तरह विचार करके ही करेगा। लेकिन बेहतर होगा कि तिथियों की घोषणा करने से पहले वह सभी राजनीतिक दलों से एक बार फिर विचार-विमर्श कर ले। जरूरी है कि चुनाव आयोग के फैसले और इंतजाम न केवल निष्पक्ष हों, बल्कि राजनीतिक दलों और वोटरों को उनके निष्पक्ष होने का भरोसा भी हो।

मध्य प्रदेशः अक्टूबर में हो सकते हैं उपचुनाव

मध्यप्रदेश के 27 विधानसभा क्षेत्रों में उपचुनाव अक्टूबर में कराए जा सकते है इसके लिए राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय ने प्रारंभिक तैयारियां पूरी कर ली है। कोरोना संक्रमण की स्थिति को देखते हुए मतदान केंद्रों की

अधिकतम मतदाता संख्या 1000 तक सीमित की जा रही है। उपचुनाव के लिए 2500 से ज्यादा मतदान केंद्र बढ़ाए जा रहे है। चुनाव कार्य के लिए अधिकारी व कर्मचारी भी चिन्हित किए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों की पहले दौर की जांच पूरी कराई जा चुकी है। चुनाव कार्य के लिए अधिकारी और कर्मचारी भी चिन्हित कर लिए गए है। चुनाव आयोग से दिशा-निर्देश मिलते ही आगे की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जाएगा। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय के अधिकारियों ने बताया कि उपचुनाव कराने के लिए जो भी प्रारंभिक तैयारियां करनी होती है वह की जा चुकी है। अभी उपचुनाव वाले 27 विधानसभा क्षेत्रों में 6700 के आसपास मतदान केंद्र है। इनकी संख्या 2500 से ज्यादा बढ़ेगी। अधिकांश कलेक्टरों ने इसके प्रस्ताव भी दे दिए है जिनका परीक्षण कर अंतिम निर्णय के लिए चुनाव आयोग को भेजा गया है। चुनाव कराने के लिए जिला निर्वाचन अधिकारियों ने कर्मचारी चुन लिए है। वहीं उपचुनाव में लगने वाली ईवीएम और वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपैट) की पहले दौर की जांच करा ली गई है। मतदान केंद्र में अन्य जो व्यवस्थाएं लगती है उसके संबंध में चुनाव आयोग से मार्गदर्शन अभी प्राप्त नहीं हुआ है। इसके आधार ही आगामी कार्रवाई की जाएगी। जानकारी के अनुसार चुनाव आयोग मतदान कराने को लेकर जल्द ही दिशा-निर्देश भेजने वाला है। इसको लेकर सभी राष्ट्रीय राजनीतिक दलों से सुझाव लिए जा चुके है। इसके आधार पर आयोग प्रक्रिया तय करेगा जिसके तहत चुनाव संचालन होगा। इस बार राजनीतिक दलों को चुनाव प्रचार के तौर-तरीके भी बदलने होंगे और इन पर नजर रखने की व्यवस्था भी आयोग को बनानी होगी। संभावना जताई गई है कि आयोग अक्टूबर में त्योहारों की स्थिति को देखते हुए चुनाव की तारीखें तय कर सकता है। उधर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी उपचुनाव वाले सभी जिलों में कोरोना संक्रमण की स्थिति पर लगातार नजर रखे हुए है। कलेक्टरों से प्रतिदिन रिपोर्ट बुलवाई जा रही है और इसे चुनाव आयोग को भी भेजा जा रहा है।

देश के कई राज्यों में बारिश-बाढ़ का कोहराम

पिछले कुछ दिनों से मूसलाधार बारिश के चलते देश की राजधानी दिल्ली व साइबर सिटी कहे जाने वाले गुरुग्राम में जिस तरह जनजीवन अस्तव्यस्त हुआ है, वह शासन-प्रशासन की नाकामी को ही उजागर करता है। इससे पहले जयपुर और मुंबई में बारिश से उपजी तबाही के मंजर सुर्खियां बनते रहे। यूं तो हर बरसात में देश के अनेक भागों से बाढ़ की खबरें आती हैं, लेकिन उसके पीछे भौगोलिक जटिलताएं और नदियों का उफान होता है। वहीं बात मप्र की करें तो प्रदेश में में कहीं तेज तो कहीं रिमझिम बारिश का दौर जारी है प्रमुख नदियों में अब भी उफान की स्थिति है गुना व श्योपुर में पार्वती नदी में उफान से श्योपुर-कोटा को जोड़ने वाला खातौली पुल 12 फीट तक डूब गया। वहीं श्योपुर-बारां मार्ग पर कुहांजापुर पुल 3 फीट तक पानी में समा गया है। इससे श्योपुर का राजस्थान के कोटा व बारां से संपर्क कट गया है। पार्वती नदी में पानी बढ़ने से कई गांवों पर खतरा मंडराने लगा है। रायसेन में बेतवा उफान पर है। इससे जबलपुर-जयपुर मार्ग बंद हो गया। बुरहानपुर में ताप्ती नदी के सभी घाट डूबे हुए हैं। होशंगाबाद में सेठानीघाट पर नर्मदा का जलस्तर 961 फीट से रविवार शाम 7 बजे 950 फीट पर आ गया है। खतरे का निशान 967 फीट है। इंदौर में जरूरत के 34 इंच पानी का कोटा इसी महीने पूरा होने के आसार हैं। 23 घंटों में हुई 12.5 की बारिश ने तालाबों में सालभर के पानी का इंतजाम कर दिया है। सवाल यह उठता है कि देश की राजधानी दिल्ली, साइबर सिटी गुरुग्राम, भारतीय कारोबार की राजधानी मुंबई और टूरिस्ट हब जयपुर में बारिश से हुई बदहाली के लिये किसे जवाबदेह? ठहराया जाये? निस्संदेह आपदा से उबरने में नियोजन की चूक और इससे निपटने में की गई लापरवाही ही इन मुसीबतों का अहम कारण है। साल-दर-साल विभिन्न शहरों में ऐसी ही स्थितियां पैदा होती हैं मगर हम उससे कोई सबक नहीं लेते। यदि पिछले अनुभवों को ध्यान में रखकर नीतियों का निर्धारण किया गया होता तो संकट इतना बड़ा नहीं होता। अंडरपास में जलभराव में फंसे वाहन, सड़कों का धसना और जलभराव से लगने वाले जाम घंटों लोगों को मुसीबत में डाल देते हैं। वर्षा ऋतु के

आगमन से पहले नालों व सीवर की सफाई तथा जल निकासी हेतु जो कदम उठाये जाने चाहिए, स्थानीय निकाय उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते। स्थानीय निकाय महज राजनीति के अखाड़े बनकर रह गये हैं। जनता आसमान में बादल घिरते ही सहम जाती है कि कहां सड़क धसेगी, कहां दीवार गिर सकती है या फिर वे घर से दफ्तर कैसे निकलेंगे। लेकिन शासन-प्रशासन में जनता की दुश्वारियों के प्रति कोई संवेदनशीलता नजर नहीं आती। यही वजह है कि साल-दर-साल जल निकासी की समस्या जटिल होती जा रही है। विडंबना देखिये कि भारी जलभराव के कारण गुरुग्राम की सड़कों पर नाव तैरती नजर आई जो शासन-प्रशासन की विफलताओं का पर्याय ही है। बीते सप्ताह राजस्थान की राजधानी जयपुर में बारिश?के पानी का जो सैलाब आया, उससे पिंक सिटी के लोगों की रूह कांप गई। शहर की तमाम निचली बस्तियों में पानी भर गया। बारिश अपने साथ जो हजारों टन मिट्टी लाई, उससे तमाम घर दब गये। वाहनों की लंबी कतारें मिट्टी के नीचे दबकर रह गई। घर में घुसने के लिये लोगों ने कई दिन मिट्टी हटाने का काम किया। मिट्टी में दबे वाहनों को निकालने के लिये जेसीबी और डंपर का इस्तेमाल किया गया। तमाम महत्वपूर्ण संस्थानों और दुकानों के बेसमेंट में पानी भर जाने से करोड़ों का नुकसान हुआ। जयपुर के एक चर्चित संग्रहालय के बेसमेंट में रखी दुर्लभ सामग्री पानी भरने से तबाह हो गई। निचली बस्तियों के जलमग्न होने से लोग दाने-दाने के मोहताज हो गये। पानी का सैलाब बर्बादी का मंजर दिखा गया।सवाल यह भी कि आखिर ऐसी नौबत क्यों आती है कि लोग अपने घर में ही शरणार्थी बन जाते हैं। सवाल यह भी कि जीवनदायिनी मानसूनी बारिश अब डराने क्यों लगी है? क्यों थोड़ा ज्यादा बारिश होने पर शहर दरिया में तबदील हो जाता है? निस्संदेह अगस्त माह में दिल्ली में बारिश का सात साल का रिकॉर्ड टूटा है मगर फिर भी जलनिकासी का तो स्थायी इंतजाम हर चुनौती के मुकाबले के लिये होना चाहिए। आखिर शहरी स्थानीय निकाय हालात से सबक लेकर आने वाले दिनों के लिये तैयारी क्यों नहीं करते? क्या आम आदमी की फिक्र केवल वोट के लिये ही होती है? यह तय है कि हम इंफ्रास्ट्रक्चर और मैनेजमेंट की प्लानिंग में चूक रहे हैं।

इंदौर लगातार चौथी बार बना देश का स्वच्छतम शहर

केवलराम मालवीय

मध्य प्रदेश के इंदौर शहर ने देश में सबसे स्वच्छ रहने का चौका लगा दिया है, जबकि भोपाल राजधानी के रूप में अव्वल स्थान पर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 के परिणाम की घोषणा की। सबसे पहले सर्वेक्षण में देश के सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार मैसूर को मिला था। उसके बाद से इंदौर लगातार तीन साल तक (2017, 2018, 2019) में शीर्ष स्थान पर रहा है। प्रधानमंत्री ने जब इसका ऐलान किया तब वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, इंदौर की पूर्व महापौर मालिनी गौड़, कलेक्टर मनीष सिंह समेत अन्य अधिकारी मौजूद थे। इंदौर शहर के चौथी बार अव्वल आने की कहानी पूरे देश के लिए मिसाल है। स्वच्छता के लिए नगर निगम के अधिकारियों और सफाईमित्रों ने कोरोना लॉकडाउन की भी परवाह नहीं की। मार्च में लॉकडाउन लागू होने से जून में अनलॉक-1 तक इंदौर शहर में लगातार सड़कों की सफाई हुई, रात में प्रमुख सड़कें रोज धुलीं, घर-घर से रोज कचरा लिया जाता रहा और सड़क किनारे लगे लिटरबिन भी खंगाले गए। स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 का कार्य 28 दिन में पूरा किया गया है। स्वच्छता एप पर 1.7 करोड़ नागरिकों ने रजिस्ट्रेशन कराया। सोशल मीडिया पर 11 करोड़ से ज्यादा बार इसे देखा गया। 5.5 लाख से ज्यादा सफाई कर्मचारी सामाजिक कल्याण कार्यक्रम से जोड़े गए और कचरा बीनने के काम में लगे 84,000 से ज्यादा लोगों को मुख्यधारा में लाया गया। इंदौर को चौथी बार सफाई के मामले में अग्रिम पंक्ति में खड़ा करने में शहर की जनता ने अपने फीडबैक से अहम भूमिका निभाई है।

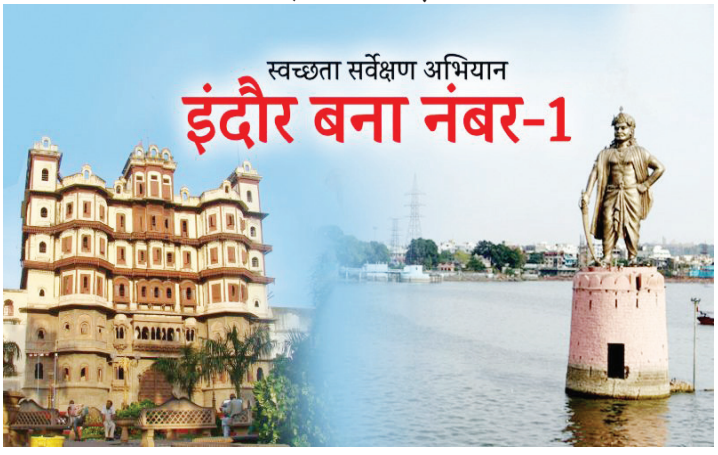

पिछले स्वच्छ सर्वेक्षण में इंदौर के करीब तीन लाख लोगों ने सकारात्मक फीडबैक दिया है। शहर में सफाई व निगम संबंधी अन्य समस्याओं के निराकरण के लिए बना इंदौर-311 ऐप करीब चार लाख लोगों ने डाउनलोड किया है। इसमें से तीन लाख पांच हजार से ज्यादा लोगों ने ऐप और अन्य माध्यमों से स्वच्छ सर्वेक्षण में फीडबैक दिया था। यही वजह है कि सर्वे के दौरान फीडबैक में भी इंदौर शहर देश के अन्य शहरों से आगे रहा। इसके अलावा सर्वे टीम के शहर में आने पर करीब 30 हजार लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से सर्वे टीम को फीडबैक क्या। पिछले सर्वे में पब्लिक फीडबैक के 25 प्रतिशत अंक (करीब 1500) थे। सफाई के कार्यों में शहरवासियों की भी भागीदारी समय समय पर देखने को मिलती है। पिछले वर्ष इंदौर को ओडीएफ डबल प्लस का खिताब मिला था जो इस बार भी बरकरार है।इस खिताब के लिए शहर के कम्युनिटी व पब्लिक टॉयलेट का उपयोग करने वाले लोगों से फीडबैक लिया गया था। इसके लिए इन स्थानों पर फीडबैक मशीनें भी लगाई गई थी। इंदौर के करीब डेढ़ लाख लोगों ने इस पर फीडबैक दिया है। इसके अलावा शहर के शौचालयों की सफाई व अन्य व्यवस्थाओं के सबंध में स्वच्छता ऐप व गूगल मैप के आधार पर भी लोगों ने फीडबैक दिया। इसी का नतीजा है कि इंदौर ने ओडीएफ डबल प्लस का खिताब भी हासिल किया। पिछले साल इंदौर को फाइव स्टार रेटिंग मिली थी। इसमें शहर के करीब 30 हजार लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से फीडबैक दिया है।

कोरोना से डरना नहीं, लड़ना है

ह में आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि बीमारी और मौतों के तेज़ी से बढ़ते हुए आँकड़ों से लोगों ने अब डरना बंद कर दिया है।हालात पहले के इक्कीस दिनों के मुक़ाबले इस समय ज़्यादा ख़राब हैं पर जैसे-जैसे आँकड़ों का ग्राफ़ ऊँचा हो रहा है ,ख़ौफ़ भी कम होता जा रहा है।कारण कुछ भी हो सकते हैं।एक यह भी कि लोग अब जीना चाहते हैं और उसके लिए अपने आप को बदलने का इरादा भी रखते हैं।यह इरादा लोगों की बदली हुई आवाज़ों और चाल-ढाल में नज़र भी आने लगा है। लोगों को अच्छे से अंदाज़ा है कि वर्तमान महामारी ने व्यक्ति, परिवार, समाज ,राष्ट्र और एक विश्व नागरिक के रूप में सभी को किस कदर बदलकर रख दिया है ,अंदर से निचोड़कर भी।हमें पता ही नहीं चल पाया कि पिछले पाँच महीनों के दौरान हम कितने बदल चुके हैं ,प्रत्येक पल कितने और बदल रहे हैं ।

आगे आने वाले साल हमें संवेदनशीलता के स्तर पर और कितना परेशान करने वाले हैं।हमें महसूस होने लगा था कि एक व्यक्ति के रूप में स्वयं की उपस्थिति और निरंतरता के प्रति हम अपना आत्मविश्वास खोते जा रहे हैं। मास्क की अनिवार्यता के अनुशासन ने हमारे चेहरों से गुम हुई मुस्कुराहटों को तो दबा ही दिया हमारे प्राकृतिक तनावों को भी सार्वजनिक होने से प्रतिबंधित कर दिया।ऐसा इसलिए हुआ कि सब कुछ अचानक ही हो गया।एक राष्ट्र के तौर पर हम केवल सीमाओं पर ही युद्धों को लड़ने की सैन्य तैयारियाँ करते रहे और कल्पना में भी नहीं सोचा कि कोई युद्ध ऐसा भी हो सकता है जिसे नागरिकों और समाजों को ही अपने स्तरों पर ही लड़ना होगा। कोविड-19 दुनिया को एक नया अनुभव देने वाली महामारी साबित हुई है। इसका पहला मामला पिछले साल के आखिरी हफ्तों में वुहान में दर्ज किया गया था, और अब तक बीते आठ महीनों में देश-दुनिया में इसके कई हॉटस्पॉट बन गए हैं। चीन से निकलकर यह वायरस यूरोप पहुंचा, और अब एशियाई देशों में इसका संक्रमण शीर्ष पर पहुंचता दिख रहा है। भारत इससे खासतौर से प्रभावित है। रोजाना नए मामलों के लिहाज से हम सबसे ऊपर तो हैं ही, संक्रमित मरीजों की संख्या के हिसाब से भी हम शीर्ष देशों में शामिल हैं। हालांकि, ठीक होने वाले मरीजों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है और रिकवरी रेट 70 फीसदी से अधिक हो चुकी है। वैक्सीन के तीसरे चरण का परीक्षण भी बस शुरू होने वाला है। तो क्या कोरोना वायरस के दिन जल्द ही लदने वाले हैं? इसका जवाब तलाशने से पहले यह जानना जरूरी है कि अब तक हमने इसका किस तरह मुकाबला किया है? अपने यहां मई तक संक्रमित मरीजों की संख्या बहुत ज्यादा नहीं थी। कहा जाता है कि लॉकडाउन के खुलने के बाद मामले तेजी से बढ़ने लगे। हालांकि, यहां मृत्यु-दर हमेशा से कम रही है। शुरुआती दिनों में यह बेशक पांच फीसदी के आसपास थी, लेकिन अब यह घटकर दो प्रतिशत से भी नीचे आ गई है। इसकी तुलना अगर टीबी से मरने वाले मरीजों या बाल मृत्यु-दर से करते हैं, तो काफी उम्मीदें बंधती हैं। टीबी से होने वाली कुल वैश्विक मौत की दो-तिहाई अकेले अपने यहां होती है, जबकि बाल मृत्यु-दर में भी हमारी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। इतना ही नहीं, कोरोना वायरस में मृत्यु-दर सामान्य वायरस जैसी ही है। तब क्यों इसको लेकर पूरे देश में यूं अफरा-तफरी का माहौल पैदा हो गया? दरअसल, दो वजहों से इस वायरस को लेकर डर फैला। भारत में कोरोना वायरस से जान गंवाने वालों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है, हालांकि मृत्यु-दर में अब गिरावट दिखने लगी है। रिकवरी रेट, यानी कोरोना की जंग जीतने वाले मरीजों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। उम्मीद है कि अगले साल की शुरुआत तक इसका टीका आम लोगों के लिए उपलब्ध हो जाएगा। इन सबसे ऐसा लगता है कि महामारी का बुरा दौर बीत चुका है। जाहिर है, अब वह वक्त आ गया है कि अर्थव्यवस्था को गति दी जाए। भारत में कोरोना संक्रमण के आंकड़ों में तेजी चिंताजनक जरूर है, लेकिन अप्रत्याशित नहीं। भारत की जो स्थिति या आबादी है, उससे किसी भी देश की तुलना संभव नहीं है। फिर भी आंकड़ों की तुलना तो होगी और चिंता का इजहार भी उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा। हमें अब किसी भी देश से तुलना करने की बजाय अपने आंकड़ों के बयान पर गौर करना चाहिए। हमारे आंकड़े हमारी अपनी कहानी बयान कर रहे हैं। जिस देश में कोरोनाके आंकड़ेको एक लाख तक पहुंचने में 100 से ज्यादा दिन लगे थे। उसी देश में पिछले दस लाख मामलों में मात्र 21 दिन लगे हैं। केवल एक दिन में अगर 62 हजार से ज्यादा मामले आएंगे, तो फिर तो हम सहज अनुमान लगा सकते हैं कि आगामी 50 दिनों में भारत की स्थिति क्या हो सकती है? 30 जनवरी को भारत में कोरोना का पहला मामला सामने आया था और शुरू में बहुत धीरे-धीरे मामले बढ़े थे। विशाल आबादी के बावजूद भारत कोरोना मामलों के अग्रणी राष्ट्रों में कहीं दूर-दूर तक नहीं था। तब भी आशंका पूरी थी कि भारत में तेजी से संक्रमण हो सकता है और अभी वही हो रहा है। हालांकि, इसका कतई यह अर्थ नहीं कि हम किसी बड़ी मुसीबत में फंस गए हैं। भारत में अगर 20 लाख से ज्यादा मामले सामने आए हैं, तो उनमें ठीक होने वाले 13 लाख से ज्यादा लोग शामिल हैं।

वैक्सीन जल्द

कोरोना महामारी की त्रासदी से जूझती मानवता को अब एक ही इंतजार है कि जल्द से जल्द कोई ऐसी वैक्सीन आये जो जीवन को सामान्य बनाने में कारगर हो। ऐसे में रूस द्वारा कोरोना वायरस की वैक्सीन खोज लेने के दावे को वैसा प्रतिसाद नहीं मिल पाया, जैसी उम्मीद लगायी जा रही थी। इसे शीतयुद्ध की बाकी कड़वाहट कहें या वैक्सीन पहले खोजने की प्रतिस्पर्धा कि पश्चिमी जगत ने इस खोज के प्रति गंभीरता नहीं दर्शायी। इन संशयवादियों ने लोगों के उत्साह को कम किया है। मंगलवार को रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने आश्चर्यजनक ढंग से घोषणा की कि कोरोना की वैक्सीन तैयार कर ली गई है। फिलहाल दुनिया में सौ से अधिक वैक्सीनों पर काम चल रहा है और कई वैक्सीनों का ट्रायल अंतिम चरण में है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की सूची में जिन छह वैक्सीनों के कामयाबी के करीब पहुंचने का उल्लेख है, उसमें रूसी वैक्सीन का जिक्र नहीं है। फिर भी रूसी वैक्सीन पूरी दुनिया में सुर्खियों में आ गई। जब पुतिन ने अपनी बेटी पर वैक्सीन के ट्रायल की बात कही तो दुनिया में इसकी खासी चर्चा हुई। आमतौर पर पुतिन के परिजन सार्वजनिक जीवन में नजर आने से बचते रहे हैं। रूस का दावा है कि अक्तूबर तक वह पहले अपने स्वास्थ्य कर्मचारियों और फिर शिक्षकों के लिये टीकाकरण अभियान चलाएगा।

केंद्रीय मंत्री तोमर केप्रयासों से मुरैना के 3 मार्गों का शिलान्यास, 55.47 करोड़ रू. के होंगे कार्य

अटल प्रोग्रेस वे से होगा समूचे क्षेत्र का विकास

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री व क्षेत्रीय सांसद नरेंद्र सिंह तोमर के प्रयासों से मुरैना संसदीय क्षेत्र के तीन मार्गों के निर्माण कार्यों का वर्चुअल शिलान्यास केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गड़करी ने किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। केन्द्रीय मंत्री तोमर व थावरचंद गेहलोत व अन्य मंत्रिगण भी वर्चुअल शिलान्यास में शामिल हुए। तोमर के प्रयासों से मुरैना के 3 मार्गों का शिलान्यास भी इस अवसर पर हुआ। ये कार्य 55.47 करोड़ रूपए की लागत से होंगे। मध्यप्रदेश को कुल 11,427 करोड़ रू. लागत की 1,361 किलोमीटर लम्बी 45 सड़क परियोजनाओं की सौगातें मिली है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री नितिन गडकरी ने इन परियोजनाओं के शुभारंभ अवसर पर मध्यप्रदेश को आगे भी सुविधाएं जारी रखने का ऐलान किया। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि गड़करी नई कल्पनाओं को साकार रूप देने के लिए पूरे देश में जाने जाते है। वे जब महाराष्ट्र सरकार में मंत्री थे, तब मुंबई-पूना हाईवे बनाया था जो कि अपने आप में देश में एक उदाहरण था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी जब देश के प्रधानमंत्री थे तो उन्होंने गड़करी जी को ही ग्रामीण क्षेत्र में आवागमन की अधोसंचना विकसित करने का जिम्मा सौंपा था। हमें गर्व है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का खाका नितिन गड़करी ने ही ही खींचा था, जिसके माध्यम से आज देश का गांव-गांव सड़कों से जुड़ गया है। तोमर ने कहा कि मुरैना क्षेत्र के जिन तीन मार्गों का आज भूमिपूजन किया गया हैं, उनसे इस क्षेत्र के नागरिकों को आवागमन के लिए बेहतर सुविधाएं मिल पाएंगी। जनता की मांग आज पूरी हो रही है। तोमर ने कहा कि गड़करी जी की सक्रियता, विजन व क्रियान्वयन कराने की ताकत से प्रतिदिन 32 किमी हाईवे का निर्माण भारत में हो रहा है जबकि वर्ष 2016 से पहले प्रतिदिन मात्र 3 किलोमीटर हाईवे बनता था। मोटर व्हीकल एक्ट में संशोधन के लिए श्री गडकरी ने ही पूरे देश को तैयार किया। तोमर ने कहा मध्यप्रदेश के लिए नितिन जी के द्वार सदैव खुले रहते है। हमारे यहां के हर प्रस्ताव पर वे उदारता से मंजूरी देते हैं। चंबल एक्सप्रेस वे की योजना को भी उन्होंने मंजूरी दी है। इससे चंबल क्षेत्र में परिवहन के साथ ही विकास की तस्वीर बदलेगी।

जनता सरकार की कर रही है वाहवाही: तोमर

नितिन गड़करी जी नई कल्पनाओं व उन्हें साकार रूप देने के लिए पूरे देश में जाने जाते है। वे महाराष्ट्र में मंत्री थे तो ऐसा हाईवे बनाया जो अपने आप में देश में एक उदाहरण था। अटलजी प्रधानमंत्री थे तो उन्होंने नितिन जी को कहा कि गांवों में सड़कों का नेटवर्क बनाना है। गर्व है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क का खाका उन्होंने ही खींचा था। नितिन जी की सक्रियता और विजन व क्रियान्वयन कराने की ताकत से प्रतिदिन 32 किमी हाईवे का निर्माण भारत में हो रहा है जबकि पहले 3 किलोमीटर प्रतिदिन हाईवे बनता था। मोटर व्हीकल एक्ट में संशोधन के लिए श्री गडकरी ने ही पूरे देश को तैयार किया। जल परिवहन के लिए सागरमाला परियोजना हो या बड़े हाईवे बनाए गए हों, ये सब नितिन जी की ही परिकल्पना है। चार धाम महामार्ग परियोजना भी अपने आप में एक अनूठा कदम है। मध्यप्रदेश के लिए नितिन जी का दिल हमेशा खुला रहा है। हमारे यहां के हर प्रस्ताव पर उदारता से मंजूरी देते हैं। चंबल एक्सप्रेस वे एक ऐसी योजना है जिसे वर्तमान परिस्थिति में क्रियान्वयन करना मुश्किल था लेकिन शिवराज जी ने कहा तो इसकी मंजूरी दे दी है। इससे चंबल क्षेत्र में परिवहन के साथ ही वहां विकास की तस्वीर भी बदलेगी। श्री गडकरी जब ग्वालियर प्रवास पर आए थे तो कई सारे कार्यों का शिलान्यास किया था आज वे मार्ग बनकर तैयार हो गए हैं। जनता नितिन जी व मध्यप्रेदश सरकार की वाहवाही कर रही है। मध्यप्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए श्री गडकरी ने अनेक बातें कही। सीआरएफ फंड से साढ़े तीन सौ करोड़ रूपए सांसदों व इतनी ही राशि विधायकों के लिए देने का भी श्री गडकरी ने ऐलान किया। श्री गडकरी ने कहा कि विधायकों के प्रस्तावों के अनुसार साढ़े तीन सौ करोड़ रूपए के कार्य कराने के लिए मुख्यमंत्री श्री चौहान विधायकों से चर्चा करेंगे वहीं मध्यप्रदेश के राज्यसभा व लोक सभा के सभी सांसदों से केंद्रीय मंत्री श्री तोमर साढ़े तीन सौ करोड़ रूपए के कार्यों के लिए प्रस्तावों पर बात करेंगे। मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री समन्वय करके सड़क परिवहन मंत्री को प्रस्ताव भिजवाएंगे।

कोरोना महामारी के चलते देश में सादगी से मना स्वतंत्रता दिवस

मोदी का दुनिया को संदेश–भारत जो ठान लेता है उसको कर दिखाता है

“

4वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का खाका पेश किया और मार्ग प्रशस्त किया। प्रधानमंत्री ने सवाल किया कि ''आखिर कब तक हमारे ही देश से गया कच्चा माल, तैयार उत्पाद बनकर वापस आता रहेगा? देश को आत्मनिर्भर बनाना है और इसका मतलब सिर्फ आयात कम करना ही नहीं, हमारी क्षमता, हमारी रचनात्मकता और कौशल को बढ़ाना भी है।'' प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां आज भारत की ओर देख रही हैं इसलिए हमें विश्व के लिए भी उत्पाद बनाने होंगे। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में भारत की संप्रभुता की ओर आंख दिखाने वालों को भी चेताया और कोरोना महामारी के दौरान पेश आई चुनौतियों और उनके हल पर भी बातचीत की। प्रभासाक्षी के खास कार्यक्रम चाय पर समीक्षा में आज प्रधानमंत्री के संबोधन की बड़ी बातें सिलसिलेवार तरीके से समझते हैं। . प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को आत्मनिर्भर भारत की अपनी परिकल्पना को विश्व-कल्याण से जोड़ते हुए 'मेक इन इंडिया' के साथ मेक फार वर्ल्ड' का नया नारा दिया जिसमें देश को वैश्विक विनिर्माण श्रृंखला के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभारने का संकल्प है।

देश में 74वां स्वतंत्रता दिवस समारोह शनिवार को हर्षोल्लास से मनाया गया। इस मौके पर राष्ट्र की आन-बान एवं शान का प्रतीक तिरंगा देश भर में फहराया गया। राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से लगातार सातवीं बार ध्वजारोहण करने के बाद देशवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए पूरा देश जोश से भरा है और एलओसी से लेकर एलएसी तक देश की संप्रभुता पर जिस किसी ने आंख उठायी है देश ने, देश की सेना ने उसका उसी भाषा में जवाब दिया है।चीन और पाकिस्तान का नाम लिये बिना आज कहा कि भारत की ओर आंख उठाने वालों को करारा जवाब दिया जायेगा और लद्दाख में दुनिया ने इसकी झलक देखी है। मोदी ने कहा कि देश ने असाधारण समय में असंभव को संभव किया है। इसी इच्छाशक्ति के साथ प्रत्येक भारतीय को आगे बढ़ना है। वर्ष 2022, हमारी आजादी के 75 वर्ष का पर्व है और इसे हमें बड़े अवसर के रूप में देखना चाहिए। उन्होंने कहा,''अगले वर्ष हम अपनी आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश कर जाएंगे।एक बहुत बड़ा पर्व हमारे सामने है और बड़े संकल्प के लिए यह नई ऊर्जा से भरा नया अवसर भी है। दो वर्षों के लिए हमें संकल्प लेना होगा एक तो जब हम 75 वें वर्ष में प्रवेश करेंगे और दूसरा जब 75 वां वर्ष पूरा होगा तो वह और भी बड़ा अवसर होगा। '' उन्होंने 21वीं सदी के इस दशक में भारत को नई नीति और नई रीति के साथ ही यह कहते हुए आगे बढ़ने पर बल दिया कि अब साधारण से काम नहीं चलेगा और हमें हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ होना होगा। उन्होंने कहा,'' हमारी नीति हमारे तरीके , उत्पाद, सब कुछ बेस्ट होना चाहिए, सर्वश्रेष्ठ होना चाहिए। तभी हम एक भारत-श्रेष्ठ भारत की

परिकल्पना को साकार कर पाएंगे। '' उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता की चुनौती छोटी नहीं है और इसकी कसौटी पर खरा उतरने के लिए 130 करोड देशवासियों को मिलकर दिन रात कड़ी मेहनत और त्याग करना होगा। आत्मनिर्भरता की दिशा में स्वास्थ्य क्षेत्र में किये गये प्रयासों की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि कोरोना के इस संकट काल में आत्मनिर्भरता की सबसे बड़ी सीख इसी क्षेत्र ने दी जो इतने कम समय में मेडिकल आपूर्ति के लिए आयात पर निर्भरता छोड़कर अब उसका निर्यात करने लगा है। कोरोना संकट से पूर्व देश में मात्र एक कोरोना टेस्टिंग लैब थी लेकिन अब 1,400 लैब हिंदुस्तान के हर कोने में फैला है। जब कोरोना का संकट आया तब एक दिन में मात्र 300 टेस्ट हो पाते थे लेकिन अब हर दिन सात लाख से ज्यादा टेस्ट हो पा रहे हैं। कोरोना की चुनौती से निपटने के लिए वैक्सीन का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि देश में इस वक्त एक नहीं,दो नहीं, तीन-तीन कोरोना वैक्सीन परीक्षण के विभिन्न चरणों में है और जैसे ही वैज्ञानिकों से हरी झंडी मिलेगी, देश में उन वैक्सीन को बड़े पैमाने पर उत्पादन की भी तैयारी है। वैक्सीन की बड़े पैमाने पर उत्पादन की तैयारियां पूरी हैं। इसके साथ ही वैक्सीन हर राज्य तक कम से कम समय में कैसे पहुंचे, उसकी रूपरेखा भी तैयार है। प्रधानमंत्री ने देश की रक्षा में प्राण न्यौच्छावर करने वाले भारत मां के सपूतों के साथ-साथ आज देश भर के कोरोना यौद्धाओं को भी श्रद्धांजलि दी और नमन किया। प्रधानमंत्री मोदी ने आर्थिक नीतियों में सुधार, कारोबार की सुगमता और अर्थव्यवस्था आधुनिकता की तरफ तेज गति से ले जाने के लिये 110 लाख करोड़ रुपये की बुनियादी ढांचा परियोजना पाइपलाइन (एनआईपी) विकसित करने जैसे सरकार की पहल का जिक्र करते हुए कहा कि भारत आत्मनिर्भर बनने के लिए आज जरूरी आत्म विश्वास से भरा हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि सरकार के सुधारों के परिणाम दिख रहे हैं और पिछले साल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। कंपनियों ने कोराना संकट के दौरान भी भारत में भारी पूंजी निवेश किया है। मोदी ने यह बात ऐसे समय कही है जब दुनिया चीन के बदलते तेवरों को देखते हुए आपूर्ति के नए भरोसेमंद केंद्रों की तलाश कर रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में बड़ी बात कहते हुए बताया कि आत्मनिर्भर भारत का विचार 'कोई आयात प्रतिस्थापन का विचार नहीं है बल्कि यह विश्व-कल्याण की आवश्यकता भी है।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने करीब डेढ़ घंटे (86 मिनट) के संबोधन में कहा, ''हमारा संकल्प केवल 'मेक इन इंडिया नहीं है बल्कि मेक फॉर वर्ल्ड (दुनिया के लिये विनिर्माण) है।''

राष्ट्र के लिए जिएंगे, राष्ट्र के लिए मरेंगे, जब अस्थियाँ विसर्जित होंगी तो जल से आवाज आएगी, 'भारत माता की जय'

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल के लाल परेड ग्राउण्ड परिसर के मोतीलाल नेहरु स्टेडियम में आयोजित राज्यस्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने महिला विशेष सशस्त्र बल, जिला बल, शासकीय रेल पुलिस, विशेष शस्त्रबल हॉक फोर्स, एस.टी.एफ., नगर सेना, जेल विभाग और पुलिस बैंड की टुकड़ियों से सज्जित परेड का निरीक्षण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री चौहान की धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह, राज्य मंत्रिपरिषद के सदस्य, मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस, पुलिस महानिदेशक श्री विवेक जौहरी उपस्थित थे।मुख्यमंत्री श्री चौहान एवं सभी उपस्थितों द्वारा भारतमाता की जयघोष के साथ मुख्यमंत्री का संबोधन प्रारंभ हुआ। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने राष्ट्र को स्वतंत्रता दिलवाने वाले वीर बलिदानियों के चरणों में नमन करते हुए कहा कि देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वालों के सम्मान में भोपाल में निर्मित शौर्य स्मारक में आज भारतमाता की प्रतिमा स्थापित हुई है। यह सभी को राष्ट्र प्रेम, शौर्य और साहस की प्रेरणा देगी। प्रत्येक नागरिक को भोपाल के शौर्य स्मारक में स्थापित इस प्रतिमा के दर्शन करना चाहिए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी का स्मरण किया तथा उनके कथन को उद्धृत किया कि %भारतभूमि सिर्फ जमीन का टुकड़ा नहीं है। यही जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। हिमालय इसका मस्तिष्क है, कश्मीर किरीट है, गौरीशंकर इसकी शिखा है। पंजाब और बंगाल इसकी दो बाहु हैं। दिल्ली दिल है। विंध्याचल कटि है। नर्मदा करधनी है। पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट विशाल जंघाएं हैं। कन्याकुमारी इसके पंजे हैं। सागर इसके पग पखारता है। पावस के कुंतल मेघ, काले-काले मेघ केश राशि हैं।

लॉकडाउन को वास्तविक रूप से सफल बनाया पुलिस ने: मंत्री डॉ. मिश्रा

अरविंद सिंह नरवरिया

गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने स्वतंत्रता दिवस पर नवीन पुलिस थाना अरेरा हिल्स के शुभारंभ किया। इस अवसर पर डॉ. मिश्रा ने कहा कि कोरोना संक्रमण काल में लॉकडाउन को सही रूप में सफल बनाने में पुलिस विभाग का सराहनीय योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि विपत्ति के समय में पुलिस के अधिकारी-कर्मचारियों ने कर्त्तव्य निर्वहन करते हुए शहादत भी दी है। मंत्री डॉ. मिश्रा ने कोरोना काल में शहीद होने वाले इंस्पेक्टर श्री देवेन्द्र कुमार चंद्रवंशी की धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा चंद्रवंशी और इंस्पेक्टर श्री यशवंत पाल की सुपुत्री कु. फाल्गुनी पाल को उप निरीक्षक के पद पर अनुकम्पा नियुक्ति-पत्र सौंपे। इस अवसर पर पुलिस महानिदेशक श्री विवेक जौहरी, संभागायुक्त श्री कवीन्द्र कियावत, डीआईजी श्री इरशाद वली और अन्य अधिकारीगण मौजूद थे। मंत्री डॉ. मिश्रा ने कोरोना संक्रमण काल में पुलिस विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा कोरोना योद्धा के रूप में किये गये कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की। उन्होंने कहा कि वे मंशा, वाचा, कर्मणा से विभागीय अधिकारी-कर्मचारियों के प्रति साधुवाद और आभार प्रकट करते हैं। उन्होंने कहा कि नवीन

शहीद कोरोना योद्धाओं के परिजनों को अनुकम्पा नियुक्ति-पत्र सौंपे

पुलिस थाना अरेरा हिल्स के क्षेत्राधिकार में अति महत्वपूर्ण शासकीय संस्थानों के आने से उसकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। आशा करता हूँ कि वे पूर्ण मुस्तैदी और कर्त्तव्यनिष्ठा से अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए जन-हित में उत्कृष्ट कार्यों का प्रदर्शन करेंगे। शुभारंभ अवसर पर संबोधित करते हुए एडीजी भोपाल जोन श्री उपेन्द्र जैन ने बताया कि नवीन पुलिस थाना क्षेत्र में राजभवन, विधानसभा, विधायक विश्राम गृह, मंत्रालय, वल्लभ भवन, सतपुड़ा- विंध्याचल, पुरानी विधानसभा, रोशनपुरा, मालवीय नगर, भीम नगर, ओम नगर और वल्लभनगर इत्यादि रहेंगे। उन्होंने बताया कि नवीन थाने में एक उपनिरीक्षक, तीन सहायक उपनिरीक्षक, 6 प्रधान आरक्षक तथा 14 आरक्षक के बल को स्वीकृति प्रदान की गई है। थाना प्रभारी के रूप में उप निरीक्षक श्री आर.के. सिंह की पद-स्थापना कर दी गई है।

राज्य मंत्री कुशवाह ने 8.20 करोड़ लागत की सड़क का किया भूमिपूजन

ग्वालियर । नए शहर के रूप में विकसित हो रहे शताब्दीपुरम क्षेत्र में 40 मीटर चौड़ी और 1.3 किलोमीटर लम्बी नई सड़क बनेगी। शताब्दीपुरम फेज-4 में बनने जा रही इस मुख्य सड़क मार्ग का निर्माण ग्वालियर विकास प्राधिकरण द्वारा लगभग 8 करोड़ 20 लाख रूपए की लागत से किया जायेगा। प्रदेश के उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भारत सिंह कुशवाह ने मंगलवार को बतौर मुख्य अतिथि इस सड़क का भूमिपूजन किया। राज्य मंत्री कुशवाह ने इस अवसर पर कहा कि ग्वालियर शहर के सुनियोजित विकास के लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध है। सरकार शहर के विकास कार्यों के लिये धन की कमी नहीं आने देगी। शताब्दीपुरम में अनिल भाटिया आवासीय परिसर चौराहे के समीप आयोजित हुए भूमिपूजन कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद विवेक नारायण शेजवलकर ने की। इस अवसर पर पूर्व विधायक मुन्नालाल गोयल बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद थे। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधिगण तथा ग्वालियर

विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी के के सिंह गौर सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

विद्युत उप केंद्र बनने से होगा लो वोल्टेज की समस्या का निदानः ऊर्जा मंत्री तोमर

ग्वालियर। प्रदेश सरकार के ऊर्जा मंत्री श्री प्रधुम्न सिंह तोमर ने वर्चुअल रैली के माध्यम से बिरला नगर उपकेन्द्र का लोकार्पण करते हुए कहा कि आम जन की सुविधा एवं समस्याओं के त्वरित निदान के लिए बिरला नगर उपकेन्द्र बनाया गया है। इस केन्द्र से 10115 उपभोक्ताओं को लाभ मिलेगा। बिरला नगर उपकेन्द्र को लगभग 5 लाख की लागत से बनाया गया है। यह उपकेंद्र बनने से क्षेत्र के उपभोक्ताओं को लो वोल्टेज की समस्या से मुक्ति मिलेगी। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने बिरला नगर उपकेन्द्र का लोकार्पण करते हुए कहा कि तानसेन जोन में उपभोक्ता अधिक हो जाने के कारण समस्याओं का निदान जल्द नही हो पा रहा था, साथ ही बिल जमा करने के लिए लम्बी-लम्बी कतारें लग जाती थीं और तानसेन नगर दूर पडता था। इन्ही समस्याओं को देखते हुए बिरला नगर उपकेन्द्र बनाया गया है। उपकेन्द्र पास में ही बन जाने से सभी उपभोक्ताओं को इसका लाभ मिलेगा। इसीलिए तानसेन जोन को दो भागों मे बांटा जा रहा है। एक तानसेन जोन जिस पर अब

लगभग 7500 उपभोक्ता बचे हैं, दूसरा बिरला नगर जोन जिस पर 10115 उपभोक्ताओं को लाभ मिलेगा। इस उपकेन्द्र की जिम्मेदारी एई श्री मिलिंद तांबे को दी गई है। उन्होने कहा कि अवैध कॉलोनियों में विद्युतीकरण का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। कॉलोनियों में तार डालकर आम नागरिक बिजली जलाते थे, जिससे जनहानी होने की सम्भावना बनी रहती थी, लेकिन विद्युतीकरण होने से तार नही डालने पडेगें, घर के पास खम्बा लग जाने से कनेक्शन उसी खम्बे से दिया जायेगा और कहा कि सभी उपभोक्ता अपने कनेक्शन ले लें और समय पर बिल जमा करें। बिरला नगर उपकेन्द्र से चार शहर का नाका, लूटपुरा, लाइन नम्बर 5,6,9,10,11,12,13,14, जती की लाइन, कल्लू काछी की बगिया, रेशममिल, नरसिंह नगर, गदाईपुरा, संजय नगर, महेन्द्र नगर आदि क्षेत्र के उपभोक्ताओं को लाभ मिलेगा।

गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने दतिया में मुख्यमंत्री ग्रामीण स्ट्रीट वेंडर योजना के प्रमाण-पत्र वितरित

दतिया। गृह, जेल एवं संसदीय कार्य एवं विधि विधायी मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने दतिया जिले के ग्राम कटीली नुनवाहा, ग्राम कुम्हेड़ी एवं ग्राम रिछारी में मुख्यमंत्री ग्रामीण स्ट्रीट वेंडर योजना का शुभारंभ किया। उन्होंने ग्राम कटीली में 190 स्ट्रीट वेंडर को प्रमाण-पत्र वितरित किये। इन्हें 10-10 हजार रूपये का ब्याज मुक्त लोन रोजगार शुरू करने के लिये दिया जाएगा। डॉ. मिश्रा ने ग्राम नुनवाहा में 119, ग्राम कुम्हेड़ी में 106, और रिछारी में 64 स्ट्रीट वेंडर को प्रमाण-पत्र वितरित किये। मंत्री डॉ. मिश्रा ने ग्राम कुम्हेड़ी में विकास कार्यों के लिये 60 लाख रूपये और ग्राम रिछारी के लिये 26 लाख रूपये स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि सरकार प्रत्येक गरीब व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। डॉ. मिश्रा ने कहा कि गरीबों के कल्याण के लिये विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही है। इन योजनाओं का आगे बढ़कर लाभ लें। इस दौरान जन-प्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

आँगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं ने 'कोरोना योद्धा' के रूप में अपनी भूमिका का किया बेहतर निर्वहनः इमरती देवी

ग्वालियर। महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती इमरती देवी ने कहा कि विभागीय योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के साथ कोरोना संक्रमण को रोकने एवं कोरोना के प्रति जन सामान्य को घर-घर जाकर जागरूक करने में महिला एवं बाल विकास विभाग की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका आदि ने कोरोना योद्धा के रूप में अपनी भूमिका का बेहतर निर्वहन किया है। महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती इमरती देवी शुक्रवार को डबरा में कम्युनिटी हॉल में आयोजित कोरोना योद्धा सम्मान समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहीं थीं। कार्यक्रम में भाजपा के नेता श्री मोहन सिंह राठौर, डबरा एवं भितरवार परियोजना की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाएँ एवं अधिकारीगण उपस्थित थे। महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती इमरती देवी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं द्वारा विभागीय योजनाओं को धरातल पर पहुँचाने में अहम भूमिका रही है। कोरोना संक्रमण काल में कोरोना योद्धा के रूप में घर-घर जाकर लोगों को जागरूक करने में भी अपनी भूमिका का बेहतर निर्वहन किया है। इनके इस कार्य को देखते हुए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि विभाग के सभी अधिकारियों एवं मैदानी कर्मचारियों की जिम्मेदारी है कि हम प्रदेश को कुपोषण मुक्त करें। इसके लिये हमें कुपोषित बच्चों पर विशेष ध्यान देकर उन्हें कुपोषण मुक्त कराना है। श्री मोहन सिंह राठौर ने कहा कि प्रदेश के महिला एवं बाल विकास विभाग को राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। जिसके पीछे प्रदेश की महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्री की लगन, मेहनत एवं सूझबूझ का परिणाम है। इसी कड़ी में आज आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं का भी सम्मान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ÷सखी संवाद÷ के माध्यम से महिला एवं बाल विकास मंत्री द्वारा आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं की समस्याओं के निराकरण की पहल की गई थी। जिसके अच्छे परिणाम प्राप्त हुए थे। उन्होंने कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं से कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों के स्वरूप में बदलाव आया है। केन्द्रों को बाल शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित किया गया है।

27 सीटों का उपचुनाव तय करेगा दिग्गज नेताओं का भविष्य

पंकज त्रिपाठी

उपचुनाव में शिवराज, कमलनाथ और ज्योतिरादित्य सिंधिया का भविष्य दांव पर है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के बीते 3 कार्य कालों में वर्ष 2004 से 2019 तक हुए 30 सीटों के उपचुनावों में 19 सीटों भाजपा जीती 27 विधानसभा क्षेत्रों में उपचुनाव नतीजे सरकार के साथ भाजपा और कांग्रेस के बड़े नेताओं का भविष्य भी तय करने वाले कहे जा रहे हैं प्रदेश में 27 सीटों पर उपचुनाव कब होंगे इस पर संस्पेंस बरकरार है। जिन विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव होना है वहा कोरोनावायरस का संक्रमण तेजी से फैल रहा है। 27 में से 16 विधानसभा क्षेत्र तो अकेले ग्वालियर-चंबल संभाग के हैं। यहां संक्रमण के चलते हालत चिंताजनक होते जा रहे हैं। मध्य प्रदेश के इतिहास में ये पहला मौका होगा जब एक साथ 27 विधानसभा क्षेत्रों में उपचुनाव होगा। इन सीटों के नतीजे सरकार के साथ भाजपा और कांग्रेस के बड़े नेताओं का भविष्य भी तय करने वाले कहे जा रहे हैं। राजनीतिक गलियारों में कयास ये भी लगाए जा रहे हैं कि आने वाले समय में चुनाव 27 से भी ज्यादा करीब 35 विधानसभा क्षेत्रों में हो सकते हैं। चुनाव परिणाम के बाद सत्ता किसकी होगी। कमलनाथ फिर से कांग्रेस की सरकार बनाएंगे या फिर शिवराज ही राज करेंगे? ये सब चुनाव परिणाम पर ही निर्भर करेगा। इसलिए 27 सीटों पर होने वाले चुनावों को प्रदेश में मिनी विधानसभा चुनाव भी कहा जा रहा है। ऐसा कहना इसलिए भी लाजमी है कि प्रदेश में 16 साल में 30 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुए, लेकिन 15वीं विधानसभा में पहली बार एक साथ 27 सीटों पर उपचुनाव होंगे। इस चुनाव में भाजपा और कांग्रेस के दिग्गज नेताओं का भविष्य दांव पर लगा हुआ हा। शिवराज सिंह चौहान,

ज्योतिरादित्य सिंधिया और कमलनाथ का आगे का राजनीतिक रास्ता कैसा होगा ये सब चुनाव नतीजे ही बताएंगे। हालांकि रिक्त हुए विधानसभा क्षेत्रों से जो रुझान मिल रहे हैं उनके अनुसार चुनाव में दोनों ही पार्टियों को भितरघात का खतरा ज्यादा है। इसकी वजह भी नजर आती है। कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुए 25 पूर्व विधायकों का तो भाजपा से चुनाव लड़ना निश्चित है। इससे क्षेत्र के भाजपा नेताओं का भविष्य दांव पर लग गया है। कांग्रेस के पास कई क्षेत्रों में चुनाव मैदान में उतारने के लिए उम्मीदवारों का टोटा है। इसलिए कांग्रेस अब भाजपा के हारे और वरिष्ठ नेताओं को अपने पाले में लाने का प्रयास कर रही है। उसे अपनी इस मुहिम में सफलता भी मिल रही है। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ भाजपा के ऐसे असंतुष्ट नेताओं से खुद मुलाकात कर रहे हैं हालांकि प्रदेश में अब तक हुए उपचुनाव के रुझान कहते हैं कि सत्ता जिसकी होती है मतदाता उसी का साथ देते हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के बीते 3 कार्य कालों में वर्ष 2004 से 2019 तक हुए 30 सीटों के उपचुनावों में 19 सीटों भाजपा जीती, यानी 63.33त्न। भाजपा ने अपनी 13 सीटें बचाई, तो कांग्रेस की 6 सीटें छीनी थी। हालांकि उसे 6 सीटें गंवानी भी पड़ीं, जबकि कांग्रेस 10 सीटें ही जीत सकीं यानी 33.33त्न। वह चार सीटें छीनने में कामयाब रही। ऐसे में कांग्रेस को अपने खाते की सीटें बचाने के लिए भाजपा से कड़ी चुनौती मिलना तय है।

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
एण्टी इवेजन ब्यूरो
वाणिज्यकर विभाग, भिण्ड, मध्य प्रदेश

हमें पुलिस नहीं दोस्त बनकर ग्वालियर की जनता का विश्वास जीतना होगा: आईजी

अवैध रेत उत्खनन पर सख्त कार्यवाही हो : आईजी

सुरजीत राजावत

ग्वालियर में आईजी ग्वालियर रेंज अविनाश शर्मा द्वारा ग्वालियर शहर के समस्त राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों की समीक्षा बैठक ली गई। कोरोना काल मे बरतें सर्तकता, मास्क ना पहनने वालो एवं लॉकडाउन के नियमों का उल्लंघन करन वालों पर हो सख्त कार्यवाही करें। बैठक में आईजी ग्वालियर ने उपस्थित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों से एससी-एसटी एवं महिला संबंधी अपराधों के 1 माह से लंबित प्रकरणों की समीक्षा की। उनके द्वारा एससी-एसटी के लंबित राहत प्रकरणो के संबंध में थाना प्रभारियों से प्रकरण के लंबित रहने का कारण जाना तथा एससी-एसटी के लंबित प्रकरणों को 2 माह के अंदर समाधान करने के लिये कहा। जिससे पीड़ित को शीघ्र इंसाफ दिलाया जा सके। उन्होने कहा कि थाने मे आने वाले प्रत्येक फरियादी व्यक्ति की सुनवाई की जाना चाहिये। सभी थाना प्रभारी इस बात को सुनिश्चित करेंगे कि थाने से कोई भी पीड़ित व्यक्ति बिना सुनवाई के वापस न लौटे। समीक्षा बैठक के दौरान आईजी ग्वालियर ने उपस्थित समस्त पुलिस अधिकारियों से महिला संबंधी अपराधों को गंभीरता से लेते हुए आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तार कर प्रकरणों का त्वरित निकाल करने के लिये निर्देशित किया इसके साथ मप्र शासन द्वारा जारी निर्देश के तहत चिंटफंड कंपनियों के खिलाफ प्राप्त होने वाली प्रत्येक षिकायत को गंभीरता से लेते हुऐ उसकी जांच करें और प्रकरण पंजीबद्ध कर गरीब का पैसा लेकर भाग जाने वाले लोगों को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचाये। बैठक मे ग्वालियर रेंज डीआईजी एके पाण्डे द्वारा समस्त थाना प्रभारियों को थाना बल की टीम गठित कर अभियान चलाकर अवैध रेत उत्खनन करने वालों, जुआ, सट्टा खिलवाने वालों, सोसायटी माफिया एवं पीडीएस राशन की चोरी करने वाले गिरोहों पर प्रकरण दर्ज कर सख्त कार्यवाही करने के निर्देष दिये। उन्होने कहा कि पीडीएस राशन की खरीद और ब्रिक्री करना दोनों ही अपराध की श्रेणी मे आता है इनके विरूद्ध भी प्रकरण पंजीबद्ध किये जाये।

कोरोना संक्रमण को रोकने सहयोग और समर्थन जरूरी: एस.पी अमित सांघी

ग्वालियर। कोरोना संक्रमण के लगातार बढ़ने से देश और दुनिया परेशान है। ग्वालियर में बढते कोरोना के संक्रमण को रोकने के लिए जनता का पुलिस के लिए सहयोग और समर्थन जरूरी है तभी हम कोरोनावायरस पर विजय पा सकेंगे । ग्वालियर के पुलिस अधीक्षक अमित सांघी ने रेडियो चस्का 95 एफएम के माध्यम से ग्वालियर के श्रोताओं से खास बातचीत करते हुए कहा ,की छोटी सी लापरवाही से कोरोना संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है। इसीलिए घर में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना चाहिए और बाहर निकलते समय मास्क का उपयोग अवश्य करना चाहिए। उन्होंने एक प्रश्न के जवाब में कहा कि ग्वालियर में महिलाओं की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मैं जिस जिस जिले में रहा हूं अब तक मेरी प्राथमिकता सबसे प्रथम महिला सुरक्षा को लेकर रही है और महिला के प्रति किसी ने अपराध किया है उसकी गिरफ्तारी करना और उसको सज़ा दिलाना मेरी अभी तक की कार्यशैली रही है। ग्वालियर में महिला सुरक्षा के लिए उनके अधिकारों के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं

के साथ मिलकर के जागरूकता कार्यक्रम भी ग्वालियर पुलिस समय-समय पर चलाएगी। जिससे महिलाओं के प्रति अपराधों पर अंकुश लगे उन्होंने बताया की ग्वालियर में अब अपराधी ज्यादा दिनो तक पुलिस की पकड़ के बाहर नहीं रह सकता है।और शीघ्र से शीघ्र गिरफ्तारी हो सके ,इसके लिए हमने थाना प्रभारीयो को निर्देशित कर दिया है तथा क्राइम ब्रांच ग्वालियर में भी हमने एक कार्य योजना बनाई है जिसके सार्थक परिणाम अभी से मिलने लगे हैं साथ ही शहर के ट्रैफिक के एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि हमारी प्राथमिकता शहर की यातायात व्यवस्था पर भी है। अभी हाल में ही हमने दाल बाजार को वन वे करके जाम से मुक्ति दिला कर जनता को राहत दी है। टॉक शो के दौरान आये लाइव कॉल्स में एसपी श्री अमित सांघी ने शालीनता के साथ कॉलर्स के सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। साथ ही उन्होंने ग्वालियर के युवाओं को एक गाने की दो लाइन के माध्यम से समझाया की *रुक जाना नहीं तुम किसी से हार के ,कांटो पर चलकर मिलेंगे साए बाहर के.. उन्होंने युवाओं को सही राह पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में दो रास्ते अवश्य आते हैं एक सही और गलत ।हमें सही राह का चुनाव करना चाहिए ,भले ही थोड़ा समय लगे परंतु सही राह पर चल कर ही सफलता हासिल होती है।

युवा संवादःपूर्व मुख्यमंत्री नाथ ने कहा-

वर्तमान दौर में किसान-युवा हताश, अच्छे भविष्य की आस में ही ओवरएज हो गए मप्र के युवा

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी आधुनिक डिजिटल भारत के सच्चे अर्थों में वास्तुविद् थे। उन्होंने लोकतंत्र और सद्भाव को मजबूत बनाने के साथ ही भारतीय राजनीति में भविष्य की सोच के एक राजनेता की पहचान बनाई और 21वीं सदी के नए भारत की नींव रखी। यह बात पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने स्वर्गीय राजीव गांधी के जन्मदिवस के अवसर पर प्रदेश के युवाओं के नाम जारी संदेश में कही। दरअसल, गुरुवार को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में ऑनलाइन युवा संवाद का आयोजन किया गया था। इस दौरान कमलनाथ ने राजीव गांधी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे ऐसे राजनेता थे, जिन्होंने भविष्य के भारत के साथ ही युवाओं के भविष्य की चिंता की। लोकतंत्र को व्यापक आधार देते हुए उन्होंने युवाओं को वोट देने का अधिकार दिया और वोट देने की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की। 21वीं सदी के भारत में युवाओं के भविष्य की चिंता करते हुए उन्होंने दूरदर्शिता का परिचय दिया। डिजिटल भारत बनाने के लिए कंप्यूटर क्रांति की शुरुआत की। कमलनाथ ने कहा कि वर्तमान दौर में देश व प्रदेश में

जो हालात हैं, उससे हमारे युवा और किसान दोनों ही हताश हैं। जबकि देश के निर्माण में इन दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। पूर्व मुख्यमंत्री नाथ ने कहा कि मुझे यह कहते हुए अफसोस है कि जो युवा 5-10 वर्ष पहले कॉलेज की पढ़ाई करके निकले हैं। वे अच्छे भविष्य का इंतजार करते-करते आज ओवर एज हो गए। ऐसे युवा जो पढ़े लिखे हैं और जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की है वे ना तो गांव के रहे और ना ही शहर के रहे। पिछले 15 वर्ष में हमारा मध्यप्रदेश बहुत पीछे रह गया है। रोजगार को लेकर न तो कोई सोच और न ही कोई योजना बन पाई। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी नौकरी में अवसर और मौके बहुत सीमित हैं, इसलिए उन्होंने मुख्यमंत्री रहते निजी क्षेत्र में नई नौकरियां पैदा करने की योजना बनाई। इसके लिए निवेश को प्रोत्साहन दिया।

हमने 26 लाख किसानों का कर्जा माफ किया

ग्वालियर। मध्यप्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एनपी प्रजापति ने आज पूर्व केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया पर कथित रूप से आरोप लगाते हुये कहा कि देश में 74 साल का सबसे बडा घोटाले का सरगना कोई है तो वह ग्वालियर में है। उन्होंने कहा कि राज्य में भाजपा की सरकार ने कितना विकास किया इसका उदाहरण यह है कि राज्य सरकार द्वारा गेहूं खरीदने के बाद उसे रखने के लिए गोदाम तक नहीं बनवा पाये वह आज भी खुले में पडा रहकर भीगता है।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एनपी प्रजापति आज यहां अपने प्रवास के दौरान पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे। उन्होने कहा कि कांग्रेस 15 वर्ष बाद चुनाव जीत कर सत्ता में आई तो उसका सपना था माफियाओं के विरूद्ध कार्रवाई करना, बेरोजगारी समाप्त करना किसानों के कर्जे माफ करना और राज्य का उत्थान करना। लेकिन ग्वालियर अंचल के नेता 15 साल तक तो युद्ध लड़ते रहे और अंत में अपनी पीठ दिखाकर भाग गये। उन्होंने कहा कि पीठ दिखाने वाले को गददार ही कहा जाता है। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष प्रजापति ने कहा कि कांग्रेस ने सरकार बनाने के बाद 26 लाख किसानों का कर्जा माफ किया। उन्होंने कहा कि जो लोग कहते हैं कुछ नहीं किया उनके ही 16 विधानसभा क्षेत्रों के किसानों की कर्ज माफी की सूची कांग्रेस के पास मय मोबाइल नंबरों के है चाहो तो कॉल कर किसानों से पूछ लें। उन्होंने कहा कि यदि उनकी सरकार रहती तो किसानों को कर्ज माफी की तीसरी किस्त शुरू हो जाती। प्रजापति ने कहा कि राज्य में रेत खदानों का

बंदरबांट किया जा रहा है। प्रजापति ने कहा कि असली सीएम तो नरोत्तम बनने थे वही सीएम पद वेटिंग थे लेकिन कार्यक्रम के दौरान वह कहां थे। इतना ही नहीं मंत्री यशोधरा राजे भी कहां थी। उन्होंने कहा कि हमारा तो गांधी परिवार है वहीं उनका आरएसएस परिवार । उन्होंने कहा कि आरएसएस जो बोलेगा वही होता है। इस अवसर पर पूर्व मंत्री गोविंद सिंह ने कहा कि कमलनाथ सरकार पर आरोप लगाने वालों के छह मंत्री स्वयं उनकी सरकार में थे और वह भी बल्लभ भवन में बैठते थे। उन्होंने कहा कि यदि सिंधिया में दम है तो वह अपने ऊपर अमृता जैन द्वारा पचास लाख रूपये टिकट के लिये लगाये आरोपों का जबाब दें। या तो वह उस वीडियो की जांच करायें या खंडन करें। उन्होंने कहा कि 76 हजार 361 सदस्यता की जगह 75 लाख कह देते तो भी कौन देखता। उन्होने कहा कि टाइगर तो जंगल में सभी की सुरक्षा करता है तो स्वयं को ग्वालियर आने पर 50 से 100 पुलिस कर्मियों को क्यों लिये थे। क्या वह नकली टाइगर हैं। पत्रकार वार्ता में मंत्री पीसी शर्मा, अपेक्स बैंक के पूर्व संचालक अशोक सिंह, प्रदेश प्रवक्ता केके मिश्रा, शहर जिला अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा, आरपी सिंह, अजीत सिंह भदौरिया, रश्मि पवार शर्मा, आदि मौजूद थे। पत्रकार वार्ता के बाद सभी नेताओं ने ग्वालियर व्यापार मेला में आयोजित सदस्यता अभियान में भाग लिया।

जनता की सेवा को समर्पित अशोक सिंह तोमर (छोटू भैया)

अशोक सिंह तोमर ने ग्वालियर 16 पूर्व से कांग्रेस पार्टी में दावेदारी ठोकी

ग्वालियर 16 पूर्व से एक ऐसा चेहरा सामनें आया हैं जो छात्र राजनीति से सक्रिय रहे है छात्र आन्दोलनों के अपनी अहम भूमिका निभाई। उसके उपरान्त सामाजिक क्षेत्र में भी बढ-चडकर भाग किया। क्षत्रिय महासभा में जिलाध्यक्ष जैसी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वचन किया तोमरधार की कुल देवी चिल्लासन माता मन्दिर निर्माण समिति की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई। आपने राजनीति में भी सत्ता और संगठन ने समय-समय जो जिम्मेदारी प्रदान की उसको अपनी क्षमतओं से अधिक आगे बढकर भाग लिया एवं नैतिक दायित्व का बखूबी निर्वहन किया। हर समय जनता की सेवा को रहने वाले एक सच्चे जनसेवक के रूप में अशोक सिंह तोमर (छोटू भैया) कार्य कर रहे हैं चाहे छात्रों की समस्या हो या आम आदमी की समस्या हो आप के सम्मुख आते ही उसका उचित समाधान करना अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझकर उनका समाधान करने की आदत बन गई। वर्तमान में कांग्रेस की सक्रिय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है कांग्रेस की विचारधारा से समाज को जोडकर ग्वालियर पूर्व से अपनी प्रबल दावेदारी कर रहे है। यदि काग्रेस ने क्षेत्र के प्रतिनिधित्व की जिम्मेदारी प्रदान की तो आम जनता के बीच पार्टी की विचारधारा को ठीक से निर्वहन करेंगे। अभी जनपद उपाध्यक्ष गोहद रहते हुए जनता जनार्दन का स्वागत करने में तत्पर रहते है। इसके अलावा सामाजिक कार्य बेटी बचाओ, बेटी पढाओ अभियान, गौ संरक्षण कार्य जैसे अधिक सामाजिक क्रिया कलाप में अग्रिम भूमिका में संलग्न रहना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

पुष्पांजली टुडे सामान्य ज्ञान

1. पृथ्वी पर दिन और रात होते हैं ?
<u>दैनिक गति के कारण</u>
वार्षिक गति के कारण
छमाही गति के कारण
तिमाही गति के कारण

2. सबसे बड़ा ग्रह है ?
<u>बृहस्पति</u>
पृथ्वी
युरेनस
शुक्र

3. सबसे छोटा ग्रह है ?
मंगल
शनि
<u>बुध</u>
नेप्चून

4. अगुलहास धारा किस महासागर में बनती है ?
प्रशान्त महासागर में
<u>हिन्द महासागर में</u>
आर्कटिक महासागर में
अन्य

5. पृथ्वी का सबसे भीतर वाला भाग क्रोड किसका बना होता है ?
ताँबा और जस्ता
निकेल और ताँबा
लोहा और जस्ता
<u>लोहा और निकेल</u>

6. मैंगनीज के उत्पादन में भारत का दूसरा स्थान है, प्रथम देश कौन सा है ?
फ्रांस
<u>रुसी संघ</u>
कनाडा
संयुक्त राज्य अमेरिका

7. निम्नांकित में से कौन देश कोयले का सबसे बड़ा उत्पादक है ?
ब्राजील
भारत
<u>अमेरिका</u>
चीन

8. इनमें किसको जापान का मैनचेस्टर कहा जाता है ?
<u>ओसाका</u>
टोकियो
नागासाकी
याकोहामा

9. भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान Deccan Educational Society नामक संस्था की स्थापना किसने की थी ?
जवाहरलाल नेहरू
रवीन्द्र नाथ टैगोर
<u>बाल गंगाधर तिलक</u>
व्योमेश चन्द्रक बनर्जी

10. 1857 के गदर के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?
<u>लॉर्ड केनिंग</u>
नील आर्मस्ट्रांग
जॉन मथाई
अन्य

11. पृथ्वी पर कुल कितने महासागर है ?
6
9
<u>5</u>
4

12. पृथ्वी पर कुल कितने महाद्वीप है ?
9
<u>7</u>
8
6

13. विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है ?
अफ्रीका
दक्षिण अमेरिका
ऑस्ट्रेलिया
<u>एशिया</u>

14. विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय कौन है ?
पेरिस विश्वविद्यालय
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
<u>तक्षशिला विश्वविद्यालय</u>
असम विश्वविद्यालय

15. अन्तरिक्ष में कृत्रिम उपग्रह प्रक्षेपण करने वाला विश्व का प्रथम देश कौन है ?
इटली
ईराक
<u>रूस</u>
चाइना

16. वास्तविक वस्तु का आभासी प्रतिबिंब बनता है ?
उत्तल दर्पण में
<u>समतल दर्पण से</u>
अवतल दर्पण में
इनमें से सभी

17. वास्तविक वस्तु का हमेशा सीधा प्रतिबिंब बनाने वाला दर्पण होता है ?
समतल, उत्तल, अवतल
समतल, अवतल
उत्तल-अवतल
<u>समतल, उत्तल</u>

18. वास्तविक प्रतिबिंब की प्रकृति कैसी होती है ?
<u>उल्टा</u>
सीधा
सीधा और उल्टा
इनमें से कोई नहीं

19. वस्तु से छोटा प्रतिबिंब बनाता है ?
उत्तल दर्पण
अवतल दर्पण
समतल दर्पण
<u>उत्तल दर्पण और अवतल दर्पण</u>

20. प्रकाश के परावर्तन के नियम के अनुसार -
आपतन कोण परावर्तन कोण से बड़ा है
<u>आपतन कोण परावर्तन कोण के बराबर है</u>
आपतन कोण परावर्तन कोण से छोटा है
सभी कथन सत्य है

अवैध उत्खनन किसी भी हालत में न हो, इसमें किसी भी प्रकार की ढ़िलाई अक्षम्य होगी

अमित शर्मा

ग्वालियर जले हुए एवं खराब ट्रांसफार्मर युद्ध स्तर पर बदले जाएँ। साथ ही इस बात का ध्यान रखें कि ट्रांसफार्मर पूरी क्षमता के हों, जिससे दुबारा ट्रांसफार्मर फुकने की नौबत न आए। इसमें किसी भी प्रकार की ढ़िलाई बर्दाश्त नहीं होगी। यह निर्देश मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों को दिए। साथ ही कहा कि बिजली की अनावश्यक कटौती कतई न हो। उन्होंने राज्यसभा सांसद श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ ग्वालियर एवं चंबल संभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक लेकर विद्युत व्यवस्था, राशन वितरण एवं अन्य जनहितैषी योजनाओं की समीक्षा की। बैठक में ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर भी मौजूद थे। रविवार की देर शाम यहाँ व्हीआईपी सर्किट हाउस मुरार में आयोजित हुई बैठक में मुख्यमंत्री श्री चौहान ने जोर देकर कहा कि बिजली के अनाप.शनाप अर्थात गैर वाजिब बिल कदापि न आएं। विद्युत ट्रांसफार्मर बदलने की कार्रवाई पर निगरानी रखने के लिये 'ट्रांसफार्मर रिप्लेसमेंट टीम' गठित की जायेंगीं। उन्होंने ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर को ट्रांसफार्मर रिप्लेसमेंट टीम गठित करने की जिम्मेदारी सौंपी है। इस टीम में विधायकगण सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण शामिल किए जायेंगे।खराब विद्युत ट्रांसफार्मर की सूची तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए। राशन की कालाबाजारी करने वालों को जेल भेजें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जोर देकर कहा कि शासकीय उचित मूल्य की दुकानों से सभी पात्र उपभोक्ताओं को समय से और पूरा खाद्यान्न मिले। उन्होंने निर्देश दिए कि राशन की कालाबाजारी को सख्ती से रोकें। कालाबाजारी करने वालों को जेल भेजने की कार्रवाई की जाए। उन्होंने साफ किया कि गरीबों का राशन अन्य कोई खा जाएए यह कदापि बर्दाश्त नहीं होगा। मुख्यमंत्री ने राशन वितरण में अनियमितताओं संबंधी शिकायतों की जाँच कर उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए। श्री चौहान ने कहा कि आगामी एक सितम्बर से प्रदेश में राशन वितरण के संबंध में विशेष अभियान चलाया जायेगा। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रेत के अवैध उत्खनन को सख्ती से रोकने के निर्देश भी बैठक में दिए। उन्होंने कहा कि सरकार के खजाने में पैसा जमा करने वाले ठेकेदारों को स्वीकृत जगह पर ही रेत का उत्खनन करने दिया जाए। अवैध उत्खनन किसी भी हालत में न हो। इसमें किसी भी प्रकार की ढ़िलाई अक्षम्य होगी।

संभागायुक्त एवं आईजी ने की शिवपुरी जिले की कानून व्यवस्था की समीक्षा

आर एस रजक

शिवपुरी। संभाग आयुक्त एमबी ओझा और आईजी अविनाश शर्मा ने गुरुवार को शिवपुरी जिले का भ्रमण किया। उन्होंने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर जिले की कानून व्यवस्था की समीक्षा की।

बैठक में कलेक्टर श्रीमती अनुग्रहा पी, पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह चंदेल, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एचपी वर्मा, अपर कलेक्टर आरएस बालोदिया, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गजेंद्रसिंह कंवर, सहायक कलेक्टर श्रीमती काजल जावला, एसडीएम अरविंद बाजपेई सहित पुलिस व प्रशासन के अधिकारी मौजूद थे। कमिश्नर श्री ओझा एवं आईजी श्री अविनाश शर्मा ने कोरोना वायरस लॉकडाउन के दौरान की गई व्यवस्थाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि आगे भी जिले में इसी प्रकार शांतिपूर्ण स्थिति बनाए रखें। आगामी गणेश चतुर्थी एवं मोहर्रम के त्योहार पर प्रशासन व पुलिस की टीम सतर्क होकर काम करें और कोविड.19 के दिशा.निर्देशों का पालन कराएं। उन्होंने कहा इस समय सार्वजनिक तौर पर त्योहारों का आयोजन नहीं करना है। लोगों को समझाएं और हिदायत दें ताकि कहीं भी भीड़भाड़ ना हो और लोग कोरोना से बचे रहें। उन्होंने कहा है कि सभी घर में रहकर ही त्यौहार मनाएं। गणेश चतुर्थी पर मिट्टी की मूर्ति का उपयोग करें और घरों में ही मूर्ति का विसर्जन करें। उन्होंने कहा है कि जिले में शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए टीम मुस्तैदी से काम करे। आगामी समय में विधानसभा उपचुनाव होने वाले हैं। जिले में उपचुनाव के लिए तैयारी करें। जिस प्रकार विधानसभा और लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराए गएए उसी प्रकार आगामी विधानसभा उपचुनाव भी शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने के लिए सक्रिय होकर काम करना है।

संघर्ष से ऊंचाईयों पर पहुंचे थे सुशांत

बॉलीवुड एक्टर सुशांत सिंह अब हमारे बीच नहीं है लेकिन काफी कड़े संघर्ष से ऊंचाईयों तक का सफर उन्होंने तय किया था। 2013 में काय पो छे से फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश करने वाले सुशांत सिंह राजपूत इससे पहले किस देश में बसता है यह दिल से टीवी जगत में प्रवेश कर चुके थे और एकता कपूर के बहुचर्चित सीरियल पवित्र रिश्ता से उन्होंने अपनी एक समर्थ अभिनेता की पहचान बना ली थी अंकिता के साथ मानव और रचना के रूप में उनकी जोड़ी को सर्वश्रेष्ठ जोड़ी का पुरस्कार भी मिला था. बिहार में पटना में जन्मे थे. है. उनके पिता सरकारी अधिकारी हैं. उनका परिवार साल 2000 के शुरूआती समय में दिल्ली में बस गया. सुशांत की 4 बहनों में से एक मीतू सिंह राज्य स्तर की क्रिकेट खिलाड़ी हैं. अभी कुछ दिन पहले ही वह अपनी मां की इच्छा अनुसार अपने ननिहाल मालडीह भी गए थे. सुशांत सिंह ने दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से इंजीनियरिंग की डिग्री भी हासिल की थी लेकिन विद्यालय जीवन से ही नाटकों एवं संगीत कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने वाले सुशांत सिंह का सपना था एक्टर बनने का जिसके चलते उन्होंने मुंबई का रुख किया था वह पहुंचकर सुशांत को काफी संघर्ष भी करना पड़ा यहां तक की 6 लोगों के साथ रूम शेयर करना पड़ा थियेटरों के चक्कर लगाने पड़े और महज ?250 के मेहनताने पर नाटकों में अभी ने करना पड़ा और बैकस्टेज डांसर के रूप में नाचना भी पड़ा. सुशांत दृढ़ इरादों वाले युवा थे उन्होंने सब स्वीकार किया मगर मुंबई को पीठ नहीं दिखाई और 2008 के आते-आते वह टीवी सीरियल्स में सक्रिय हो गए जब उनका सीरियल पवित्र रिश्ता बहुत अच्छा टीआरपी ले रहा था तभी 2013 में उन्हें कई पो चे का ऑफर मिला और अपनी पहली ही फिल्म से उन्होंने बेस्ट डेब्यू एक्टर का पुरस्कार भी प्राप्त किया.अपनी स्वर्गीय मां से बेहद प्यार करने वाले सुशांत सिंह राजपूत मजबूत दिल के लेकिन बहुत भावुक इंसान थे अभी कुछ दिन पहले ही उन्होंने इंस्टाग्राम पर ट्वीट किया था की उनके मुस्कुराते हुए सपने पूरे होने लगे हैं और यह जिंदगी चल रही है लेकिन 14 जून की सुबह जब उनके घर काम करने वाले नौकर ने उनका दरवाजा खटखटाया और अंदर से कोई आवाज नहीं आई तब पुलिस को सूचना देने पर पता चला कि 2015 में ?20 करोड़ रुपए में खरीदे गए मुंबई के बांद्रा में अपने घर में फांसी लगाकर बॉलीवुड के इस उभरते सुपर स्टार ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी है. सुशांत सिंह शुद्ध देसी रोमांस फिल्म में वाणी कपूर और परिणीति चोपड़ा के साथ आए थे पर उन्होंने सबसे ज्यादा चर्चा एम एस धोनी अनटोल्ड स्टोरी में भारतीय टीम के पूर्व कप्तान एम एस धोनी का किरदार निभा कर बटोरी थी जो सुशांत के करियर की पहली फिल्म थी जिसने सौ करोड़ का कलेक्शन किया था. सुशांत इसके अलावा फिल्म सोनचिड़िया और छिछोरे जैसी फिल्मों में नजर आ चुके थे. इस फिल्म में एक तलाकशुदा व्यक्ति के

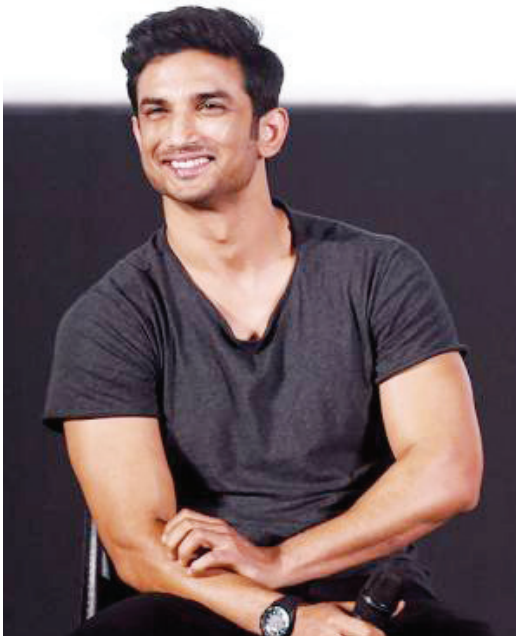

रूप में में अपने बेटे को आत्महत्या किसी समस्या का हर नहीं है जैसा डायलॉग बोलते हुए नजर आए थे फिल्म इस बात पर केंद्रित थी कि सफलता के बाद के प्लान पर तो सब काम करते हैं लेकिन असफलता के बाद के प्लान के बारे में बहुत कम लोग सोच पाते हैं ऐसा सकारात्मक संदेश देने वाले सुशांत अचानक 14 जून को फिल्म इंडस्ट्री को वह अपने चाहने वालों को रोता भी लगता छोड़कर चलए गए. उनकी आखिरी फिल्म केदारनाथ थी जिसमें उन्होंने ने सारा अली खान के साथ अभिनय किया था. एमएस धोनी एनअनटोल्ड स्टोर दो सौ करोड़ का बिजनेस किया था. इसी 10 जून को ही सुशांत सिंह राजपूत की पूर्व मैनेजर दिशा सालियान ने भी एक बहुमंजिला इमारत से कूदकर जान दे दी थी. इस घटना के महज चंद दिनों बाद ही सुशांत सिंह राजपूत ने भी मुंबई स्थित अपने घर में खुदकुशी कर ली. सुशांत ने यह कदम क्यों उठाया इसके कारणों का फिलहाल पता नहीं चल सका है.केवल 7 साल पहले 2013 में अपने फिल्म करियर की शुरुआत करने वाले सुशांत ने भले ही गिनती की फिल्मों में काम किया हो लेकिन उनके अभिनय को उनकी करीब-करीब हर एक फिल्म में सराहना मिली तथा उनके पास काम की भी कोई कमी नहीं थी अपनी पहली फिल्म में राजकुमार राव के साथ काम करने के बाद सुशांत का कैरियर ऊंचाई की तरफ ही था ऐसे में अचानक उनके आत्महत्या करने की थ्योरी गले नहीं उतरती है लेकिन साथ ही साथ पुलिस को उनकी अपार्टमेंट से उनके कुछ प्रिस्क्रिप्शन मिले हैं जिनसे अंदेशा लगाया जा रहा है कि वें इन दिनों फ्रस्ट्रेशन में चल रहे थे तथा अवसाद की दवाई ले रहे थे. अब सच क्या है सुशांत जैसे समर्थ अभिनेता ने आत्महत्या की या उनकी जीवन को लेने के लिए कोई षड्यंत्र किया गया अथवा वह कोरोना अथवा अवसाद या प्रेम में असफलता की वजह से जीवन त्याग बैठे यह तो पुलिस की जांच के बाद ही पता चलेगा लेकिन बॉलीवुड ने अपना एक उभरता हुआ सितारा क्षमता वाला अभिनेता बेसहारा बच्चों की शिक्षा के लिए योगदान देने वाला उदार दानवीर और जीवट वाले युवा को खो दिया है . चार बहनों ने अपना इकलौता भाई और माता-पिता ने अपना इकलौता बेटा खो दिया है यदि सुशांत ने आत्महत्या की है तो यह एक दिल दहला देने वाली त्रासदी है और बार-बार यह पूछा जाएगा की शांत स्वभाव की सुशांत इतने अशांत क्यों हुए कि वह समय असमय ही यह दुनिया छोड़ गए.

एमएस धोनी: द अनटोल्ड स्टोरी

एमएस धोनी = द अनटोल्ड स्टोरी से सुशांत सिंह काफी चर्चा में आए और उनके करियर को एक बार फिर इससे बूस्ट मिला. इस फिल्म में उन्होंने भारतीय क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी का किरदार निभाया था और यह उनकी बायोपिक थी. इस फिल्म को काफी सराहा. ये फिल्म सुशांत सिंह राजपूत के करियर की सबसे बड़ी हिट फिल्म है. इस मूवी के लिए सुशांत को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के फिल्मफेयर अवॉर्ड के लिए नामित किया गया.

केदारनाथ

सारा अली खान के साथ सुशांत साल 2018 में फिल्म केदारनाथ में नजर आए थे. इस फिल्म में सुशांत सिहं एक मुस्लिम युवक मंसूर खान के रूप में नजर आए थे. ये फिल्म केदारनाथ में आई प्राकृतिक आपदा को केंद्र में रखकर बनी है.

छिछोरे

पिछले साल रिलीज हुई उनकी फिल्म छिछोरे पांच दोस्तों की कहानी पर आधारित है. इस फिल्म में सुशांत के साथ श्रद्धा कपूर लीड रोल में नजर आई थीं. फिल्म के गानों को काफी पसंद किया गया था. अभी उनकी एक फिल्म फ्लोर पर भी थी जिसकी शूटिंग कोरोना संक्रमण के चलते स्थगित चल रही थी.

आखिर 15 अगस्त 1947 की आधी रात को ही क्यों मिली थी आजादी

कैसा था पहला स्वतंत्रता दिवस ?

15 अगस्त 1947 का दिन हर भारतीय के लिए एक नए जीवन के समान था... इस दिन की कीमत अपने आप में बहुत ज्यादा थी। हजारों लोगों की कुर्बानियों के बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। तो चलिए हम आपको आजादी की उस रात के बारे में कुछ रोचक जानकारियां देते हैं।

15 अगस्त को ही क्यों मिली थी आजादी ?

साल 1945 में दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटेन में चुनाव हुए। जहां पर लेबर पार्टी ने जीत हासिल की और अपने चुनावी वादे को भी निभाया। लेबर पार्टी ने कहा था कि अगर उनकी सरकार बनती है तो ब्रितानी उपनिवेशवाद को समाप्त कर दिया जाएगा। जिसका मतलब था भारत सहित कई गुलाम मुल्कों को आजाद कर दिया जाएगा। इसके लिए फरवरी 1947 में लॉर्ड माउंटबेटन की नियुक्ति हुई लेकिन फिर माउंटबेटन ने जून 1948 में आजादी देने की बात कही। इसके लिए बकायदा एक प्रस्ताव दिया। जिसका जमकर विरोध हुआ। जिसके बाद माउंटबेटन को एक साल पहले 1947 में आजादी देनी पड़ी। लॉर्ड माउंटबेटन की योजना के तहत 15 अगस्त 1947 को आजादी का ऐलान करने का दिन तय किया गया क्योंकि इसी दिन 1945 में जापान ने आत्मसमर्पण किया था। लॉर्ड माउंटबेटन ने खुद इसके पीछे का तथ्य भी दिया था कि आखिर उन्होंने 15 अगस्त का दिन ही क्यों चुना था।आजादी के जश्न के लिए 15 अगस्त की तारीख तय हो गई मगर ज्योतिषियों ने इसका जमकर विरोध किया क्योंकि ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह दिन अशुभ और अमंगलकारी था। ऐसे में दूसरी तारीखों का चुनाव किया जाने लगा मगर लॉर्ड माउंटबेटन 15 अगस्त की तारीख को नहीं बदलना चाहते थे। ऐसे में ज्योतिषियों बीच का रास्ता निकलते हुए 14-15 तारीख की मध्य रात्रि का समय तय किया। क्योंकि अंग्रेजी समयनुसार 12 बजे के बाद अगला दिन लग जाता है। जबकि भारतीय मान्यता के मुताबिक सूर्योदय के बाहर अगला दिन माना जाता है। ऐसे में आजादी के जश्न के लिए अभिजीत मुहूर्त को चुना गया जो 11 बजकर 51 मिनट से शुरू होकर 12 बजकर 39 मिनट तक रहने वाला था और इसी बीच पंडित जवाहरलाल नेहरू को अपना भाषण भी समाप्त करना था। 15 अगस्त की आधी रात को पंडित नेहरू ने आजादी का ऐतिहासिक भाषण ट्रिस्ट विद डेस्टनी दिया था। पंडित नेहरू ने यह भाषण वायसराज लॉज जो मौजूदा राष्ट्रपति भवन है वहां से दिया था। उस वक्त पंडित नेहरू प्रधानमंत्री नहीं बने थे। 15 अगस्त के दिन लॉर्ड माउंटबेटन अपने ऑफिस में काम किया। दोपहर में पंडित नेहरू ने उन्हें अपने मंत्रिमंडल की सूची सौंपी थी और बाद में इंडिया गेट के पास प्रिंसेज गार्डेन में एक सभा को संबोधित किया था।

महात्मा गांधी नहीं थे मौजूद

जब राजधानी दिल्ली में आजादी का जश्न मनाया जा रहा था उस वक्त महात्मा गांधी दिल्ली से हजारों किमी दूर पश्चिम बंगाल के नोआखली में थे और राज्य में शांति कायम करने का प्रयास कर रहे थे। जानकार बताते हैं कि पंडित नेहरू के ऐतिहासिक भाषण को पूरे देश ने सुना था मगर गांधी जी नहीं सुन पाए थे। पंडित नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल ने महात्मा गांधी को पत्र लिखकर बताया था कि 15 अगस्त को देश का पहला स्वाधीनता दिवस मनाया जाएगा। आप राष्ट्रपिता हैं। इसमें शामिल होकर अपना आशीर्वाद दें। जिसके बाद महात्मा गांधी ने भी जवाब में पत्र लिखते हुए कहा था कि जब बंगाल में हिन्दू-मुस्लिम एक दूसरे की जान ले रहे हैं, ऐसे में मैं जश्न मनाने के लिए कैसे आ सकता हूं। मैं दंगा रोकने के लिए अपनी जान दे दूंगा।

16 अगस्त को लाल किले में फहराया गया था झंडा

हर साल प्रधानमंत्री स्वतंत्रता दिवस के मौके पर

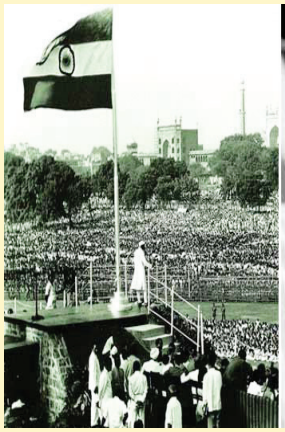

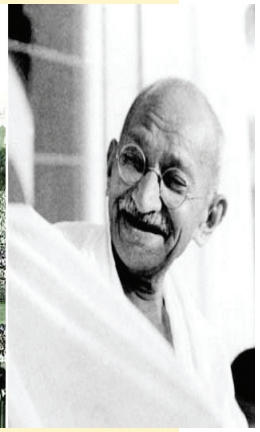

लाल किले से झंडा फहराते हैं लेकिन 15 अगस्त 1947 के दिन झंडा नहीं फहराया गया था। लोकसभा सचिवालय के एक शोध पत्र के मुताबिक, पंडित नेहरू ने 16 अगस्त 1947 को लाल किले से झंडा फहराया था। इतना ही नहीं 15 अगस्त को भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा रेखा का निर्धारण भी नहीं हुआ था। इसका फैसला 17 अगस्त को रेडक्लिफ लाइन की घोषणा से हुआ था। देश भले ही 1947 को आजाद हो गया हो लेकिन हिन्दुस्तान के पास अपना खुद का राष्ट्रगान नहीं था। हालांकि, रवींद्रनाथ टैगोर ने 1911 में ही जन गण मन को लिख दिया था मगर 1950 में वह राष्ट्रगान बन पाया था।

भोले नाथ के परम भक्त संत शिरोमणि स्वामी केशवानन्द जी महाराज

भारतवर्ष सदैव से महान सन्तो, योगियों की भूमि रहा है। जिन्होंने अपने तेजस्वी जीवन का सर्वस्व मानव समाज का कल्याण करने के लिए समर्पित किया है। ऐसे ही महान आत्मज्ञानी परमहंस व्यक्तित्व के धनी संत शिरोमणि स्वामी केशवानन्द जी महाराज, जो भगवान भोले नाथ के परम भक्त थे, उनके बारे में आपको बताते हैं जो आज भी लोगों के अटूट श्रद्धा एवम् विश्वास के प्रतीक हैं। स्वामी केशवानन्द जी महाराज का जन्म भिण्ड शहर से सटे हुए ग्राम लावन में इति वैशाख, शुक्ल पक्ष पंचमी, दिन मंगलवार, विक्रम संवत 1944 को किसान पिता श्री गोविंद सिंह लोधी और माता बिठुलाबाई की संतान के रूप में हुआ था। इनके बचपन का नाम जगन्नाथ था। बचपन में ही पिता का देहांत हो जाने के कारण बहुत ही कम आयु में जगन्नाथ जी का विवाह कर दिया गया लेकिन समाज में चारो ओर फैले धार्मिक अन्धविश्वास, कर्मकांड , पाखंड और कुरीतियों को देख जगन्नाथ जी का मन दुःख से विचलित हो गया। उन्हें ज्ञात हुआ कि हमारा समाज इन कुरीतियों, पाखंड और अन्धविश्वास के कारण बहुत पीछे चला जा रहा है।

पवन प्रशांत कुमार
भिण्ड मध्य प्रदेश

समाज की प्रगति नहीं हो पा रही है। इसलिए उन्होंने अपने मानव समाज को मानसिक गुलामी से स्वतंत्रता दिलाने एवं समाज के कल्याण के लिए अपना सुन्दर वैवाहिक जीवन को त्याग कर मैनपुरी के स्वामी विरजानन्द से दीक्षा लेकर मात्र 17 वर्ष की आयु में सन्यासी बन गए। दीक्षा ग्रहण करने के बाद स्वामी जी आध्यात्मिकता की खोज में देश भ्रमण पर निकल गये। देश में मौजूद विभिन्न धर्मों के तीर्थ स्थलों की यात्राएं कीं , सभी धर्मों का गहन अध्ययन किया, अनेक पंथों , सम्प्रदायों के गुरुओं से ज्ञान अर्जित किया। देश में मौजूद तमाम विचारधाराओं को जाना, उन्हें समझा। स्वामी जी कहते थे हमें सभी धर्मों का, सभी जातियों का सम्मान करना चाहिए।देश भ्रमण के दौरान स्वामी जी ने जातिवाद, छुआछूत, धार्मिक पाखंड, अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतियों को देखा। स्वामी जी ने इस दौरान कई विदेश यात्राएं भी की। स्वामी जी कभी किसी भी भक्त की घर ङ्क गृहस्थी में कदम नहीं रखते थे। वे खेत ङ्क खलिहानों पर बने ट्यूब् वेल आदि पर ही ठहरते थे द्य

धार्मिक पाखंड और अन्धविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों का विरोध –

स्वामी जी भगवान की भक्ति के लिए मन्दिर जाने या किसी तीर्थ स्थल पर दर ङ्क दर भटकने से परहेज करते थे। अपनी आत्मा को कष्ट देकर परमात्मा को प्रसन्न करना उन्हें हास्यास्पद लगता था। वह इसी पाखंड और आडंबरों का विरोध और इन्हें खत्म करने के लिए ही तो संघर्ष करते थे। स्वामी जी लोगों को समझाते थे कि भगवान आपकी भक्ति में होते हैं ,किसी मन्दिर , आडंबर में नहीं । आत्मा ही परमात्मा होती है। तो फिर आप अपने शरीर अथवा आत्मा को कष्ट देकर ईश्वर की भक्ति कैसे कर सकते हैं। स्वामी जी कहते थे स्वस्थ रहो और मन में उच्च विचार लाओ । आज भी ऐसे कई लोग हैं जो वास्तविक रूप से स्वामी जी के दर्शन पर चल रहे हैं, वे अपने जीवन में हजारों विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी निरंतर प्रगति कर रहे हैं। स्वामी जी समाज में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों के घोर विरोधी थे । जैसे बाल ङ्क विवाह , दहेज प्रथा, फिजूल खर्ची को समाज का शत्रु मानते थे । वे कई बार देखते थे कि घर में बच्चों के लिए ढंग से भोजन नहीं है, कपड़े नहीं है , शिक्षा की व्यवस्था नहीं है और लोग तीर्थयात्रा पर जाते हैं, धार्मिक आयोजन करते हैं। मानव समाज में जुआ, शराब की लत और तेरहवीं भोज देखकर वह बहुत दुःखी हो जाते थे । स्वामी जी कहते थे कि तेरहवीं करना और खाना दोनों महापाप होता है। तेरहवीं गिद्धों का भोज है। स्वामी जी ने सदियों से चले आ रहे रूढ़िवाद को समाज से मिटाने पर बल दिया। विधवा विवाह पर जोर दिया , धार्मिक अन्धविश्वास को खत्म करने का प्रयास किया।

शिक्षा को अत्यधिक महत्व –

स्वामी जी शिक्षा को बहुत महत्व देते थे। स्वामी जी हमेशा कहते कि शिक्षा से समाज का उत्थान हो सकता है। महिलाओं को शिक्षित करने के भी पक्ष धर थे।

हमेशा भ्रमण करते हुए समाज को एकजुट करने का प्रयास करते थे। मानव समाज किस तरह से आगे बढ़ सकता है? इस पर गहन विचार करते थे और लोगों को मार्ग दर्शित करते थे। स्वामी जी कहते थे कि जो कार्य समाज की प्रगति में बाधक है उस कार्य को कतई मत करिए।

स्वामी जी कहते थे कि जो धन आप धार्मिक कर्म कांड, पाखंड, आडंबर और वैवाहिक समारोह में फिजूल खर्च करते हैं उस धन को अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करिए, उनके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करिए। उन्हें व्यापारी बनाइए, अफसर बनाइए। समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाइए। ताकि हमारा समाज आगे बढ़ सके।

स्वामी जी का आत्मज्ञान –

स्वामी जी ने अपने आत्मज्ञान से सबसे अधिक जल संरक्षण के लिए संघर्ष किया। उन्होंने जल की समस्या को लेकर और उसके समाधान के लिए गहन चिंतन किया। वह अपने आत्म ज्ञान से किस खेत में कुआँ खोदना सही रहेगा, कहाँ ज्यादा पानी है, सब बता दिया करते थे। स्वामी जी के साथ यात्रा में साथ चलने वाले किसी व्यक्ति को अगर भूख लगती थी तो स्वामी जी अपने कुर्ते से दो ङ्क चार किशमिश अथवा इलायची निकाल कर खाने को दे देते थे। मात्र दो ङ्क चार किशमिश अथवा इलायची से ही लोग तृप्त हो जाया करते थे। कभी ङ्क कभी स्वामी जी अपने आसपास खेल रहे बच्चों को अपने कुर्ते की जेब से बर्फी अथवा पेड़ा निकाल कर दे देते थे। उन्हें खाकर तुरंत बच्चों की भूख मिट जाती थी।

स्वामी जी ने जब से वैराग्य अपना लिया था तब से उन्होंने रुपये - पैसों को हाथ भी नहीं लगाया था। स्वामी जी सबसे बड़ा धन ज्ञान और मानसिक स्वतंत्रता को मानते थे। उन्हें जब कभी जमीन पर कोई सिक्का या रुपया पड़ा दिख जाता था तो वह वहीं आसपास खेल रहे बच्चों को इशारा कर देते थे। फिर वह बच्चे खुशी - खुशी उस सिक्के अथवा रुपये को उठा लेते थे।स्वामी जी का ज्यादातर समय उत्तर प्रदेश के ग्रामों एवं कई देशों के भ्रमण में व्यतीत हुआ। उसके बाद वह मध्य प्रदेश के भिण्ड के निकट ग्राम रजपुरा को ही अपना आश्रय स्थल बना लिया। इसे अपना परम सौभाग्य मानते हुए समाज के लोगों ने एक मत होकर ग्राम रजपुरा में स्वामी जी जहाँ ठहरते थे, विश्राम करते थे। उसी स्थान पर उनकी मूर्ति स्थापित की और एक छोटा सा मन्दिर बनवाया। उसके बाद स्वामी जी 18 /08 /1988. को इस अनंत ब्रह्मांड में

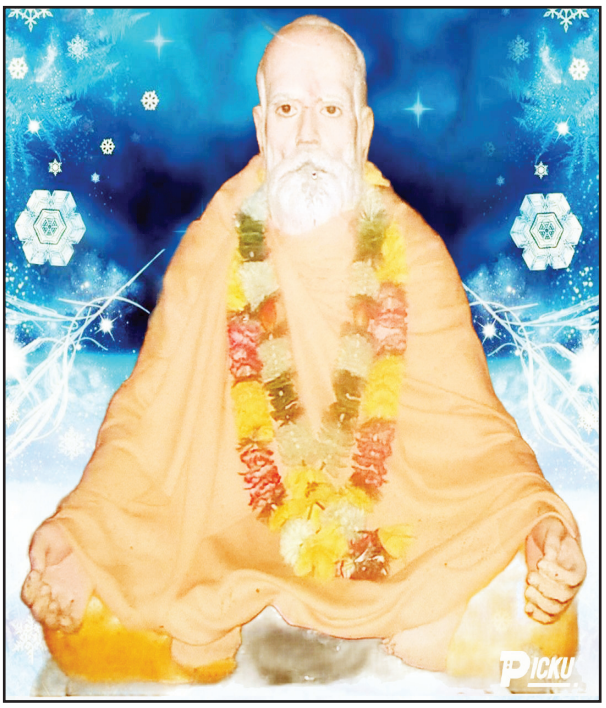

विलीन हो गए ढ्ढ मगर वह अपने संदेशों के माध्यम से हम सबके बीच हमेशा उपस्थित रहते हैं वह छोटा सा मंदिर और स्वामी जी का समाधि स्थल लोधी समाज के आपसी जनसहयोग और आस्था ने आज भिण्ड जिले का सबसे ऊँचा मन्दिर बना दिया है। भक्त से भगवान बने स्वामी केश्वानन्द जी का यह मन्दिर 108 फीट ऊँचा है। बहुत ही सुन्दर और आकर्षक आकृति में डिजाइन किए गये इस मन्दिर में चारों कोनों पर चार मीनारें और एक मीनार मध्य में है जो सबसे ऊंची है। गोल - गोल घूमते हुए जीने शिखर तक जाते हैं। वहाँ से फिर चारों ओर देखना बड़ा ही रोमांचक लगता है।

प्रतिवर्ष मेला का आयोजन: इस मन्दिर पर हर वर्ष महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर विशाल मेला लगता है। हजारो श्रद्धालु उमड़ते हैं। स्वामी जी के दर्शन करते हैं। आम जन के साथ ङ्क साथ समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति, राजनेता स्वामी जी के दरबार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। विभिन्न सामाजिक विषयों और कार्यों पर चर्चा होती है। विवाह से पहले के कार्यक्रम हेतु दोनों पक्ष भी एकत्रित होते हैं। इस दिन सैकड़ों श्रद्धालु गंगा जी से कांवर भरकर गंगा जल स्वामी जी को अर्पण करते हैं। यह पूरे विश्व में एकमात्र उदाहरण है कि जहाँ गंगा जल भगवान पर नहीं बल्कि उनके भक्त को अर्पित किया जाता है। कहा जाता है कि पहली बार सैकड़ों कांवरियों ने जब गंगा जल स्वामी जी को चढ़ाया था तब गंगा जल की एक बूँद भी स्वामी जी के केशों से बाहर नहीं गिरी थी। एक सत्य चमत्कार यह भी है कि मेले के आयोजन से ग्रामीण मंदिर के आसपास के खेतों की बिना पकी फसल काटकर रख देते हैं और वह उतना ही दाना देती है जितना कि अन्य किसानो की फसल से मिलता है ढ्ढ स्वामी केशवानन्द जी महाराज परमहंस संत थे.. उन्होंने जीवनभर मानवता की सेवा की और लोगों को मानवता के संदेश दिए द्य हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे प्रकृतिपुत्र संत चंबल ग्वालियर की वीर भूमि पर अवतरित हुए थे।

ग्रामीण को आत्मनिर्भर बनाने जिला प्रशासन की पहल

20 एकड़ बंजर भूमि मटीर सृष्टि योजना के तहत विकसित होगी

अमर राय, ब्यूरो

पश्चिम बर्दवान जिला प्रशासन अंडाल ब्लॉक में 20 एकड़ जमीन पर एक निजी कंपनी केवेटर के सहयोग से सूखे फल नारियल, खजूर समेत केला पपीता और अन्य फलों की वाणिज्यिक रूप से खेती करने की तैयारी कर रहे हैं. इसके साथ ही क्षेत्र के ग्रामीण को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वाणिजयक रूप से फलों की खेती शुरू करने के अलावा मतस्य पालन और पशु पालन को भी बढ़ावा दिया जाएगा. निजी कंपनी केवेटर करीब 20 एकड़ बंजर भूमि को मटीर सृष्टि योजना के तहत विकसित करने में अहम भूमिका निभाएगी. अंडाल के वीडियो ऋतिक हाजरा के मुताबिक 20 एकड़ जमीन पर फल समेत वाणिज्यक खेती होगी. अरब देशों के उच्च प्रजाति के 500 खजूर पेड़ और केरल के उच्च गुणवता वाले 4000 नारियल वृक्ष लगाए जाएंगे. इसके अतिरिक्त 4000 केले के पौधे, 600 कठहल के वृक्ष और 3000 नीम के पेड़ लगेंगे. इसके साथ ही पपीता अमरूद के बागान भी लगाए जाएंगे. प्रशासनिक अधिकारी के मुताबिक, अंडाल एयरपोर्ट से विदेशों में कृषि उत्पादों को नियरत करने के उद्देश्य से या प्रोजेक्ट तैयार किया गया. निजी संस्था के अंडल एयरपोर्ट जब वाणिज्यिक रूप से चालू हो जाएगा, पंडाल में 20 एकड़ में पैदा होने वाले कृषि उत्पादों को यहां से विदेश भेजना आसान हो जाएगा, जिससे जहां स्थानीय ग्रामीणों को रोजगार मिलेगा तो वहीं उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी।

इनका कहना है

माटीर सृष्टि योजना के तहत जिले में काफी हद तक बंजर जमीन की पहचान कर ली गई है और इस योजना के अंतर्गत कई क्षेत्र में काम भी शुरू किया जा चुका है. इस योजना को गति देने के लिए जहां किसान सहकारिता समूह और महिला स्वय सहायता समूह को शामिल किये गया है, तो वहीं निजी क्षेत्र की कंपनियां का सहयोग भी अपेक्षित है.

पूर्णेन्दु माझी, डीएम पश्चिम बर्दवान

माटीर सृष्टि योजना हमारी सरकार का अहम प्रोजेक्ट है. इसका अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया जाये, ताकि स्थानीय लोगों को उनके पास ही में रोजगार मिल सके और उनका जीवन स्तर बेहतर बन सके.

जितेंद्र तिवारी, मेयर आसनसोल

पश्चिम बंगाल सरकार की माटीर सृष्टि योजना से जिले मैं काफी लोगों को रोजगार मिल सकेगा, माटीर सृष्टि योजना के तहत बंजर पड़ी जमीनों पर फल, सब्जी, पशुपालन, मछली पालन आदि चीजें का उत्पादन हो सकेगा. यह पश्चिम बंगाल सरकार की एक प्रमुख योजना है

विश्वनाथ पड़ियाल, विधायक दुर्गापुर

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण योजना है. इस योजना के तहत बंजर पड़ी जमीन को डेवलप करके उस जमीन पर मछली

पालन, वह फल सब्जी या बाजार में जिन चीजों की ज्यादा जरूरत पड़ती है. उन चीजों का भी यहां पर उत्पादन किया जा सकता है. इसके अलावा सौंदर्यीकरण भी किया जा सकता है. इससे जिले के लोगों को रोजगार मिल सकेगा

धृति बनर्जी, councillor ward number 3 दुर्गापुर

मटीर सृष्टि योजना को लेकर जिला शासक का यह प्रयास काफी सराहनीय है. इससे जहां लोगों को रोजगार मिल रहा है तो वहीं बंजर जमीन पर फूल खिल रहे हैं.

पंकज श्रीवास्तव, समाजसेवी

यह योजना हमारी सरकार की महत्वकांक्षी योजना है. माटीर सृष्टि योजना को लेकर जिला शासक का यह प्रयास काफी सराहनीय है. मैं धन्यवाद देना चाहता हूं सभी अधिकारियों को जो इस योजना को सफल बनाने में अपना पूरा प्रयास कर रहे हैं.

विष्णुदेव नोनिया, टीएमसी, पश्चिम बर्दवान जिला परिषद सदस्य

बर्दवान के बढ़ते कदम माटीर सृष्टि

पश्चिम बंगाल सरकार की माटीर सृष्टि योजना पशचमांचल के श्रमिकों के लिए वरदान साबित हो रही है. इससे जहां कोरोना काल में बेरोजगार हुए हजारों श्रमिकों रोजगार मिल रहा है तो वहीं क्षेत्र के विकास में यह योजना मील का पत्थर साबित हो रही है. माटीर सृष्टि योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा बंजर पड़ी सरकारी जमीन को विभिन्न कामों जैसे बागवानी, मतस्य पालन और पशुपालन आदि के लिए विकसित कर लोगों को कई तरह के रोजगार दिये जा रहे हैं. अब से कुछ समय पहले तक इस बंजर जमीन पर ना तो कोई प्रकृतिक रूप में पैदावार होती थी और ना ही किसानों उसे पट्टे पर लेते. गौरतलब है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 13 द्वड्ड4 2020 को पश्चिम बंगाल के ग्रामीण इलाकों में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए मटीर सृष्टि योजना की घोषित की थी. इस योजना के तहत राज्य में पश्चिमांचल के नाम से मशहूर 6 जिलों पश्चिम बर्दवान, वीरभूम, पुरुलिया बांकुरा, झाड़ग्राम और पश्चिम मिदनापुर की कम से कम 50000 एकड़ बंजर पड़ी भूमि को विकसित करके उसमें बागवानी और कृषि आधारित काम किए जाने है. माटीर सृष्टि योजना को जिला शासक के द्वारा मूर्त रूप दिया जा रहा है. इस परियाजना मे किसान सहकारिता समिति और स्वयं सहायता समूह की भी भागीदारी है. ममता सरकार को उम्मीद है कि इस योजना से पश्चिमअंचल के गरीब ढाई लाख किसान व खेतिहर मजदूर लाभावित होंगे. ममता ने इसे कृषि क्षेत्र में नवजागरण पैदा करने वाला जय बांग्ला प्रोजेक्ट करार दिया. पुष्पांजलि टुडे के पश्चिम बर्दवान के ब्यूरो चीफ अमन राय ने जब इस योजना का जमीनी स्तर पर जायजा लिया, तो उन्होंने पाया कि जिले के अंडाल के काजोरा पंचायत, काकसा के अमलाजोरा पंचायत, जमुरिया के बहादुरपुर पंचायत के घसल गांव, चाकदोला समेत कई बंजर क्षेत्रों में काम शुरू हो चुका है और जिला शासक से लेकर बीडियो तक मौके पर जाकर परियोजना के काम का जायजा ले रहे हैं. पश्चिम बर्दवान जिले में जब इस योजना की शुरुआत की गई तो जिले के डीएम पुर्णेन्दु माजी ने इसे अपनी उच्च प्राथमिकता में रखा है. यह वह समय था जब करोना महामारी के चलते उद्योग धंधे चौपट हो गए थे और हजारों श्रमिक बेरोजगार हो गए थे. जिला शासक ने संबंधित विभागों के माध्यम से सबसे पहले जिले के विभिन्न क्षेत्रों में बंजर पड़ी भूमि की पहचान करवाई और फिर उसे विकसित करने के लिए युद्ध स्तर पर काम शुरू करवाया.

पुलिस ने किया शातिर गैंग का पर्दाफाश

आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नर सुकेश कुमार जैन की कार्यप्रणाली से नगर में अपराधों का ग्राफ में कमी

पकड़े गए अपराधियों से पूछताछ की जाएगी और इससे जुड़े जो भी लोग होंगे उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा और कार्रवाई की जाएगी

सुकेश कुमार जैन पुलिस कमिश्नर

अमन राय, ब्यूरो

आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नर सुकेश कुमार जैन है.क्षेत्र में जब-जब अपराधियों ने अपराध करने का प्रयास किया है तब तब उन्हें मुंख की खानी पड़ी है जिले में पुलिस पूरी तरह सक्रिय देखी जा रही है ना केवल लोगों की सुरक्षा साथ ही सामाजिक कार्यों में भी पुलिस बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही है चाहे वह करोना महामारी की बात हो या फिर रक्तदान पुलिस अपने सामाजिक दायित्वों का पूरी तरह से निर्वहन कर रही है पुलिस की कामयाबी की बात करें तो क्षेत्र में जब भी कोई अपराध करने का प्रयास अपराधियों ने किया है पुलिस ने धर दबोचा है ताजा मामला सामने आया है गाजा तस्कर के एक बड़े गिरोह का पर्दाफाश किया है दरअसल जब पुलिस को क्षेत्र में गांजा तस्कर के गिरोह के होने की सूचना मिली पुलिस पूरी तरह चौकन्ना हो गई पुलिस ने नाका चेकिंग लगातार शुरू कर दिया था फिर क्या था देखते ही देखते पहले तो जमुड़िया थाना पुलिस ने अपनी सक्रियता दिखाते हुए एक करोड़ नगद, 2.5 क्विंटल गांजा के साथ 5 अपराधियों को गिरफ्तार किया गया. इसमें जमुड़िया ग्राम के कुआं मोड़ निवासी सनोज सिंह, अनिल कुमार सिंह, विद्युत तिवारी, जामताड़ा जिले के नाला स्थित गुरुद्वारा निवासी गणेश माजी तथा पांडेश्वर स्थित भूरी निवासी काजी अशरफुल हक उर्फ कालिया शामिल है. जांच अधिकारी ने गिरोह के सदस्य को पकड़ने, छिपे अवैध गांजा के बरामदगी सहित उक्त मामले पर अपने विशेष छानबीन करने का हवाला देते हुए आरोपियों में से अनिल कुमार सिंह तथा गणेश माजी को 14 दिनों की रिमांड पर लेने की अर्जी अदालत में सौंपी. दलीलों को सुनने के उपरांत अदालत ने आरोपियों की जमानत अर्जी रद्द कर उन्हें 7 दिनों की रिमांड पर पुलिस को सौंपा दिया. जबकि बाकी तीन आरोपियों को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया. इसके बाद पुलिस को और कुछ गिरोह के लोग एवं गांजा तस्कर क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं इसकी भनक लग गई आसनसोल नॉर्थ थाना के प्रभारी शांतनु अधिकारी ने तत्परता दिखाते हुए एक टीम गठित कर इलाके में ड्यूटी लगा दी देखते ही देखते वह गिरोह भी पुलिस के हत्थे चढ़ गए थाना प्रभारी शांतनु अधिकारी ने कन्यापुर पुलिस फाड़ी तथा जहांगीरी मोहल्ला पुलिस फाड़ी ने गुप्त सूचना के आधार पर जुबली बायपास मोड़ के पास एक छोटा हाथी ट्रक में गांजा लगने के वक्त छापामारी कर 330 किलो से ज्यादा गांजा के साथ 5 लोगों को गिरफ्तार किया. जबकि चालक व एक तस्कर भागने में कामयाब हो गये. दोनों फरार हुए आरोपियों को खोज में पुलिस लगी हुई है. डीसीपी(सेंट्रल) सहायक दास ने कहा कि गांजा तस्करों में पश्चिम बर्दवान जिले के तीन, यूपी के 1 तथा 24 परगना का एक आरोपी को गिरफ्तार कर आसनसोल अदालत भेजा गया है. आरोपियों में मुख्य तीन को 10 दिनों की रिमांड की मांग की गई है. उन्होंने कहा कि बड़े वाहन से छोटे वाहन में गांजा लादने के दौरान पुलिस ने छापामारी कर गांजा सहित पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया जबकि दो आरोपी फरार हो गये वहीं तस्करों के दो वाहनों को जप्त किया गया है. पुलिस जमुड़िया गांजा कांड से इसे जोड़कर देख रही है. गिरफ्तार आरोपियों में रेलपार चांदमारी के राइफल क्लब के पास रहने वाला राहुल यादव, उत्तर 24 परगना गौशाला के समीप रहने वाला लखन लाल साहू, यूपी बलिया का मनोज यादव, कजोरा बाजार शिव मंदिर के पास अंडाल का रंजीत कर्मकार, चीनाकुंडी नोनिया बस्ती का अनिल नोनिया आदि शामिल है. यही नहीं जामुड़िया पुलिस ने एक वाहन चोर पिंटू बनर्जी को भी गिरफ्तार कर जब उससे पूछताछ की गई तो एक के बाद एक नई चोरी की घटनाएं सामने आई. एसीपी सेंट्रल 2 के तथागत पांडे ने बताया कि व्यापक छापेमारी अभियान चलाया गया जिसमें 15 मोटर साइकिल बरामद की गई. पिंटू बनर्जी नामक एक आरोपी को पुलिस ने बाइक चोरी मामले में गिरफ्तार किया है. उन्होंने बताया कि पिंटू बनर्जी एक शातिर अपराधी है वह जब भी किसी मोटरसाइकिल की चोरी करता है तो उसका नंबर प्लेट बदल देता था. वहीं कई मोटरसाइकिलओ में वह चार पहिया वाहन का भी नंबर प्लेट लगा देता था. उसके बाद ग्राहकों को सस्ते दाम में वह मोटरसाइकिल बेच देता था. पुलिस इसके गैंग के बाकी साथियों को तलाश रही है ताकि उन्हें भी उनके गुनाहों की सजा दिलाई जा सके. पुलिस कि इस कामयाबी से जहां लोगों मैं पुलिस के प्रति वाहवाही हो रही है वहीं पुलिस के प्रति विश्वास भी बढ़ रहा है।

पुलिस आगे भी तत्परता के साथ काम करती रहेगी: मेयर

पुलिस की सक्रियता का प्रमाण है कि पुलिस ने इतने बड़े गिरोह को पकड़ा है मैं सभी पुलिस अधिकारियों को धन्यवाद देता हूं और हमें उम्मीद है पुलिस आगे भी तत्परता के साथ काम करती रहेगी

जितेंद्र तिवारी मेयर, आसनसोल

पुलिस और सेना की संयुक्त टीम ने लश्कर-ए-तैयबा के तीन मददगारों को किया गिरफ्तार

पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

रियासी। जम्मु कश्मीर के रियासी में सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस और सेना की संयुक्त टीम ने लश्कर-ए-तैयबा के तीन मददगारों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए

आतंकियों के मददगारों से पूछताछ में सनसनीखेज खुलासा हुआ है।रियासी जिले की एसएसपी रश्मि वजीर ने कहा कि आतंकियों के तीन मददगारों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें से एक सरकारी अध्यापक, एक दुकानदार और एक श्रमिक है। ये सभी आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े हैं। इनका हैंडलर मोहम्मद कासिम है। ये सभी पिछले पांच साल से इलाके में सक्रिय थे और कासिम के संपर्क में थे। साथ ही पूर्व आतंकियों के परिवारों को मदद कर रहे थे।उन्होंने बताया कि पकड़े गए आतंकियों के मददगारों ने कबूल किया है कि सीमा पार बैठे इनके आका रियासी जिले में आतंकवाद को एक बार फिर से जिंदा करने की साजिश रहे हैं। इनके पास से रुपये व अन्य सामग्री बरामद हुई है। आतंकियों के ये मददगार सोशल मीडिया के जरिए अपने आकाओं के संपर्क में थे। पुलिस का कहना है कि पूछताछ अभी जारी है, इस मामले में कुछ और गिरफ्तारियां भी हो सकती हैं। बता दें कि सुरक्षाबलों को इलाके में आतंकियों के मददगारों की मौजूदगी की सूचना मिली थी। इसी सूचना के आधार पर सुरक्षाबलों ने अभियान चलाया और आतंकियों के तीन मददगारों को गिरफ्तार करने में सफलता मिली

कानाराम सीरवी हत्यारों को कडी से कडी सजा देने की प्रसाशन से गुहार लगाई

नारायणलाल सैणचा

मुंबई। सिरवी समाज सेवा संस्था करंजाडे संगठन समाज बंधु कानाराम सीरवी(सोजत) की हुई खुलेआम निर्मम हत्या के विरुद्ध में सीरवी समाज सामाजिक

संस्था करंजाड़े(पनवेल) उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है और सभी सीरवी बन्धुओ से गुजारीस करता है की यह हत्यारे को फासी होनी चाहिए तो ही स्वरगिय कानाराम को न्याय मिलेगा अगर प्रशासन आगे कार्यवाही नही करेगा तो सम्पुर्ण सीरवी समाज ऊग्र आन्दोलन करेगी हम सब युवा बन्धु व सीरवी समाज यही चाहते हैं कि हत्यारा को फांसी हो तब कानाराम को इंसाफ मिलेगा सिरवी समाज सेवा संस्था करंजाडे इस हत्याकांड का पुरजोर से विरोध करता है व न्याय की मांग करता है कि प्रशासन व सरकार से निवेदन की आरोपियो को जल्द से जल्द और कड़ी से कड़ी सजा होकरजाड़े सीरवी बन्धु तेजाराम जी विनोद सुनिल जी आशाराम पुकराज रमेश देवाराम शोगाराम व अन्य सभी बन्धुओ ने यह हत्याकांड का पुरे जोर विरोध प्रकट किया व प्रशासन व सरकार से हात जोड कर विन्नती है की हत्यारे को कडक से कडक साजा मिले ।

हादसा होने के बाद भी नहीं खुली प्रशासन की नींद

पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

सुंदरबनी। जिला राजौरी के उपजिला सुंदरबनी में सड़कों की हालत बद से बदतर होती जा रही है सुंदरबनी से तरियाट जाने बाली रोड पहले भी हादसे का शिकार हो चुकी है गांव सालेरी के स्थानीय निवासियों का कहना है कि जहां रोड की हालत इतनी बदतर हो चुकी है कि पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। स्थानीय लोगों ने कहा कि रोड का काम समाप्त करने में कोई अवधि होती है लेकिन 2 साल से यह रोड अभी बनकर समाप्त नहीं हो सकी। स्थानीय निवासी धर्मपाल शर्मा का कहना है कि कुछ दिन पहले यहां पर कार फिसल कर नाले में जा गिरी थी जिसमें 2 लोग बुरी हालत से गंभीर हो गए थे। स्थानीय लोगों ने कहा कि इतना बड़ा हादसा होने के बाद भी जहां विभाग का कोई भी अधिकारी सुध लेने नहीं आया। स्थानीय निवासी अंकुश शर्मा, संजय शर्मा का कहना है कि सालेरी से सुंदरबानी लगभग 8 से 10 किलोमीटर की दूरी पर है लेकिन सुंदरबनी गाड़ी पहुंचने के लिए लगभग 1 घंटे का समय लगता है पंडित देवराज शर्मा ने कहा कि जे रोड सुंदरबनी को शिवखोड़ी तक जोड़ती है और इसी रोड से बहुत सारे शिव भक्त शिव दर्शन

के लिए जाते हैं स्थानीय लोगों ने कहा जो रोड पर डंगे और नालियां बनी हुई थी वह भी कुछ गिर चुके हैं स्थानीय लोगों ने प्रशासन से गुहार लगाते हुए कहा की रोड का काम जल्द से जल्द शुरू किया जाए ताकि जे रोड गाड़ियों के चलने लायक बने और इस रोड से जुड़े गांव वासियों को इसका लाभ प्राप्त हो सके।

नोजोटो ऐप्प कलाकारों को बना रहा आत्मनिर्भर और आर्थिक तौर पर सक्षम

(अर्पित गुप्ता)

कोरोना काल में जब देश में हर कोई जीवन के लिए जूझ रहा है ऐसे में लाखों प्रतिभावान कलाकार की अपनी आजीविका चलने की जद्दो जेहद कर रहे हैं।ऐसे में भारत के स्वदेशी कंटेंट ऐप्प नोजोटो ने बीते दिनों आर्टिस्ट मॉनेटाइज़शन लांच करके लाखों को कलाकारों को अपनी प्रतिभा के माध्यम से पैसे कमाने का मौका देकर एक नयी उम्मीद जगाई है।नोजोटो ऐप्प पर हर दिन अलग अलग कला क्षेत्रों के कलाकारों की लाइव पर्फॉर्मन्सेस और पेड शोज आयोजित किये जा रहे हैं।जिनसे ना केवल कलाकार को नयी दिशा मिली है बल्कि श्रोतागण भी इसका लुत्फ़ उठा रहे हैं और उन्हें एंटरटेनमेंट का नया जरिया मिल गया है।पुष्पांजली टुडे समूह के उपसम्पादक अर्पित गुप्ता से नोजोटो के आर्टिस्ट मॉनीटाइज़शन टीम के सदस्य नीर पुष्पेंद्र सिंह से हुई बातचीत में उन्होंने बताया कि भारत की जमीन पर लाखों प्रतिभावान कलाकार हैं जो किसी ना किसी मोड़ पर आर्थिक तंगी या नियमित आय ना होने की वजह से कला का दामन छोड़ देते हैं।बस ऐसे ही अनेको कलाकारों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए नोजोटो टीम ने चार महीने की कड़ी मेहनत के बाद नोजोटो लाइव फीचर लॉन्च किया है।नीर आगे बताते हैं की देश के किसी भी शहर में रहने वाला प्रतिभावान कलाकार नोजोटो पार्टनर प्रोग्राम से जुड़कर लाइव शोज के माध्यम से पैसे कमा सकता है बल्कि अपने हुनर को लाखों लोगों तक पंहुचा सकता है।इससे जुड़ने के लिए कोई भी कलाकार अपना परिचय, विधा, पुरानी पर्फॉर्मन्सेस की वीडियो लिंक्स,सोशल मीडिया प्रोफाइल्स, कांटेक्ट नंबर और शो का कांसेप्ट या आईडिया लिखकर नोजोटो टीम को creator@nojoto.com पर मेल कर सकते हैं।जिसके आधार पर नोजोटो टीम कलाकार को नोजोटो पार्टनर प्रोग्राम का हिस्सा बनाने के लिए संपर्क कर लेगी।इसी के साथ उपसम्पादक अर्पित गुप्ता से बातचीत के दौरान नीर ने पुष्पांजली टुडे समूह की भी जमकर तारीफ की,उन्होंने कहा कि प्रतिभाओ को उभारने में पुष्पांजली टुडे समूह भी लगातार प्रयास कर रहा है व समय समय पर नोजोटो की खबरों को प्रकाशित कर दुनिया मे दिखा रहा है इसी के साथ उन्होंने उपसम्पादक अर्पित गुप्ता का आभार व्यक्त किया।

स्वतंत्रता दिवस एवं पुष्पांजली टुडे पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को
हार्दिक शुभकामनाएं
उदय सिंह परमार
सिविल लाइन दतिया

स्वतंत्रता दिवस एवं पुष्पांजली टुडे पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को
हार्दिक शुभकामनाएं
डॉक्टर दिनेश कुमार गुप्ता
सीता सागर के पास दतिया

स्वतंत्रता दिवस एवं पुष्पांजली टुडे पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को
हार्दिक शुभकामनाएं
शारदा प्रसाद तिवारी
आबकारी कंट्रोल रूम दतिया

स्वतंत्रता दिवस एवं पुष्पांजली टुडे पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को
हार्दिक शुभकामनाएं
होतम सिंह बघेल
ट्रैफिक स्पेक्टर पुलिस लाइन दतिया

स्वतंत्रता दिवस एवं पुष्पांजली टुडे पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को
हार्दिक शुभकामनाएं
योगेंद्र दांगी
टीआई

स्वतंत्रता दिवस एवं पुष्पांजली टुडे पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को
हार्दिक शुभकामनाएं
राजेश कुशवाहा
रेलवे स्टेशन दिनारा

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती लक्ष्मी सिरवी
ढोला. भाजपा जिला मंत्री पाली

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती लीला देवी सीरवी
सरपंच ग्राम पंचायत वडेर वास पाली

खामोश हो गई दमदार आवाज

कोरोना संक्रमित होने के अगले ही दिन देश के प्रख्यात शायर राहत इन्दौरी 70 साल की आयु में दुनिया छोड़कर चले गए और मुशायरों में गूंजने वाली दमदार आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गई। तबीयत बिगड़ने पर वे 10 अगस्त को इन्दौर के एक निजी अस्पताल में भर्ती हुए थे, जहां कोविड टेस्ट में पॉजिटिव आने के बाद उन्हें इन्दौर के कोविड अस्पताल अरबिंदो हॉस्पीटल में शिफ्ट किया गया था। 11 अगस्त की सुबह उन्होंने स्वयं ट्वीट कर बताया था कि कोविड के शुरूआती लक्षण दिखने पर कल उनका कोरोना टेस्ट किया गया, जिसकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई। दुआ कीजिये कि जल्द से जल्द इस बीमारी को हरा दूं। साथ ही उन्होंने ट्वीट के जरिये अपने फैंस से यह गुहार भी लगाई थी कि उन्हें या घर के लोगों को फोन ना करें, उनकी खैरियत ट्विटर और फेसबुक पर आपको मिलती रहेगी। कौन जानता था कि यही राहत इन्दौरी साहब का आखिरी ट्वीट होगा। डॉक्टरों के मुताबिक उन्हें 60 फीसदी निमोनिया था और पहले से ही किडनी, हाइपरटेंशन, डायबिटीज, दिल तथा फेफड़ों में संक्रमण सहित कई बीमारियां थी। अस्पताल में भर्ती कराने के बाद उन्हें दो बार दिल का दौरा पड़ा और 11 अगस्त की शाम उन्होंने अंतिम सांस ली। इन्दौर में एक कपड़ा मिल कर्मचारी रफ्तुल्लाह कुरैशी तथा मकबूल उन निशा बेगम के यहां 1 जनवरी 1950 को जन्मे राहत इन्दौरी हिन्दी फिल्मों के गीतकार के अलावा ऐसे भारतीय उर्दू शायर थे, जो बड़े बेबाक और बेखौफ अंदाज में अपनी बात कहने के लिए जाने जाते थे। शायरी के जरिये सत्ता पक्ष के लोगों पर तीखा प्रहार करने के कारण ही वे सदा सत्ता पक्ष के लोगों की आंखों में खटकते रहे। उन्होंने वर्ष 1975 में भोपाल के बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय से उर्दू साहित्य में एमए और 1985 में भोज मुक्त विश्वविद्यालय से उर्दू साहित्य में पीएचडी की थी। वे देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर में उर्दू साहित्य के प्राध्यापक भी रहे। 19 साल की उम्र में उन्होंने कॉलेज के दिनों में अपनी पहली शायरी सुनाई थी। कॉलेज में अध्यापन के दौरान एक अच्छे व्याख्याता के रूप में छात्रों की लगातार प्रशंसा पाने के बाद वे मुशायरों में काफी व्यस्त रहने लगे। अपने उन मुशायरों से वे जनता के बीच इतने लोकप्रिय होते गए कि उन्हें देश-विदेश से मुशायरों के निमंत्रण मिलने लगे। चार दशक से भी ज्यादा समय से वे मुशायरों और कवि

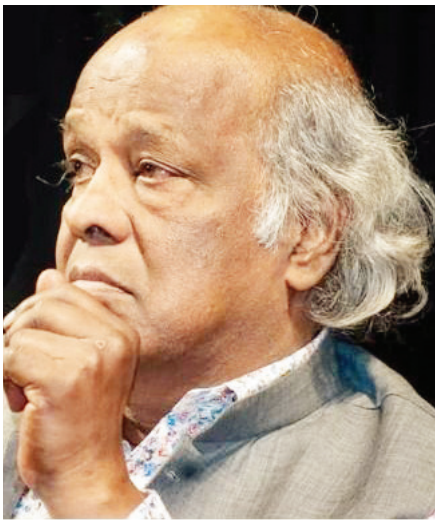

सम्मेलनों में अपनी शायरी पढ़ रहे थे। उन्होंने बॉलीवुड की फिल्मों के लिए भी कुछ गीत लिखे, जिनमें फिल्म 'मुन्नाभाई एमबीबीएस' का 'एम बोले तो मुन्ना भाई एमबीबीएस', 'घातक' का 'कोई जाए तो ले आए', 'इश्क' का 'नींद चुराई मेरी, तुमने वो सनम', 'खुद्दार' का 'तुमसा कोई प्यारा कोई मासूम नहीं है', 'करीब' का 'चोरी चोरी जब नजरें मिली', 'मर्डर' का 'दिल को हजार बार रोका', 'सर' का 'आज हमने दिल का हर किस्सा', 'मिशन कश्मीर' का 'बुमरो-बुमरो, श्याम रंग बुमरो' जैसे गीत काफी लोकप्रिय हुए लेकिन उनकी पहचान कभी भी निदा फाजली या कैफी आजमी जैसे फिल्मी गीतकार जैसी नहीं रही बल्कि उनका नाम सुनते ही हर किसी के जेहन में एक मशहूर शायर का ही ख्याल आता था। उन्हें महफिल के हिसाब से शायरी पढ़ने में महारत हासिल थी। रोमांटिक शायरी को लेकर एक टीवी शो के दौरान उन्होंने कहा था कि आदमी दिमाग से बूढ़ा होता है, दिल से नहीं। वैसे तो उर्दू की समकालीन दुनिया में मशहूर शायरों की कोई कमी नहीं है लेकिन राहत इन्दौरी की खासियत यह थी कि वे एक गंभीर शायर होने के साथ-साथ युवा पीढ़ी की नब्ज को भी थाम लेते थे और बड़ी सहजता से शायरी के माध्यम से ऐसी तीखी बात कह जाते थे, जो राजनीति के साथ-साथ समाज को भी चीरती प्रतीत होती थी। उनके शेरों के जरिए अपने हकों को आवाज देने का जो शोर सुनाई देता था, वो उनके समकालीन किसी शायर की आवाज में शायद ही सुनने को मिला हो। अपने शेरों के माध्यम से वे राजतंत्र की खामियों को उजागर करते हुए देश-समाज की व्यवस्थाओं पर चोट करते थे। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए शायरी की और सदैव आम आदमी की आवाज बने। मुशायरों में जब वे शायरी कर रहे होते थे तो ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वे महफिल में मौजूद हर व्यक्ति से सीधे बात कर रहे हैं। सीएए को लेकर देशभर में चले प्रदर्शनों के दौर में उन्होंने काफी तीखे अंदाज में कहा था, ''लगेगी आग तो आएंगे घर कई जद में, यहां पे सिर्फ हमारा मकान थोड़ी है। जो आज साहिबे मसनद हैं, कल नहीं होंगे। किरायेदार हैं, जाती मकान थोड़ी है, सभी का खून है शामिल यहां की मिट्टी में, किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है।'' ऐसी ही तीखी और बेबाक शायरी के कारण राहत इन्दौरी कुछ लोगों की आंखों में लगातार खटकते रहे और उन्हें लेकर बेवजह विवाद खड़ा करने की कोशिशें भी हुई। कुछ दिनों पहले सोशल मीडिया पर उन्हीं के नाम से एक फर्जी शेर भी खूब वायरल किया गया और जब विवाद बढ़ने लगा, तब उन्हें स्वयं सफाई देनी पड़ी थी कि वह उनका शेर नहीं है। हालांकि उन्होंने कई बार अपनी शायरी के माध्यम से अपनी देशभक्ति और हिन्दुस्तानी पहचान साबित भी की। उन्होंने कहा था कि मैं मर जाऊं तो मेरी अलग पहचान लिख देना, लहू से मेरी पेशानी पे हिन्दुस्तान लिख देना।

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती चमेली देवी
प्रधान

ग्राम पंचायत समथर, ताखा
इटावा, उत्तर प्रदेश
9719374092

सुलखान सिंह
प्रतिनिधि

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

बेचेलाल दोहरे
प्रधान

ग्राम पंचायत बनामई भरथना,
इटावा, उत्तर प्रदेश
8223211804
9756137183

अमित दोहरे

मधुर बोलिये, सुखी रहिये

राजानल शर्मा
छत्तीसगढ-ब्यूरो चीफ

रायपुर(छत्तीसगढ-)। कौआ और कोयल के रंग रूप समान होते हैं, परन्तु कोयल की कूक सबके मन को मोह लेती है। इसीके विरीत कौआ जब काँव - काँव करता है, तब उसकी आवाज कोई नहीं सुनना चाहता है।

कागा काको धन हरै, कोयल काकौ देय ।
मीठी वाणी बोल के, जग अपनौ कर लेय ।।

सिर्फवाणी का चमत्कार है। जब हम किसी अप्रिय वाणी वालों के बारे में कुछ कहते हैं तो यही हम सबके मुँह से निकलता है कि जब देखो वो काँव - काँव करता रहता है।÷ जो गुड और नीम में विभिन्नता है वही मधुर वाणी बोलने वाले और अप्रिय वाणी बोलने वालों के बीच में होती है। मधुर वाणी बोलने वाला संसार को अपना बना लेता है और अप्रिय वाणी बोलने वाला संसार में उपहास का केंद्र बन जाता है। संत कबीरदास ने कहा है:-

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय।।

वेद और पुराणों में मनोहर वचन की बात कही गई है। गीता में भी कृष्ण ने सत्य,प्रिय और मधुर वचन बोलने का उपदेश दिया है। एक बार एक न्यायाधीश ने सरकारी वकील से एक फाइल माँगी, वकील साहब ने उत्तर दिया कि यह फाइल उपलब्ध कराना मेरा दायित्व नहीं है। न्यायाधीश महोदय निरूत्तर होकर इधर -उधर देखने लगे। उसी क्षण एक अन्य वकील ने निवेदन किया - सरकार यदि कुछ समय देने की कृपा करें, तो मैं इस फाइल को ला सकता हूँ। परिणाम यह हुआ कि एक माह के अन्दर पूर्व वकील साहब के स्थान पर फाइल उपलब्ध कराने वाले वकील साहब को सरकारी वकील के पद पर नियुक्त कर दिया गया। आपको रामायण और महाभारत के प्रसंग भी याद होंगे। रामायण और महाभारत में भी अप्रिय वचन बोलने के कारण कौरवों और रावण को अपनी जान गवाँनी पड़ी। प्रिय वचन बोलने का अर्थ किसी के हाँ में हाँ मिलाना या चापलूसी करना नहीं है। चापलूसी और खुशामद तो अपने स्वार्थ को सिद्व करने के लिए की जाती है। प्रिय वचन बोलना तो सामने वाले को और अपने आपको सम्मान देना है। इसलिए अपने जीवन में हमेशा एक बात याद रखें हमेशा मधुर और प्रिय वचन ही बोले

हंसराम पहलवान

हंसराम पहलवान का जन्म हरियाणा के गुडगाँव के पास झाडसा गाँव में सन् 1932 को हुआ था। उनके पिता का नाम श्री लेखराम सोनी था। उनके पिता पेशे से स्वर्णकार थे। इन्हें 1950 को दिल्ली में भारतीय डाक विभाग में खजांची की नौकरी मिल गई थी। इनकी कुश्ती की शुरूआत उस समय हुई जब इनके गाँव के एक लडके ने इनकी पिटाई की थी। उसके बाद इनके भाई के कहने पर गाँव के ही अखाडे में जाना शुरू कर दिया था। नौकरी दिल्ली में लग जाने के बाद इन्होंने विश्वकेशरी गुरू हनुमान जी के अखाडे में प्रशिक्षण लेना प्रारंभ कर दिया। उस समय के डाक विभाग के प्रसिद्ध पश्चिम बंगाल के पहलवान सोहन लाल को इन्होंने हराया था। दिल्ली प्रांत में होने वाले दंगलों में इन्होंने अपना झंडा फहराया। इन्होने अनेक कुश्तियां लडी और जीती। हंसराम पहलवान पूर्णरूप से शाकाहारी थे। वो रोजाना 2000 दंड बैठक लगाया करते थे। 1954 में रोहतक में हुई श्री वैश्व व्यायामशाला मंदी प्रथम,1954-55 में दिल्ली में इंडियन पोस्ट और टेलीग्राफ सर्विस कल्चरल में प्रथम, 1955 पटना में इंडियन पोस्ट और टेलीग्राफ सर्विस कल्चरल में प्रथम। हंसराम पहलवान ने अपने इसी क्रम आगे बढाते हुये सन् 1954 से 1971-72 तक हमेशा प्रथम स्थान पर रहे। सन् 1972 में इनको एक बीमारी के कारण खून की उल्टियां होने लगी थी, जिसके कारण इनको कुश्ती इस महान योद्वा ने बीमारी को तो पछाड दिया पर होनी को टाल नहीं पाया। सन् 1994 को यह महारथी अपने पीछे अनेक मशहूर योद्वाओं को तैयार करके एक ट्रक दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई और यह भारत माता का सपूत हमेशा के लिये हमसब को छोडकर चला गया।

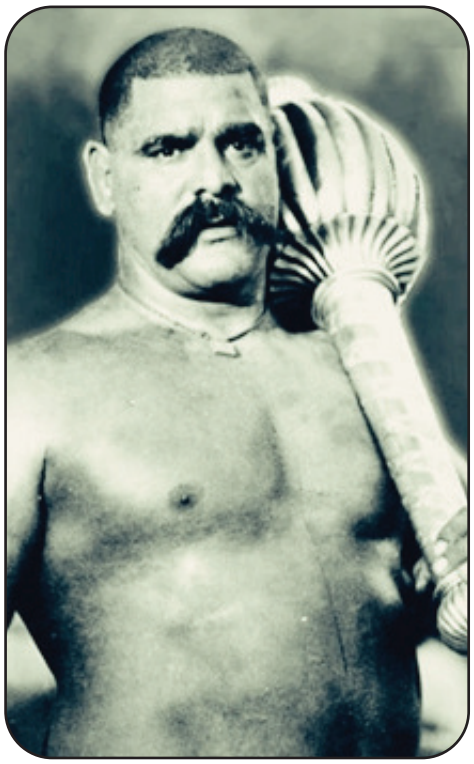

भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाईयां पर पहुंचाया महेन्द्र सिंह धोनी ने

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और विकेटकीपर महेंद्र सिंह धोनी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास ले लिया है। बता दें कि 2019 विश्व कप के सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के साथ महेंद्र सिंह धोनी ने अपना आखिरी मुकाबला खेला था उसके बाद से वह टीम के लिए उपलब्ध नहीं थे। अब अचानक से स्वतंत्रता दिवस के मौके पर कैप्टन कूल ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। क्रिकेट से दूर हो गए थे धोनी विश्व कप के सेमीफाइनल मुकाबले में रन आउट होने के बाद महेंद्र सिंह धोनी ने खुद को क्रिकेट से दूर कर लिया था और फिर भारतीय सेना की ट्रेनिंग में चले गए थे। हालांकि, यह माना जा रहा था कि वह टी20 विश्व कप खेल सकते हैं और उन्हें टीम में शामिल किया जा सकता है। मगर कोरोना वायरस महामारी की वजह से 2020 में होने वाला विश्व कप टल गया। महेंद्र सिंह धोनी के अंतरराष्ट्रीय करियर की शुरुआत साल 2004 में बांग्लादेश के खिलाफ खेले गए एकदिवसीय मुकाबले से हुई थी और फिर साल 2007 में धोनी की कप्तानी में टीम इंडिया ने टी20 वर्ल्ड कप जीता। फिर धोनी की सफलतम कप्तानी कहा थमने वाली थी। उनकी कप्तानी में फिर टीम इंडिया ने 2011 का विश्व कप भी अपने नाम कर लिया। साल 2013 में धोनी की कप्तानी में टीम इंडिया ने आईसीसी की तीसरा खिताब जीता और इंग्लैंड को फाइनल में हराकर चैंपियंस ट्रॉफी को अपने नाम किया था। 2014 में फिर उन्होंने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया। टीम इंडिया के लिए उन्होंने 350 वनडे, 90 टेस्ट और 98 टी20 मैच खेले। उन्होंने वनडे क्रिकेट में पांचवें से सातवें नंबर के बीच में बल्लेबाजी के बावजूद 50 से अधिक की औसत से 10,773 रन बनाए। टेस्ट क्रिकेट में उन्होंने 38.09 की औसत से 4,876 रन बनाए और टीम इंडिया को 27 से ज्यादा जीत दिलाई।

रांची जैसे छोटे शहर से निकलकर महानगरों में सिमटे क्रिकेट की चकाचौंध भरी दुनिया में अपना अलग मुकाम बनाने वाले धोनी ने युवाओं को सपने देखने और उन्हें पूरा करने का हौसला दिया। दो विश्व कप जीतने वाले धोनी के कैरियर के आंकड़े बताते हैं कि इरादे मजबूत हो तो क्या हासिल किया जा सकता है। सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद एक दिन अचानक टेस्ट क्रिकेट को उन्होंने यूं ही अलविदा कह दिया था जब वह टेस्ट मैचों का शतक बनाने से दस मैच दूर थे। इसके पांच साल और सात महीने बाद 15 अगस्त को जब देश आजादी के 74 साल पूरे होने का जश्न मना रहा तो शाम को धोनी ने इंस्टाग्राम पर लिखा ,'' शाम सात बजकर 29 मिनट से मुझे रिटायर्ड समझिये।'' तनाव और दबाव के बीच कभी विचलित नहीं होने वाले धोनी ही ऐसा कर सकते थे। देश को 28 बरस बाद वनडे विश्व कप जिताने के बाद निर्विकार भाव से पवेलियन का रूख करने वाला कप्तान बिरला ही होता है। अपने जज्बात कभी चेहरे पर नहीं लाने वाले धोनी के निजी फैसले यूं ही अनायास आये हैं। उन्हें जानने वाले भी ये दावा नहीं कर सकते कि उनके भीतर क्या चल रहा है। क्रिकेट के मैदान पर उनका जीवन खुली किताब रहा है लेकिन निजी जिंदगी के पन्ने उन्होंने कभी नहीं खोले जिसमें वह सोचते और फैसले लेते आये हैं। विश्व कप सेमीफाइनल में रन आउट होने के बाद से पिछले एक साल में उन्हें लेकर तरह तरह की अटकलें लगी लेकिन उन्होंने चुप्पी नहीं तोड़ी। धोनी की कहानी सिर्फ क्रिकेट की कहानी नहीं बल्कि क्रिकेट की दुनिया में आये बदलाव की भी कहानी है। बड़े शहरों में क्रिकेट खेलते लड़कों को देखकर हाथ में बल्ला या गेंद थामने की इच्छा रखने लेकिन उन्हें पूरा कर पाने का हौसला नहीं रखने वाले अपनी पीढी के लाखों युवाओं के वह रोलमॉडल बने। परंपरा से हटकर सोचना और हुनर पर भरोसा रखना उनकी खासियत रही। यही वजह है कि टी20 विश्व कप 2007 फाइनल में उन्होंने जोगिंदर शर्मा को आखिरी ओवर थमाया जिनका कोई नाम भी नहीं जानता था। उस मैच ने शर्मा को हीरो बना दिया। धोनी उस शहर से आते हैं जहां युवाओं का लक्ष्य आईआईटी, जीई या यूपीएससी की तैयारी करना रहा करता था लेकिन उनके बचपन के कोच केशव रंजन बनर्जी के अनुसार धोनी की कहानी ने यह सोच बदल दी।

भारतीय क्रिकेट उनका सदैव ऋणी रहेगा। मीडिया से उनका खट्टा मीठा रिश्ता रहा है। कभी किसी को कोई 'एक्सक्लूजिव' उनसे नहीं मिला और आम प्रेस कांफ्रेंस में भी सवाल का जवाब वह कई तरह से देने में माहिर थे।विश्व कप 2015 सेमीफाइनल मैच के बाद उन्होंने कहा था ,'' मैं हमेशा बाबा (तत्कालीन टीम मैनेजर) से कहता हूं कि मीडिया आपके काम से खुश है तो इसका मतलब है कि आप अपना काम ठीक से नहीं कर रहे।'' आईपीएल स्पाट फिक्सिंग मामले में धोनी की टीम चेन्नई सुपर किंग्स का नाम आने के बाद मुंबई में 2013 में चैम्पियंस ट्राफी के लिये टीम की रवानगी से पहले उन पर सवालों की बौछार होती रही लेकिन गरिमामय मुस्कान से उन्होंने जवाब दिया। कप्तान विराट कोहली ने कहा था कि उनके कप्तान हमेशा धोनी रहेंगे और इस धुरंधर की मौजूदगी ने विराट का काम हमेशा आसान किया। भारतीय क्रिकेट में कई महान खिलाड़ी हुए और आगे भी होंगे लेकिन अपनी शर्तों पर अपने कैरियर की दिशा तय करने वाले 'कैप्टन कूल ' धोनी जैसा कप्तान और खिलाड़ी सदियों में एक पैदा होता है।

सलमान ने बदली मेरी जिंदगी-जैकलीन

बॉलीवुड अभिनेत्री जरीन खान का कहना है कि सलमान खान ने उनकी जिंदगी बदल दी थी लेकिन वह हमेशा उनपर बोझ बनकर नहीं रह सकती हैं। जरीन खान ने बॉलीवुड में अपने करियर की शुरूआत वर्ष 2010 में प्रदर्शित फिल्म 'वीर' से सलमान खान के अपोजिट की थी। हालांकि फिल्म टिकट खिड़की पर सफल नहीं रही थी। जरीन ने कहा – सलमान ने मेरी लाइफ बदल दी थी। करियर के शुरूआती दौर मेरे लिये काफी मुश्किल थे। जब फिल्म 'वीर' को अच्छी प्रतिक्रिया नहीं मिली तो लोगों ने इसका जिम्मेदार मुझे ठहराया। मैं लोगों के लिए सॉफ्ट टारगेट बन गई थी। उस फिल्म के बाद मुझे काम मिलना बहुत मुश्किल हो गया था। जरीन ने कहा – लोग सोचते हैं कि सलमान की वजह से ही मुझे अब काम मिलता है। ये गलत है। उन्होंने बस मुझे इस इंडस्ट्री में एंट्री कराई उसके बाद मुझे मेरे काम की वजह से फिल्में मिलीं। मैं हमेशा सलमान पर बोझ नहीं बन सकती। लोग मुझे हॉट और ग्लैमरस किरदार आफॅर करते हैं लेकिन मैं उन्हें ना कह देती हूं।

कंगना ने मारी ट्विटर पर एंट्री

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत ने माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर पर एंट्री मार दी है। ट्विटर पर एंट्री की जानकारी खुद कंगना रनौत ने फैन्स को दी। कंगना के फैंस उनका स्वागत कर रहे हैं, जबकि कुछ लोग उन्हें ट्रोल करने की कोशिश कर रहे हैं। कई लोगों का कहना है कि कंगना ने अपने एजेंडा को लेकर ट्विटर ज्वॉइन किया है। अब कंगना ने ही खुद इस पर जवाब दे दिया है। कंगना ने ट्वीट करते हुए लिखा, ''बॉलीवुड वालों का कहना है, कंगना अपने एजेंडा के चलते ट्विटर पे आयी है।

पुष्पांजली
जनकल्याण फाउंडेशन

संस्था के साथ जुड़े, समाजकल्याण में सहभागी बनें

कार्यालयः ए-ब्लॉक, 404, भाऊ साहब पोतनीस इंक्लेव, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

संपर्कः 8269307478, 7999246560, 7906782260

अनिल पाराशर	:	मध्य प्रदेश क्राइम रिर्पोटर
कुसुम भदौरिया	:	मध्य प्रदेश
महेन्द्र शर्मा	:	चम्बल संभाग
गौरव शर्मा	:	चम्बल संभाग
राधा तोमर	:	अम्बाह
जितेन्द्र सिंह	:	खेरागढ़, आगरा
भीमसेन तोमर	:	अम्बाह
सुनील सिंह तोमर	:	अम्बाह
रवीकांत पाठक	:	पिछोर
भारती परमार	:	भौंती
रंजी बघेल	:	सेंवढ़ा, दतिया
राहुल कुमार	:	आगरा
छोटे सिंह भदौरिया	:	मालनपुर
सूर्यप्रताप सिंह	:	कोलारस
संतोष सिंह भदौरिया	:	गोरमी
राजेश नरवरिया	:	भिण्ड
हरिओम चतुर्वेदी	:	करैरा
अरिमर्दन सिंह भदौरिया	:	भिण्ड, क्राइम रिर्पोटर
निर्मला	:	भिण्ड
राहुल खन्ना	:	इंदौर
राजकुमार	:	खेरागढ़, आगरा
शिवकांत ओझा	:	रौन
आदित्य सिकरवार	:	पोरसा

आवश्यकता है

पुष्पांजली राष्ट्रीय मासिक पत्रिका/ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल को भारत के हर राज्य, जिला एवं तहसील स्तर पर ब्यूरो चीफ, रिपोर्टर और विज्ञापन प्रतिनिधियों की आवश्यकता है। इच्छुक एवं अनुभवी व्यक्ति संपर्क करें।

देश के सभी प्रदेशों में, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, उड़ीसा, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर, बिहार, गुजरात, गोवा, झारखंड

कार्यालयः ए-ब्लॉक 404 भाऊ साहब की पोतनिस, इन्क्लेव मुरार रोड गोले का मंदिर ग्वालियर

संपर्कः 7999246560, 8269307478

Email-pushpanjalitoday@gmail.com. Web-www.pushpanjalitoday.com